"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

[हेमन्ताङ्क]

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ॥

वर्ष	सोलन, पौष शु० १५ सोमवार, सं० २०२७ वि०	संख्या
१४	२१ पौष, शाके १८ ९२ (११ जनवरी १९७१ ई०)	२

राष्ट्र निर्माणका मार्ग

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तर्ते श्रिता ॥
सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता ॥

(अथर्व० १२।५—१—२)

जिस भांति ब्रह्माने इस सृष्टिका निर्माण घोर तप और कठोर श्रमसे किया है; उसी प्रकार राष्ट्रका नव-निर्माण उग्र तपस्या, कठोर श्रम और साधनासे ही सम्भव है । विलासिता और प्रमादके मार्ग पर चलनेसे राष्ट्र-निर्माण सम्भव नहीं ।

श्री प्राप्त करनेका साधन ज्ञान है । मूढ जन श्री-समृद्धि नहीं पा सकते । श्री-समृद्धि पानेके लिए सत्य-व्रती होना आवश्यक है । असत्य व्यवहारसे प्राप्त श्री-समृद्धि और ऐश्वर्य टिकता नहीं ।

सत्य मार्ग पर चलते हुए, सत्यका व्यवहार करते हुए ही प्राप्त श्री-समृद्धि यशसे आवृत होती है । यशसे घिरा और सुरक्षित ऐश्वर्य ही प्रशंसनीय होता है, और स्थायी होता है । दूसरा नहीं ।

"इदं नमः ऋषिभ्यः पूर्वेभ्यः, पूर्वजेभ्यः पथिकृद्भ्यः ॥"

सम्पादकीय विचार

संकटोंसे ग्रस्त भारत

पुनन्तु मां देव जनाः पुनन्तु मनसाधियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि, जातवेदः पुनीहि मां ॥ (यजु० १९-३९)
यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ॥ (यजु० २०-२६)

ज्ञानरूप एवं ज्ञान प्रकाशक परमात्मा हमको हमारी बुद्धियोंको पवित्र करें । ईश्वरभक्त ज्ञानी पुरुष हमारी बुद्धिको पवित्र करें । परमात्मा द्वारा दिया ज्ञान हमारी और सब जीवधारियोंकी बुद्धिको पवित्र करे ।

जिस में देश ज्ञानकी उपासना की जाती है, और शौर्य वीरता व पराक्रमका हार्दिक अभिनन्दन किया जाता है, जिस देशमें ज्ञान और शस्त्रबलका यथोचित और समान रूपसे व्यवहार किया जाता है, उस देशमें ज्ञानी विद्वान् वास करते हैं और वहां शान्तिका अखण्ड राज्य रहता है ।

रोग ग्रस्त भारत

कांग्रेस सरकारकी ओरसे एक समय मलेरिया निरोधक अभियान चलाया गया था । मच्छरोंका संहार करनेका बीड़ा उठाया गया था, परन्तु मलेरिया १९७० में भी प्राण ले रहा है । स्वास्थ्य मन्त्री श्री के० के० शाहने राज्यसभा में कहा है कि—

संक्रामक बीमारियोंका अन्त नहीं हुआ ।

वर्ष	जनसंख्या	नामरोग	रोगग्रस्त	मृत्यु
१९५२	—	मलेरिया	७५० लाख	
१९६९	५२७० लाख	मलेरिया	३४८६४७	
१९६३		चेचक (शीतला)	८३४२३	३६३६०
१९६९		चेचक	१५९८१	४११९
१९७० (अगस्त तक)		चेचक	९११९१	१६९१
१९६९ (अगस्त तक)		चेचक	१४२८०	३०२८
कमी आई		चेचक	३६%	४५%
१९६९	५२७० लाख	क्षय	८० लाख	

हैजेके विषयमें मंत्री मौन रहे । इतना ही बताया कि जिस प्रान्तमें हैजेका प्रकोप होता है वहां केन्द्रीय टीम सहायताके लिए भेजी जाती है । तपेदिकसे प्रतिवर्ष कितने लोग मरते हैं और क्यों क्षयरोग होता है, यहां श्री शाह मौन रहे ।

क्षयको रोकनेके लिए टीका लगानेकी व्यापक योजना बनाई गई है । किन्तु, क्षय रोग हो ही न इसका कोई उपाय क्यों नहीं सोचा जाय । यदि ४ करोड़ रु० से देशमें गोशालाएं खोली जायं, गो दुग्ध और गो-घृतकी समुचित व्यवस्था की जाय, तो क्षय रोग उत्पन्न ही न हो । किन्तु गोपालनके व्यवसायको पिछले पच्चीस वर्षोंमें प्रोत्साहन ही नहीं दिया गया । यदि मुर्गीखानों और मत्स्य-पालनके समान गो-पालनको आर्थिक सहायता दी जाती तो देश निर्वीर्य न होता । किन्तु दूध घी की तो बात दूर रही, आज छाछ भी दुर्लभ हो गयी है । इसके लिए वर्तमान सरकारके सिवाय कोई और उत्तरदायी है ?

अन्धकारका राज्य

म० गांधीने लेनिनके समान कहा था कि [illegible]न-क्रान्तिको सफल बनानेके लिए पांच लाख [illegible]गवोंमें सर्वप्रथम बिजली पहुँचनी चाहिए।

परन्तु, आज भी सब गांवोंको पेय पानी और रौशनी नसीब नहीं हुई। हरयाणा ७ जिलोंका राज्य है। चौ० बंशीलालने समस्त हरियाणाको बिजलीमय कर दिया है। ७००० गांवोंमें बिजली पहुँच गई है। इस लाभका सदुपयोग करना जनताका काम है। तारें लग गई, बिजलीघर बन गए। इनकी रक्षा करनेका काम राज्यका है। बिजली ज्ञान-प्रकाशको फैलायेगी, नये-नये गृह-उद्योगोंको जन्म देगी। नल-कूप और ट्रैक्टर बिजलीसे चलेंगे। फलतः बैल बेकार हो जायेंगे। हरयाणाके जाट तो आज भी गाड़ीमें और हलमें भैंसा जोतते हैं, क्योंकि सस्ता पड़ता है। यद्यपि भैंसा यमराजकी सवारी मानी जाती है। यह बताता हैं कि जाट आर्य नहीं है। अतः हरयाणा की गो-सम्पत्ति संकटमें पड़ गई है। दूधके लिए किसान गाय को नहीं पालता था। बैलके वास्ते गायको पालता था। अब बिजली सुलभ हो जाने पर बैल अनावश्यक हो गया है। फिर हरियाणाकी गायोंकी रक्षा कौन करेगा ? गोसम्बर्धन की ओर क्या कोई ध्यान देगा ? यह कार्य जेल जानेसे न होगा। गोसेवासे होगा। हरयाणाके गांवों तकमें बिजली पहुंच जानेसे यह न मानना चाहिए कि चौ० बंशीलाल अजेय नेता हो गए और उनको अपदस्थ करने वाली किसी शक्तिका उदय न होगा। दूसरी बात यह, कि भारतवर्षके अधिकांश गांवोंमें आज भी अन्धेरा ही अन्धेरा है। वर्तमान सरकार गांवोंमें व्याप्त अन्धकारको दूर करनेमें सर्वथा असमर्थ रही है। परन्तु, प्राचीन भारतके ऋषियोंका कहना है—अग्नि, सूर्य, बिजली और आगको सिद्ध करने वाले, शिल्प विद्याओंके द्वारा अक्षय धनको प्राप्त करते हैं।

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवे दिवे
यशसं वीरवत्तमम्॥ (ऋ० १।१।१।३॥)

भारत क्यों गरीब है, दीन है, दरिद्र है, इसका उत्तर ऋषिकी इस पवित्र वाणीमें निहित है। भारतकी दीनताको समाजवादकी दुहाई देकर छिपाया नहीं जा सकता।

दरिद्रताका मार्ग

पिछले २३ वर्षोंमें समाजवादके नारोंके मध्य भारतको गरीब बनानेके भीषण षड्यंत्र पर पर्दा डाल रखा गया। किन्तु, विश्व बैंकके पांच स्थायी गवर्नरोंमेंसे भारतका निष्कासन हो गया है, और भारतका स्थान जापानने ले लिया है. इस सत्यको भी छिपाया गया। भारत विश्वबैंकके संस्थापकोंमेंसे एक देश है। प्रारम्भसे वह इसका स्थायी गवर्नर चला आता था। पर १९७१ से यह स्थान जापानको मिल गया है। क्योंकि जापानीकी प्रति व्यक्ति आय भारतके प्रति व्यक्ति आयसे अधिक है। भारतकी तुलनामें जापान निर्यात व्यापारमें बहुत आगे बढ़ गया है। राष्ट्रीय आय भी जापानकी तेजीसे बढ़ रही है। अतः जापानके लिए भारतको स्थान खाली करना पड़ा। क्या यह इस बातको सूचित नहीं करता कि 'नेहरू-इन्दिरा' के शासनमें भारत दरिद्र ही हुआ है, उसकी गरीबी ही बढ़ी है। क्योंकि समृद्धिका मार्ग उसने छोड़ दिया है। रूसी छापका समाजवाद शासक पार्टीका बल बढ़ाता है, उसका आधिपत्य दृढ़ करता है, किन्तु देशको गरीब बनाता है। भारतमें समाजवादी दलके आद्य संस्थापकोंमें श्री अच्युत पटवर्धन एक हैं। १९४२ के आन्दोलनका आपने ही संचालन किया था। किन्तु, भारत-विभाजनके बाद आप अब तक मौन थे। सार्वजनिक जीवनसे निवृत्त हो गये थे। पर बड़े भाई श्री पुरुषोतम हरि भाई पटवर्द्धनकी मृत्युके बाद आप एकान्तवास समाप्त करनेको विवश हुए। आपने एक भाषणमें कहा है "भारत

जैसे निर्धन देशकी मुख्य समस्या गरीबी है, पूंजीवाद नहीं। उद्योगोंका सरकारी-करण भ्रष्ट नौकरशाहीके द्वारा चलानेके कारण शासक पार्टीका एकाधिकार स्थापित करेगा और देशको गरीब बनायगा।" यह सर्वथा सत्य है। १९५० में तैवान और दक्षिणी कोरियाके प्रत्येक व्यक्तिकी आय भारतके प्रत्येक व्यक्तिकी आय की तुलना में एक तिहाई थी। १९७० में क्या स्थिति है? दक्षिण कोरियाकी प्रतिव्यक्तिकी आय भारतके प्रति व्यक्तिकी आयसे तीन गुना अधिक है, और तवानके प्रति व्यक्तिकी आय भारतके प्रत्येक व्यक्तिकी आयकी तुलनामें पांच गुणा अधिक है। यह क्या बताता है? यही न कि रूसी मार्गका अवलम्बन करके गलती की गई और आज भी भारी भूल की जा रही है। यदि भारतको समृद्धि और ऐश्वर्य विभूति चाहिए तो उसको अविलम्ब रूसी मार्गका परित्याग कर देना चाहिए।

राष्ट्रवादकी उपासना करें

प्रश्न उठ सकता है, यदि रूसी मार्गको दें, त फिर किस मार्गको ग्रहण करें? उत्तर है, राष्ट्रीयताके पथ पर दृढ़ता और स्थिरतासे चलें, राष्ट्रवादकी आराधना और उपासना करें भारतमाताको श्रीसम्पन्न और ऐश्वर्यवान् बनानेके लिए जिएं और मरें। जापान राष्ट्रवादका उपासक है, फलतः मजदूर हड़ताल करते हुए भी सब कारोबार कल-कारखाने चलते रहते हैं। वह हड़ताल पर है इसकी घोषणा वह बांह पर काली पट्टी बांधकर करता है। परन्तु, कार्य करता रहता है, क्योंकि उसका कहना है—जापानी मजदूर ऐसा कोई काम नहीं कर सकता जिसके कारण राष्ट्रीय उत्पादन और राष्ट्रीय आयमें कमी आवे और जापानराष्ट्रकी श्रीसमृद्धि क्षीण हो। इसके विपरीत भारतमें राष्ट्रवादकी हत्या की गई है। हत्या भी जिबह करके की गई है। फलतः दुर्गापुर सदृश सरकारी कारखाने भी महीनों बन्द पड़ रहते हैं और भारत १३० करोड़ रु० का इस्पात आयात करता है। रूसी मार्ग पर चलनेसे भारत दरिद्र और निर्बल बना है। प्रधानमंत्री रूसी छापके समाजवादके विरोधियोंको प्रतिगामी कहती हैं और ७६ प्रतिशत निरक्षर जनतासे कहती हैं प्रतिगामी शक्तियोंसे लोहा लें। पर सत्य यह है कि रूसी छापके समाजवादके प्रचारक भारतके पाकिस्तान और चीनके समान परम शत्रु और प्रतिगामी हैं। ये भारतद्रोही हैं। भारत-द्रोहियोंको संरक्षण देने वाली सरकार क्या टिकी रहनी चाहिए?

राष्ट्रवादका उपासक प० जर्मनी

स्वस्तिकका देश प० जर्मनी पराजित है। दूसरे महायुद्धमें पूर्णतः उध्वस्त कर दिया गया। बम-बारीसे बचे कल-कारखाने रूस ले गया। परन्तु विनष्ट प० जर्मनीने राष्ट्रवादकी उपासना का मार्ग नहीं छोड़ा, फलतः वह आज ९ लाख विदेशी मजदूरोंको अपने देशमें काम व धन्धा दे रहा है। अभी उसको और दो लाख सुदक्ष कुशल मजदूरोंकी आवश्यकता है। भारतमें एक लाख इंजीनियर बेकार हैं। पर ये कामकी खोजमें जर्मनी नहीं जायेंगे। क्योंकि ये अंग्रेजोंकी गुलामी छोड़ नहीं सकते। प० जर्मनीके विदेशी मजदूरोंमें दो लाख तुर्क हैं। पर ये अब मजदूर न रहकर पूंजीपति हो गए हैं। प० जर्मनीमें मजदूरी बहुत अधिक मिलती है। अतः इनके लिए घर भेजकर स्वतः खा-पहन कर बचाना सम्भव था, फलतः इन्होंने अनेक कम्पनियां स्थापित कर ली हैं। एक कम्पनी बान-अंकारा हवाई सर्विस चलाती है। यह तुर्कोंसे आधा किराया लेती है, शेषसे पूरा। यह है राष्ट्रवादका चमत्कार।

भारतमें तो आज भी ब्रिटिश शासनको—ब्रिटिश भाषा (अंग्रेजी), ब्रिटिश-कानून, ब्रिटिश-संस्कृति और ब्रिटिश आचार-व्यवहार जारी रखकर—जमाया हुआ है। अंग्रेजीके रहते क्या कभी भारतका, यथार्थ भारतका उदय हो सकता है? मन-बुद्धि क्या स्वाधीन हो सकते हैं?

अपमानजनक

भारत सरकारकी बुद्धिहीनताका प्रमाण देखना हो तो पूर्वी पाकिस्तान पर आई विपत्ति और उसके प्रति इसकी नीति-रीतिसे देखा जा सकता है। पूर्वी पाकिस्तान पर भारी प्रकृतिका प्रकोप हुआ। २०-३० लाख जन मर गए। हजारों वर्गमील भूमि पर बसे लोग निराश्रित हो गए। भूत-दया और मानवता अपेक्षा करती थी कि पाकिस्तान इस महा-संकटके समय भारतके प्रति वैर न प्रकट करे। किन्तु मार्शल याह्याखांकी सरकारने भारतके प्रति वैर भावका त्याग नहीं किया। भारतकी दी मददको लेनेसे इन्कार कर दिया। इसके विपरीत भारतको दुनियांमें बदनाम किया। परन्तु, निस्तेज निवीर्य डालडा-सेवी इन्दिरा-सरकारने पाकिस्तानकी खुशामद करनेमें ही अपना परम सौभाग्य समझा। हवाई मार्गसे भारतकी मदद भेजनेसे पाकिसानने रोक दिया। उसके बाद भी क्या भारत सरकारको पूर्वी पाकिस्तान मदद भेजनेका आग्रह जारी रखना चाहिए था? पर भारत सरकारने स्थलमार्गसे मदद भेजनेका निश्चय किया, ये ट्रक भी पूर्वी पाकिस्तानमें नहीं जाने दिए जाते, सीमा पर ही रोक लिए जाते हैं।

दूसरी ओर

भारतका पूर्वी पाकिस्तानमें आना निषिद्ध कर दिया गया है। दूसरी ओर अमेरिकी और [illegible]टिश सैनिकों, वैज्ञानिकों, नाविकोंको भारी संख्यामें पूर्वी पाकिस्तानमें बे रोक-टोक आने दिया गया है। उनके लिए पारपत्र और वीसाका प्रश्न भी नहीं उठाया गया। इधर भारतके वैमानिकोंको वीसा लेनेके लिए बाध्य किया गया, और इस्लामाबादने वीसा देनेसे इन्कार कर दिया। पाकिस्तानके इस शत्रुतापूर्ण व्यवहार और अपमानके बाद क्या इन्दिरा-सरकारको मदद भेजनेका दुराग्रह करना चाहिए था? किन्तु इन्दिरा-सरकारने भारतके राष्ट्रीय सम्मानकी रक्षासे अधिक इस्लाम और मुस्लिमलीगको प्रसन्न रखना अधिक आवश्यक समझा। प्रधानमंत्री श्रीमती गांधीकी इस्लाम-भक्तिका प्रमाण तो यह है कि भारतके प्रधानमन्त्रीने पूर्वी पाकिस्तान की मददके लिए पाँच हजार रु० दिए और पाकिस्तानके राष्ट्राध्यक्ष मार्शल याह्याखांने चार हजार रु० दिए। इन दोनोंका अन्तर क्या प्रमाणित करता है?

पाकिस्तान समाप्तिकी राह पर

भारतने पाकिस्तानको विजय नहीं किया। भारतकी सेना सैंड फोर्ट (बिलोचिस्तान) १९४७ के बाद नहीं पहुंची और न वह चटगांव पहुंची। किन्तु प्रकुपित प्रकृति पाकिस्तानके लिए काल सिद्ध हुई। चीनने रु० दिया है, पर अपनी सेना रिलीफ कार्यके लिए नहीं भेजी। चीन और रूस की पाकिस्तानके प्रति उदासीनता क्या सूचित करती है? अमेरिका और ब्रिटिश सेना आई। मौलाना भसानीने मांग की है कि विदेशी सेना को तुरन्त वापस भेजा जाये। इसका अमेरिका और ब्रिटिश सेनाकी ओरसे जवाब दिया गया—'जब तक रिलीफकार्य जारी रहेगा वह पाकिस्तान से न जायेंगे। मार्शल याह्या खां जब तक चाहेंगे हम पूर्वी पाकिस्तानमें बने रहेंगे।" इसका क्या अर्थ है? पूर्वी पाकिस्तान पश्चिमी पाकिस्तानसे

पृथक् होनेका निश्चय कर चुका है। उसके निश्चय को बदलनेके लिए विदेशी सेनाओंको पूर्वी पाकिस्तानमें आमंत्रित करना आवश्यक समझा गया है। मौलाना भसानी और मौलाना मुजीवर रहमानने कहा है—"२३ सालोंका अनुभव बताता है कि पूर्वी पाकिस्तानके लिए पश्चिमी पाकिस्तान में कोई स्थान नहीं।' अतः बंगाली पाकिस्तानको अपने भविष्यका स्वतन्त्र रूपसे निर्णय करना चाहिए। पूर्वी पाकिस्तानमें स्वभाग्य निर्णयके सिद्धान्तकी मांगका समर्थन होना और उसका "पूर्वी पाकिस्तान अमर है" की जय ध्वनिसे स्वागत होना, क्या यह सूचित नहीं करता कि पाकिस्तानका जीवन समाप्त हो गया है। रोग-ग्रस्त पाकिस्तानका शरीर शय्यासे उतार दिया गया है। कब्रमें दफनानेकी तैयारी हो रही है। जनाजा निकलनेकी प्रतीक्षा करना क्या उचित नहीं है ?

नीतिकारने ठीक कहा है :—

"अरक्षितं तिष्ठति दैव रक्षितम्,
सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः
कृतः प्रयत्नेऽपि गृहे विनश्यति।"

भारत विभाजनकी पुरष्कर्ता कांग्रेस मर गई। रूस-चीन, एंग्लो-अमेरिकासे सुरक्षित और निर्मित पाकिस्तान समुद्री तूफान और आंधीके प्रहारसे कराह रहा है, और भारतके शासकोंकी इच्छा के विपरीत, काल विभक्त भारतको पुनः संयुक्त करनेकी राह पर ला रहा है। इस्लामकी शक्ति पर कालका यह भारी प्रहार हुआ है। क्या भारत कालके इस सन्देशको सुनेगा और भारत माताकी शक्तिसे विश्व गगनको गुंजा न देगा, लाप्तन कर देगा ? विश्वास करना चाहिए, ईश्वर भक्त भारत इस अवसरको न खोएगा और शक्ति क्षीण हो रहे इस्लामकी सहायता करनेकी भविष्यमें भूल न करेगा।

विज्ञानका सूर्य अस्त हो गया

भारतको यूरोपके साथ-साथ अणुयुगमें पहुंचाने वाले विश्वके एक महान् वैज्ञानिक डा० चन्द्रशेखर रमण का ८३ वर्षकी आयुमें देहान्त हो गया। इसके साथ भारतमें विज्ञानका सूर्य अस्त हो गया। विज्ञानका विश्वका सर्वोच्च पुरस्कार "नोबल प्राइज" इस महान् वैज्ञानिक को आजसे ४० वर्ष पहले १९३० में मिला था जब अनुसंधानकी सुविधाओंका अभाव था, रमण एक अत्यन्त मेधावी छात्र था। जीवनका इस मनोरंजक घटनासे स्पष्ट है।

प्रेजिडेंसी कालेज मद्रासके अंग्रेजीके प्रोफेसर ने अंग्रेजी कक्षामें एक छोटे बालकको टहलते देखकर पूछा।

प्रोफेसर—बच्चे तुम यहाँ क्या करने आये हो ?

बालक—श्रीमन् ! मैं आपकी कक्षाका एक छात्र हूं।

प्रोफेसर—क्या नाम है ?

बालक—चन्द्रशेखर वेंकट रमण।

प्रोफेसर नाम सुन कर चौंका। क्योंकि इस नामसे लन्दनके 'नेचर' 'फिजिक्स' आदि ब्रिटिश पत्रोंमें छपे लेख उसने देखे थे। संशय-ग्रस्त प्रोफेसरने पूछा—

आयु क्या है ?

तेरह साल।

कक्षा भरकी विस्मित आंखें बालक पर टिक गईं। आश्चर्य चकित प्रोफेसरका अगला प्रश्न था—

क्या तुम विज्ञानमें शोध कार्य भी करते हो? और अपने परीक्षणोंका फल ब्रिटिश पत्रोंमें प्रकाशित कराते हो?

बालकने विनम्र भावसे उत्तर दिया—जी हां। सारी कक्षाने गौरवपूर्ण दृष्टिसे अपने सहाध्यायी की ओर देखा।

यह थी डा० रमणकी साधना, जो १९३० में विश्व द्वारा सम्मानित हुई। किन्तु, विश्व-सम्मानित विज्ञानाचार्यने विज्ञानको छोड़ कर वारांगना राजनीतिकी ओर भूल कर भी नहीं ताका, अन्यथा यह वैज्ञानिक भारतका राष्ट्रपति हो सकता था। नई दिल्लीके झण्डे इस विश्व-सम्मानित महान् भारतीयकी मृत्यु पर नहीं झुके, जब कि विदेशी नासरके मरने पर तीन दिन झुके रहे। यह है भारत में ज्ञान-विज्ञानका आदर! प्रकाशकी किरणोंके विकीर्ण होने पर छितरानेकी खोजके बाद इस वैज्ञानिकने हीरों और बहुपूल्य पत्थरोंके निर्माण का अनुसंधान किया। हीरे और बहुमूल्य पत्थर इस वैज्ञानिकने अपनेको पुरष्कारमें प्राप्त धनसे खरीदा। इसने सरकारसे कभी सहायता नहीं ली। जनतासे भी चन्दा नहीं मांगा। इसके बाद फूलोंके रङ्गके विषयमें शोध किया। इस विषयक पुस्तक वैज्ञानिक ने अपनी आयुके ८०वें वर्षमें प्रकाशित की। यह वायलिन वादक था, अतः जीवनके अन्तिम दिनों में यह शब्द स्वर और ध्वनिके बारेमें अनुसंधान कर रहा था। मोटरके हार्न, तबलेकी ताल, ढोल मृदंगकी आवाज और वेणू रव सब एक नहीं। इन का मन पर एक-सा प्रभाव नहीं पड़ता। यह क्यों और ऐसा क्यों होता है, क्या यह जिज्ञासाका विषय नहीं है? पर यह अधूरा ही रह गया।

विज्ञानाचार्यने ५०० से अधिक वैज्ञानिक और प्रकृतिकी गूढ रहस्यकी खोज करने वाले अपने शिष्य तैयार किए। स्व० डा० भाभा और डा० सारा भाई, डा० रमणके ही शिष्य हैं। अतः डा० रमणकी परम्पराके अन्त होनेका कोई भय नहीं। 'ज्योतिष्मती' का श्रद्धा भक्ति पूर्ण मस्तक इस विज्ञानाचार्यके चरणोंमें नत है।

भारत पर घेरा

श्रीमती गांधीने भारतकी प्रभुता मास्कोमें गिरवी रख दी है, यह आक्षेप सर्वथा निराधार नहीं कहा जा सकता। रूसके ८० जंगी जहाज जिनमें अणु आयुध युक्त पनडुब्बियां भी हैं। हिन्द-महासागरमें बे रोक-टोक संचार कर रहे हैं। परन्तु, श्रीमती गांधीकी सरकारने कभी रूसकी इस हरकतका विरोध नहीं किया। क्या रूसी बेड़ा निरर्थक और निरुद्देश्य हिन्दमहासागरमें चक्कर लगा रहा है? यहां तो भूमध्य सागर और चीनी सागरके समान अमेरिकी बेड़ा भी नहीं है। फिर इसको यहांसे हटनेके लिए नई दिल्ली जोरकी पुकार क्यों नहीं करती?

करांचीसे कुछ मील दूर ग्वाडरमें सोवियत रूस नौ-हवाई अड्डेका नियोजन कर रहा है। ग्वाडर-क्वेटाके मध्य सड़क बन जाने पर मास्कोसे सीधी सब रसद और युद्ध सामग्री ग्वाडरमें पहुंच सकेगी। मास्कोसे काबुल-क्वेटा तक रूसने मोटर रोड बना ली है। ग्वाडर और क्वेटाके बीच सड़क बन जाने पर ग्वाडरमें रूसी नौ-अड्डा ईरानकी खाड़ीकी तरह रूसी बेड़ेके लिए हिन्द-महासागरका मार्ग प्रशस्त कर देगा। किन्तु श्रीमती गांधी और इस देशके कम्युनिस्टोंका मुंह बन्द है। रूसी अड्डा अन्य देशमें बनने पर विश्व-शान्ति भंग नहीं होगी, यह इनकी मान्यता प्रतीत होती है। जैसे ये रूसको साम्राज्यवादी नहीं मानते। यद्यपि रीगासे ब्लाडी वास्टक तक फैले रूसी राज्य को १९१७ से पहले जारका विस्तृत साम्राज्य कहा जाता था, किन्तु रूसमें कम्युनिस्ट शासन आ जाने के बाद साम्राज्य नहीं रहा। जब यह मतिभ्रम उत्पन्न किया जा सकता है, तब यमन स्कोट्रा द्वीप

में रूसी हवाई नौ-अड्डे के निर्माणको शान्तिभङ्ग करने वाला श्रीमती गांधी कैसे कह सकती हैं? रूस शस्त्रीकरणकी दौड़में सबसे आगे है। किन्तु भारत के रूसी दास कम्युनिस्ट उसको शान्ति प्रेमी कहते हैं। जैसे पुलिसकी गोलीसे यदि कोई मर जाता है तो ये पार्लमैंट तक में हो-हल्ला मचाते हैं, किन्तु परीक्षा दे रहे छात्रको स्कूलसे खींचते हुए बाहर लाकर शूट करनेमें इनको बिल्ली सूंघ जाती है और यह मौन रहते हैं। कालीकटके पास नक्सलाइटोंने एक रात में चार जनोंकी हत्या कर दी। इसको कृषि-क्रान्ति बताया गया। इस अमानषिक पैशाचिकताको पुण्य कार्य बताया गया। नक्सलाइटके नेता श्री चारू मजूमदार स्वतः एक छोटे जमीदार हैं। सरकारने अब इस सत्य को माना है और अब वह इस बात की जांच कर रही है कि उनके पास कानूनी सीमासे कितनी भूमि अधिक है। आठमास सरकार हत्याकाण्डको प्रोत्साहन देती रही और हत्याको पाप न कह कर सामाजिक आर्थिक क्रान्ति बताती रही। बंगालमें सैनिक शासन अभी तक स्थापित करनेसे इन्कार करके श्रीमती गांधी मास्कोके प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित कर रहीं हैं। और बंगाल ही नहीं सम्पूर्ण भारतको विनाशके मुंहमें धकेल रही हैं। इसी कारण जब रूसी बेड़ेका सामना करनेके लिए एंग्लो-अमेरिका पुलिस चौकी बनाने का सङ्कल्प करते हैं तब नई दिल्ली साम्राज्यवाद का विरोध करनेके लिए वाणी आक्रोश करने लगती है। रूसी बेड़के मुकाबले हिन्दमहासागर पर भारतका प्रभुत्व स्थापित करनेके लिए स्वतः तो भारतीय बेड़ा बनाएंगे ही नहीं, यदि कोई दूसरा रूसी साम्राज्यको रोकनेका प्रंयास करेगा तो उसकी निन्दामें ज़मीन आसमानको एक कर देंगे। ब्रिटिश सरकारने अमेरिकासे मिल कर हिन्द महसागरके कुछ बृटिश द्वीपोंमें पुलिस चौकी बनाने और स्वेज मार्ग को रूसी भयसे मुक्त रखने का निश्चय किया है। भारतकी दुर्बलता हिन्द महागरको रणक्षेत्र बना रही है। नेहरू-इंदिराने भारतकी नौ-शक्तिका निर्माण नहीं होने दिया। आर्थिक और सैनिक शक्तिकी दृष्टिसे दुर्बल भारत विश्वशान्तिको भंग करनेका निमित्त बनाया गया। भारतका यदि नौ-हवाई बेड़ा अजेय होता तो क्या हिन्दमहासागरमें रूसी बेड़ा संचार करनेका साहस करता, और उसका मुकाबला करनेके लिए एंग्लो-अमेरिका सचेष्ट होते? भारतका दौर्बल्य इनको प्रोत्साहन दे रहा है। और भारत इस प्रकार तृतीय महायुद्धका एक रणक्षेत्र हिन्दमहासागरको बना रहा है। हिन्दमहासागर यदि भावी महायुद्धका रणक्षेत्र बना तो क्या भारत अपनेको युद्धसे पृथक् रख सकेगा?

रूस-चीनका संग्राम यदि रूस चीनकी सीकियांग सीमा पर हुआ तब भी भारत युद्धाग्नि की लपेटोंसे अपने को न बचा सकेगा। यहां युद्ध की सम्भावनाका विचार करके चीनने अपने अणु बम विस्फोटका क्षेत्र "लापनार"से हटा कर भारत के सिर पर तिब्बतमें ले आया है। तिब्बत पर चीनका प्रभुत्व स्वीकार करनेकी गल्ती श्री नेहरू ने डा० राजेन्द्रप्रसाद और सरदार पटेलकी सलाह की अवमानना करके की। इस विषयमें सरदार पटेलका अपनी मृत्युसे कुछ दिन पहले लिखा पत्र (५ नवम्बर १९५०) आज भी पठनीय है और ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। तिब्बत पर श्री नेहरूने भारत भक्तिसे शून्य होनेके ही कारण चीनका स्वामित्व स्वीकार किया और दलाईलामा की रक्षा नहीं की। दिसम्बरमें सरदार पटेलका श्राद्ध दिन है। उसका स्मर्ण भारतीयता और भारतीय राष्ट्रवादको कुछ न कुछ बल ही देगा। 'ज्योतिष्मती' उस महान् भारतीयका सादर स्मर्ण करती है और श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

आर्थिक संकट

१४ व्यावसायिक बैंकोंका सरकारीकरण कम्युनिष्टोंका बल बढाने और भातीय उद्योगोंको नष्ट करने एवं औद्योगिक प्रगतिको मन्द करनेके उद्देश्यसे किया गया था। यह सत्य प्रकट हो गया है। श्री देसाई जब वित्त मंत्री थे, तब बैंकोंमें १८ प्रतिशत अधिक राशि जमा हुई थी, किन्तु जब प्रधान मंत्री ही वित्त मंत्री हुई तो उस वर्ष १४ प्रतिशत धन बैंकोंमें जमा हुआ। वर्तमान वित्त-मन्त्रीने आशा प्रकट की है कि उनके पहले वर्षमें १७ प्रतिशत अधिक धन जमा होगा। यह क्या सूचित करता हैं ? सरकारी बैंक जनताके विश्वास भाजन बैंक नहीं रहे। उज्जैन का एक समाचार है, वहां की एक सरकारी बैंककी शाखाके लिए उधार में दिया गया एक करोड़ रुपया वसूल होनेकी आशा नहीं। सरकारी बैंकोंका कार्य संचालन किस रीतिसे हो रहा है उसका यह एक नमूना है।

चतुर्थ नियोजनका व्यय-लक्ष्य घटानेकी आवश्यकता वित्तमंत्री अनुभव करने लगे हैं। क्यों कि रेलवे को ७० करोड़ रुपयेका घाटा है। अतः रेलवे और सरकारी उद्योगोंसे केन्द्रीय राजस्वको प्राप्त होने वाली अपेक्षित राशि मिलनेकी आशा विलुप्त हो गई है। कीमतें ७.५ प्रतिशत बढ़ चुकी हैं। अंतरिम भत्ता देनेसे करोड़ों रु०का खर्च बढ़ गया है। १९७०-७१ के बजटमें श्रीमती गांधीने २२५ करोड़ रुपये घाटेकी वित्तीय व्यवस्था रखी थी। किन्तु, यह सीमा अक्तूबर में ही पार हो गई। राज्य, रिजर्व बैंकसे ओवर ड्राफ्ट बराबर ले रहे हैं (अर्थात् खातेमें रुपया नहीं, तात्कालिक आवश्यकताकी पूर्तिके बाद तुरन्त लौटा देनेके वायदे पर लिया गया धन)। राज्य दिवालिए हो रहे हैं। वे अपना घाटा पूरा नहीं कर पा रहे हैं, फिर विकास योजनाओंके लिए पैसा कहांसे लावें। रूसी छापके समाजवादका आधार त्याग नहीं, भोग है, संग्रह है, सत्ता प्राप्ति है, जनसेवा नहीं। अतः रूसी छाप का समाजवाद भारतमें आर्थिक संकट उत्पन्न कर रहा है, अशान्तिको जन्म दे रहा है और भारत भक्तिको नष्ट कर रहा है। रूसी छापके समाजवादके झण्डेके नीचे ही अंग्रेजीका प्रभुत्व जारी रह सकता है। क्यों कि दोनों अभारतीय और विदेशी तत्व हैं। श्री नन्दा किराया (तीसरे दर्जे का नहीं) और भाड़ा बढ़ानेकी सोच रहे हैं। मुद्रा-स्फीतिका सहारा किस सीमा तक लेंगे ? ३५० करोड़ तक तो ले चुके। क्या ६०० करोड़ तककी सीमा पर पहुंचेगें ? इसका फल क्या होगा ? आर्थिक विकास योजनाएँ अधूरी रह जाएँगी। संजय-निर्मित छोटी कार १८००० रुपयेमें तैयार होगी और उसका खरीदार सरकारके सिवाए और कोई न होगा। श्रीमती गांधीने अपने पुत्रको करोड़पति बनानेका यह मार्ग ढूंढ लिया है। यह है इण्डिकेटी-समाजवाद।

इस आर्थिक संकटमें यदि श्रीमती गांधी पार्लीमैंटका चुनाव १९७२ से पहले करनेका साहस न करे तो क्या आश्चर्य। उनको अपने लिए सुरक्षित निर्वाचन क्षेत्र ढूंढना कठिन हो रहा है। रायबरेली उनकी ससुराल है, तो क्या हुआ ? वहाँ उन्होंने सरकारका करोड़ों रुपया भी विकास कार्योंमें खर्च करवाया। अपने एक निजी सैक्रेटरी को विकास कार्योंकी देख रेख करने पर रखा। किन्तु यू०पी० में संविदका शासन स्थापित हो जानेसे १९६७ के समान किसानोंको पीट कर वोट लेना सम्भव नहीं रहा। यह "आफ्टर-वन-ईयर" की लेखिका स्तालिनकी पुत्री 'स्वेत लाना' ने लिखा है। फूलपुर इस समय संसोपाके अधिकार में है। नई दिल्ली पर जनसंघका अधिकार है, और इस पर जन-सेविका श्रीमती कृपलानीकी भी दृष्टि है। हिमाचलप्रदेश पर अब श्रीमती गांधी

की दृष्टि टिकी है। राजकुमारी अमृतकौर भी १९५२ में मण्डीसे लोकसभामें आई थी। भारतकी सम्राज्ञी फिर क्यों न मण्डी को चुने? श्रीमती गाँधी अपनेको भारतकी सम्राज्ञी ही मानती हैं और वैसा ही व्यवहार करती हैं। उनके लिए लाल कपड़ा बिछाया जाता है। अभी वह संयुक्त राष्ट्र गई तो चारटर्ड विमान से, १४० सीटोंके बोइंग विमानसे गई। उसको आठ दिन न्यूयार्क में रोके रखा। इंडिया एयर लाईन्सने इसके कारण ३३ लाख रुपयेका नुकसान उठाया। यह है श्रीमती गांधीका गरीबीसे लड़नेका समाजवादी नुस्खा। क्या यह दरिद्र भारतके पेट पर लात मारना नहीं? फिर प्रधानमन्त्री समेत केन्द्रीय मन्त्रियोंमेंसे बहुतोंने सम्पत्ती करका विवरण ठीक समय पर नहीं दिया। एक माससे कम देरसे देने वाले मंत्री प्रधान मन्त्रीके समान दण्ड मुक्त कर दिए गये। पर श्री दिनेश सिंह और डा० राव गिरफ्तमें आ गए हैं। प्रधानमंत्रीका लिहाज क्यों किया गया, यह एक रहस्यपूर्ण बात है। ४७-४७ मास देरसे विवरण देने वाले व्यक्ति रूसी समाजवादका नारा लगा कर मन्त्री बननेके योग्य माने जा सकते हैं। जब मन्त्री ही कानून भंग करते हैं तब सामान्य जन कानून भंग करें तो क्या आश्चर्य!

अभूतपूर्व स्वागत

श्रीमती गांधीकी नींद समाप्त हो गई, जब उन्होंने सुना, जोधपुरके २३ वर्षीय युवा महाराजा का विलायतसे शिक्षा समाप्त करके जोधपुर लौटने पर जनताने उनका 'भूतो न भावी' स्वागत और हार्दिक अभिनन्दन किया। रेलवे स्टेशनसे किले और उम्मेद-भवन राजमहलके ६ मील लम्बे मार्ग पर दोनों ओर कई कतारोंमें लोग घण्टोंसे खड़े थे। नृपत्वका अन्त करनेकी घोषणाके बाद इस राजसी स्वागतको देखकर जोधपुरके बड़े बूढ़ोंकी आंखें सजल हो गईं। युवा महाराजा पर स्नेह-पुष्पोंकी अविराम वर्षा की गई। राजदादीजीके इस अमित प्रभावको देखनेके बाद इण्डीकेटको विश्वास हो गया कि जोधपुर डिविजनसे उनको अपने खेमे उखाड़ लेने होंगे। यहां उनका राजदादी से सामना है। उनका आशीर्वाद प्राप्त उम्मीदवार ही १९७२ में विजयी हो सकेगा। अतः श्री मोहन लाल सुखाड़ियाका भाग्य-भास्कर अब अस्ताचल की ओर जाएगा। जोधपुरके युवा नरेश चुनाव लड़ेंगे। लोकसभाका न लड़ कर यदि अपने पिता के समान विधानसभाका चुनाव लड़ेंगे तो कुछ क्षेत्रोंका विश्वास है कि राजस्थानके भावी मुख्य-मन्त्री युवा जोधपुर नरेश ही होंगे। 'ज्योतिष्मती' इस शुभाकांक्षाका अभिनन्दन करती है।

केन्द्रीकरणकी ओर

भारत विभाजन और रूसी छापके समाजवादने विकेन्द्रीकरण और अभारतीय एवं अराष्ट्रीय शक्तियोंका बल अब तक बढ़ाया। नरेशोंके राज-नीतिमें आनेसे और चुनाव लड़नेसे केन्द्रीकरण और राष्ट्रीय शक्तियोंका बल बढ़ेगा एवं विनाशकारी तत्वोंका बल घटेगा। यह श्रीमती गांधीकी पराजयका कारण होगा। श्रीमती गांधीके सहायक दल भारत ऐक्यके विरोधी हैं। द्रविड़ मुनैत्र कषगम, मुस्लिमलीग, कम्युनिस्ट पार्टी, द्रविड़ असुर कषगम प्रभृति दल उनके सहायक हैं। राष्ट्रीयताकी प्रबुद्ध भावनाका अभाव है। अतः कम्युनिस्ट विरोधी संयुक्त मोर्चा बन नहीं पा रहा। प्रान्तिकता–गुजरात और मैसूर की–बाधक है। प्रसोपा और संसोपाका समाजवाद प्रेम भी बाधक है। इस पर भी श्रीमती गांधीकी विजयकी आशा तिरोहित होती जाती है। हरिजन भी उन को पार लगानेमें असमर्थ हैं।

महाराजाधिराज श्री १०५ गजसिंहजीका विदेशसे

विद्याध्ययन समाप्त कर अपनी राजधानीमें लौटने पर

अभूतपूर्व स्वागत

"ज्योतिष्मती" के संरक्षक महाराजाधिराज श्री गजसिंह जी गत दि० ११ नवम्बर १९७० को विदेशसे अपना अध्ययन समाप्त कर अपनी राजधानी जोधपुर-राजस्थान-सानन्द पधारे।

इस शुभावसर पर महाराज-श्रीके गुणगणोंसे आकृष्ट तथा अपने प्रजावत्सल विद्यानुरागी महाराजाधिराजका परम प्रिय दर्शन करनेके लिये लाखों की संख्यामें मारवाड़के नर-नारी एकत्र हुए थे। जैसे ही महाराजाधिराजकी गाड़ी जोधपुरमें प्रविष्ट हुई—आप का जनताने हार्दिक स्वागत किया तथा जय-जय घोषसे आकाश गूंज उठा।



मरुधर-महीमहेन्द्र महाराजाधिराज
हिज हाईनेस श्री १०५ गजसिंहजी बहादुर, जोधपुर-नरेश

महाराजाधिराज सर्व-प्रथम अपनी कुलदेवता चामुण्डा माताका दर्शन करने किले पर पधारे और वहां भक्ति-भावसे माँके दर्शन कर लोक-कल्याण कामना की। तदनन्तर लौट कर वहांसे उम्मेदभवन पधारे। मार्गमें स्थान-स्थान पर स्वागत होनेके कारण किलेसे भवन तक पहुँचनेमें प्रायः ६ घण्टे का समय लगा।

दर्शकोंका कहना था कि जोधपुरके इतिहासमें यह स्वागत अभूतपूर्व था। हम 'ज्योतिष्मती-परिवार' की ओरसे महाराजाधिराज को बधाई देते हैं, और उनके निरन्तर सुख समृद्धि की कामना करते हैं।

श्रीमद्विद्याविलासि-नृपतितिलक स्व० श्री हनुमन्तसिंहजी-
तनुजनुषां श्रीगजसिंहजीमहाराजानां

जोधपुरधरणीमहेन्द्राणां

चतुर्विंशतितम विजयाब्दप्रवेशसमये

शुभाशीर्वादततयः

राजन्नभ्युदयोऽस्तु ते प्रतिदिनं कीर्तिः शुभा वर्द्धतां,
राष्ट्रे राष्ट्रियताविचारसरणौ चेतः समुज्जृम्भताम् ।
सत्कार्यैः सुजनार्तिसंहरणजैरानन्दमन्दाकिनीं,
संवाह्य स्वपितामहीं च जननीं सन्तोष्यतां तुष्यताम् ॥ १ ॥

पूज्या शक्तिमती सुशीलचरिता विद्याविनोदप्रिया,
दीनानां परिपालिनी प्रतिदिनं ह्यन्नादिदाने रता ।
भक्ता साऽथ पितामही सु–'**भटियाणीजीति**' नाम्ना मता,
संवीक्ष्याद्य भवन्तमात्मनि चिरं पौत्रं प्रमोमुद्यते ॥ २ ॥

तातः श्री हनुमन्तसिंहनृपतिर्वीराग्रणीर्बुद्धिमान्,
माता राजकुलोत्सवप्रसविनी '**कृष्णाकुमारी**' शुभा ।
तत्सूनुर्नरपुङ्गवो वरसुतः श्रीमद्गजेन्द्राभिधो,
जीव्याद् वर्षशतं सुखं वितनुतादीशानुकम्पान्वितः ॥ ३ ॥

अधीत्य शास्त्राणि विदेशमध्ये, सँल्लौकिकाचारविधासु दक्षः ।
स्वराजधानीं सुसमागतोऽसौ, भवेच्छतायुर्गजराजसिंहः ॥ ४ ॥

आयुस्ते '**गजसिंह!**' वर्द्धतु सदा हेमन्तरात्रिर्यथा,
लोकानां प्रियवर्द्धनो भव तथा हेमन्तसूर्यो यथा ।
शत्रूणां भयवर्द्धनो भव तथा हेमन्ततोयं यथा,
नाशं यान्तु तवारयश्च सततं हेमन्तपद्मं यथा ॥ ५ ॥

शुभाकांक्षी—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी
सम्पादकः– 'ज्योतिष्मती'
सोलन (हिमाचलप्रदेशः)

पौष शु० २ बुधे
सं० २०२७ वैक्रमाब्दे
दि० ३०–१२–७० ई० ।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

मकर संक्रान्तिकी ग्रहस्थिति पर विचार

भारतीय गणराज्यके २२वें वर्षका भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

इस त्रैमासिक अवधिमें मकर संक्रान्तिका पुण्य पर्व पड़ रहा है। माघ मासमें प्रयाग अर्धकुम्भ-योग है। इसी पौषी १५ से प्रयागमें कल्पवास और अर्धकुम्भी मेला प्रारम्भ होगा। माघकृष्ण ३गुरुवार दि० १४ जनवरी १९७१ को मध्याह्न १२।२७ पर मेषलग्नमें निरयनमानसे सूर्य मकर राशिमें प्रवेश करेगा। संक्रान्ति प्रवेश समयकी ग्रहस्थिति इस प्रकार है—



लग्नमें नीच राशिस्थ शनि और लग्नेश मंगल अष्टममें गुरु शुक्रके साथ है। सुखेश चन्द्र केतुसे पीड़ित है, अतः यह मकर संक्रमणकाल संसारके शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति के लिए चिन्ताकारक है। भारतकी राशिका अधिपति नीच राशिमें है। स्वतंत्र भारत एवं गणतंत्र जन्म लग्नाधिपति शुक्र-गुरु दोनों अष्टममें हैं, अतः भारतकी राजनैतिक आर्थिक स्थितिके लिए भी यह वर्ष विशेष अशोभनीय है। १४ जनवरीसे ६ मासमें कुछ प्रान्तोंमें मंत्रिमंडलोंका पतन होगा। बंगाल, बिहार, असम, उड़ीसा, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और राजस्थानमें कुछ नाटकीय घटनाएँ घटेंगी। माघ, फाल्गुन और वैशाख, ज्येष्ठमें प्रकृति-प्रकोप और यान दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। नेता दुर्घटनाग्रस्त होंगे। चोरी डाके हत्याकाण्ड अपहरणकी घटनाएँ बढ़ेंगी। फाल्गुन मासमें खाद्यपदार्थ एवं जीवनोपयोगी वस्तुओंके भावमें अकल्पित घटाबढ़ी होगी। मेष कर्क कन्या धनु: और मकर-राशिलग्नप्रधान व्यक्तियोंके लिए यह संक्रमण काल चिन्ताप्रद रहेगा। भारतकी प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधीकी जन्मराशि मकर और लग्न कर्क है, अतः यह संक्रमणकाल उनके लिए कठिन कसौटी का होगा। ११ दिसम्बर १९७० को क्षात्र शक्तिप्रधान अपने मित्र मंगलकी राशिमें न्यायप्रिय देव-गुरु प्रवेश करेंगे, अतः वृश्चिकका गुरु भारतीय भू० पू० नरेशोंके लिए अनुकूल सिद्ध होगा और राजवृत्ति (प्रीवीपर्स) के सम्बन्धमें उच्चतम न्यायालयका निर्णय श्रीमती गांधीके विरुद्ध और राजाओंके पक्षमें होनेकी पूर्ण आशा है। प्रधानमंत्री पूर्वाग्रहग्रस्त होकर मध्यावधि चुनावका प्रयत्न करेंगी। १ जनवरीको मंगलशनिका प्रतियोग और ५ जनवरी को गुरु-शुक्रका युद्ध है। आगे माघ मासमें पांच मंगलवार और शनिसे मंगल नेपच्यून गुरु शुक्रका षडष्टक योग भारतकी राजनैतिक आर्थिक सामाजिक स्थितिको दूषित बनावेगा। अनेक प्रकार के षड्यन्त्र और अनैतिक कार्य होंगे। २६ जनवरीको भारतीय गणतंत्र को २२वां वर्ष प्रवेश होगा, उसका भविष्य विवेचन आगामी वर्ष सं० २०२८ के 'श्रीविश्वविजय पंचांग'से हम यहां दे रहे हैं।

भारतीय गणराज्यका २२वां वर्ष

सं० २०२७ माघकृष्ण अमा. मंगलवार दि० २६ जनवरी १९७१ ई० को सायंकाल स्टेण्डर्ड टाइम ७।३२ (इष्ट घटचादि ३०।३६) पर सिंह लग्नमें भारतीय गणतंत्रका २२वां वर्ष प्रवेश होगा, उस समयकी ग्रहस्थिति यह है –

गणतंत्र वर्ष लग्न



भारतीय गणतन्त्रकी जन्म कुण्डलीका विश्लेषण करते हुए आजसे २१ वर्ष पहले २००७ वि०के 'श्रीविश्वविजय पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर जो भविष्य विचार लिखा गया था उसकी कुछ पंक्तियां गतवर्ष (सं० २०२७) के पंचांगमें उद्धृत की जा चुकी हैं। वर्तमानका घटनाक्रम स्वयं उसकी सत्यता सिद्ध कर रहा है। अभी गत २४ जून १९७० से गणतन्त्र को सूर्यकी महादशा प्रारम्भ हुई है। यह भी भारतीय गणराज्यके लिए श्रेयस्कर नहीं है, क्योंकि सूर्य षष्ठेश होकर नीचस्थ गुरुके साथ है, अतः अन्तर्बाह्य शत्रुओंका उत्पात बढ़ेगा। विघटनकारी तत्व पनपेंगे और अराजकता बढ़ेगी। आरम्भके दो तीन मास विशेष संकट के होंगे। परन्तु सूर्य उच्चांशमें है, और शासक ग्रह है, तथा इस २२व वर्षका यग्नेश भी सूर्य ही बना है। नवमेश पञ्च-मेश राज्येश पराक्रमेश मं.गु.शु. का सूर्यसे तृतीयै-कादश दृष्टि सम्बन्ध है, अतः इस दशाके उत्तरार्ध में किसी अध्यात्मशक्ति सम्पन्न महापुरुषके अतुल प्रभावसे शासनतन्त्रमें क्रांतिकारक परिवर्तन होना सम्भव है और यह २२वां वर्ष भी भारतके लिए महान् ऐतिहासिक घटनाओंसे पूर्ण रहेगा। इस २२वें वर्षमें नवमेश पञ्चमेश मंगल-गुरु केन्द्रमें बलवान् होनेसे भारतीय आर्य संस्कृतिका अभ्युदय होगा और धार्मिक सांस्कृतिक विचारधाराके पुरुषों का संगठन बढ़ेगा। आर्य संस्कृतिके पोषक भू०पू० नरेश, क्षत्रियवर्ग, जनसंघ, रा०स्व० संघ और बुद्धि-जीवी वृद्धगण भारतीय संस्कृतिको बचानेमें कृत-संकल्प होंगे। अनार्यतत्व नक्सलपंथी साम्यवादी भारतमें पूर्णरूपेण सफल नहीं हो पायेंगे। भारत पुनः अपने पूर्व गौरवको प्राप्त करेगा। राष्ट्रद्रोही स्वार्थी पदलोलुप शासकोंका अन्त होगा। आगामी वर्ष ७२ के महानिर्वाचनमें ही स्थिति बहुत बदल जायेगी और १९८० से आगेके दशकमें भारतका कायाकल्प होगा। दैवी शक्ति सम्पन्न कोई महा-पुरुष प्रकट होकर शासनसूत्र सम्भालेगा। उसी दशकमें पाकिस्तानका अस्तित्व भी समाप्त होगा।

वर्ष-कुण्डलीके ग्रहोंका संक्षिप्त फल

लग्नमें केतु और लग्नेश सूर्य ६ठे चन्द्रमाके साथ होनेसे प्रजाका शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। हृद्रोग उदरविकार फ्लू चेचक अतिसारादि सांसर्गिक रोगोंसे अनेक प्रान्त ग्रस्त होंगे। अमावस्याके क्षीण चन्द्रमामें गणतन्त्र वर्ष प्रवेश हुआ है, षष्ठस्थ सूर्यचन्द्र शनिसे दृष्ट हैं, अतः भारतीय जन-मानस अशान्त उद्विग्न सा रहेगा। धन स्थानमें हर्शल आर्थिक स्थितिको बहुत निर्बल बनायेगा, ऋण और करभार बढ़ेगा। टेक्सोंकी भरमार होने पर भी केन्द्र, प्रान्तोंका घाटा पूरा नहीं कर पायेगा। मंत्रियों और उच्चाधिका-रियोंके अनापशनाप व्यय भारसे प्रजा तंग होगी। तृतीय भाव शनि दृष्ट है अतः बड़े उद्योग सङ्कट-ग्रस्त होंगे। सरकारी व निजी प्रतिष्ठानों, बड़े

(शेष पृष्ठ ५८ पर देखें)

स्वर ज्ञान और सामान्य जीवन

[लेखक :— श्रीरविप्रकाशजी नाग, एम०ए०,एल-एल०बी०]

सब जोगन को जोग है, सब ज्ञाननको ज्ञान।
सर्वसिद्धिको सिद्धि है, तत्व स्वरनको ध्यान॥

साधकके जीवनमें स्वर ज्ञानका महत्व अनेक प्रकारसे स्वयं सिद्ध है। योग मार्गी साधक तो इससे सर्व प्रकारसे लाभ लेते हैं, पर जीवनकी सामान्य प्रक्रियाओंके संचालनमें भी इसका महत्व है। दैनिक जीवनमें जो भी षट्कर्म करने होते हैं, वे सब भी स्वर-ज्ञान द्वारा संचालित एवं प्रेरित होने चाहिएँ। उदाहरणार्थ भोजनके विषयमें सर्वमान्य सिद्धान्त है—भूख लगे तब खाओ, पर इतनी सी बातका पालन बिरले ही साधक करते हैं। दूसरी बात जब दाहिना स्वर चलता हो तभी भोजन करना चाहिए। ज्ञान स्वरोदयमें श्रीचरणदासजी महाराजका कथन है :—

"बायीं करवट सोइये,
जल बायें स्वर पीव।
दाहिन स्वर भोजन करै,
सुख पावत है जीव॥"

तथा इसके विपरीत यदि :—

"बायें स्वर भोजन करै,
दहिने पीवे नीर।
दस दिन भूल्यौ यौं फिरै
आवे रोग शरीर।"

यह बात आजमायी हुई है। मैंने निजी जीवन में भी देखा है कि लगातार यदि कई दिन बायें स्वरमें भोजन कर लिया जाय तो निश्चय ही शरीरमें रोग उत्पन्न होंगे। पिङ्गला नाड़ीके बहते अर्थात् दाहिना स्वर के चलते भोजन करना शरीरकी प्रकृति की मांग है। उदाहरण आप स्वयं हैं। कभी बहुत जोरकी भूख लगे तो आप देखेंगे कि आपका दाहिना स्वर ही चल रहा है। इसी प्रकार बहुत प्यास लगी होगी तो स्वाभाविक बायाँ स्वर चलेगा ही। कई रोगी विद्यार्थियों को बायीं करवट सोने एवं दाहिने स्वरमें भोजन करनेका सुझाव देकर तथा इसका पालन करवा कर मैंने चंगा किया है।

यह तो सब जानते और मानते ही हैं कि स्वर पर नियंत्रण हुये बिना न तो योग सधता है और न दूसरे पर शासन ही होता है। अपनी इन्द्रियां जब तक वशमें नहीं होंगी, आध्यात्मिक तथा भौतिक जीवनमें असफलता रहती है।

श्री हरिगीतामें कहा है :—

निजसे करै उद्धार निज,
निजको न गिरने दे कभी।
नर आप ही है शत्रु अपना,
आप ही है मित्र भी॥

तो कुंजी अपने हाथ है, तथा सही रूपसे स्वर साधनके बाद आप स्वयं अपने स्वामी बन जायेंगे और निजानन्दके प्रकाशसे आप्लावित रहेंगे। यह करनेकी बात है—करके देखनेकी बात है, केवल कहने सुननेकी नहीं। शिव स्वरोदयमें श्रीमहादेवजीने पार्वतीसे यही कहा, यह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म स्वरोदय सुन्दर ज्ञान देने वाला और सत्यका निश्चय कराने वाला है, नास्तिकोंके लिये यह आश्चर्य है एवं आस्तिकों का आधार है।

भोजनके बाद या यों कहिये कि इससे भी महत्वपूर्ण बात है जल पीनेकी । जल जीवन है एवं जलसे सभी पेय निर्मित होते हैं। आजकल सामान्य जीवनमें पेयका चलन बहुत है, एवं सभ्यताका तकाजा यह है कि घर आये मेहमानसे यह पूछा जाय 'ठंडा पियेंगे या गरम ?'

तो हमें यह पता चला कि हमारे शरीरकी प्राकृतिक मांग क्या है, तथा न हम यह जानते हैं कि यह मांग कब की जा रही है। चायका चलन तो सामान्य चाल-चलनकी बात है। ऐसे समयमें हम केवल बायें स्वरमें ही पेय पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शपथ लेकर चलें तो काया निरोगी रहेगी। यह तो निर्विवाद सत्य है कि औषधालयों में स्वास्थ्य उपलब्ध नहीं होता और न बढ़ते हुये औषधालय राष्ट्रके शुभ स्वास्थ्यके ही लक्षण हैं। परन्तु जो सज्जन टेरामाईसिन और पेन्सीलिनका सेवन करके ही पुष्ट रहना चाहते हैं वे इस मार्गको पसन्द नहीं करेंगे, मैं तो यह चाहता हूँ कि इस सर्वसिद्धिकारक स्वर ज्ञानको जो जीवन प्रयोगशालामें अनुभूत विज्ञान है, हमारे सामान्य विद्यार्थी तक जान लें, जिससे उनका जीवन उन्नतिकी ओर अग्रसर हो। यद्यपि ऐसा होना प्रभु आधीन हैं।

दाहिने स्वरमें भोजन एवं बायें स्वरमें पेय पदार्थोंके ग्रहणके साथ-साथ भोजनके साथ पानी पीना, दही पीना, छाछ या सब्जीका रसा पीना चल सकता है।

आयुर्वेद वाले भोजन के साथ पानी पीना निषेध शायद इसलिये करते हैं कि दाहिने स्वरमें पानी पीना अनुचित है। एक घण्टे बाद स्वर परिवर्तन होता ही है, अतः जल भोजनोत्तर लगभग सवा घण्टे बाद ही पीना श्रेयस्कर है।

यह कितनी वैज्ञानिक बात है कि, जब हम दाहिने स्वरमें भोजन करते हैं तो जठराग्निकी प्रबलता उस समय रहती है एवं इससे भोजन सहज में पचता है। करोड़पति हो या अरबपति, गरीब हो या मध्यवर्गीय, जितनी भूख हो उतना ही खा सकता है, जितनी जठराग्नि होगी उतना ही पचा सकता है। अतः बीस रोटी खाकर भी यदि अपच रहा तो दो रोटियां खाकर पचाना अधिक उत्तम है। मल त्याग इसलिये दाहिने स्वरमें यानि सूर्य स्वरमें करना चाहिये कि स्वरकी सहज शक्तिसे शौचका सहज मल त्याग हो जायगा। न तो शौचालयमें अधिक देर बैठकर वहाँ की दूषित वायुका सेवन करना होगा और न जोर लगाकर शक्तिका अपव्यय ही होगा। लेकिन जैसा कि पूर्वमें भी निवेदन किया गया है, दस्तावर एवं कब्जहर गोलियां खाकर जो महामानव अपना स्वास्थ्य ठीक रखे हों वे जैसा उचित समझें करें। मार्ग सबके लिये सहज सुलभ है।

शौचके साथ तो मूत्र त्याग होता ही है। जैसे कि भोजनके साथ जल ग्रहण हो जाता है, अन्यथा मूत्र-त्याग सदा बांये स्वरकी उपस्थिति अर्थात् चन्द्र स्वरके बहने पर ही करना चाहिये। इसमें बचतकी बात निवेदन कर दूं कि किसी कारण विशेषसे यदि आपको अचानक मल या मूत्रका वेग प्रतीत हो तो हाजतकी सफाईके लिये स्वरको न देखें। मैं सामान्य जीवनकी प्रक्रियाका निवेदन कर रहा हूं और मेरी यह मान्यता है कि बादमें जाकर आपके जीवन पर आपका इतना नियंत्रण हो जायगा कि इसीके अनुसार मलमूत्रक त्याग होने लगेगा।

अब बायीं करवट सोनेका विवेचन करें। इसमें कुछ स्पष्टवादिताका सहारा भी लेना होगा, क्योंकि जीवनकी बात है, अतः कहनेकी आज्ञा चाहता हूँ। मैंने तीन दर्जनसे अधिक व्यक्तियोंका

इस संदर्भमें अध्ययन किया । उनमेंसे कुछके केवल लड़के ही लड़के थे, कुछके लड़कियाँ ही लड़कियां । अनजानमें वे बायीं एवं दाहिनी करवट शयन करनेकी आदतमें हैं । परिवार आयोजन और नियोजन तो सरकारी रूपसे अब चले हैं । भारतके इस पुरातन एवं सनातन विज्ञान द्वारा जो जैसी संतान चाहें आप प्राप्त कर सकते हें । सामान्य मानवोंमें भ्रम रहता है कि बायीं ओर हृदय होता है अतः उसे दबा कर सोनेसे हानि होगी । यह भ्रामक बात है । बायां स्वर सोनेसे सूर्य स्वर (दाहिने) की उपस्थिति रहेगी एवं आपकी धर्मपत्नीके दाहिनी करवट शयन करनेसे वाम स्वर चलेगा ऐसी परिस्थिति होनेसे केवल लड़का ही पैदा होगा, यह निश्चित है । हमारे विवाहमें स्त्रीको वामाङ्ग बताया है और उसे सदा बाँयी ओर रखनेकी शिक्षा दी जाती है जो कि इसी तथ्य की मूक शिक्षा है कि आप आगे दुःख न पावें । मैंने देखा है कि पांच लड़कियोंके बाद भी इसीलिये दुखी रहते हैं कि लड़का नहीं हुआ । इसके अतिरिक्त सामान्यतया भी बायीं करवट सोनेसे रात भर दाहिना स्वर चलेगा तथा चन्द्रमाकी उपस्थितिमें चन्द्रमाका निषेध प्रामाणिक है ।

दिनको चन्दा चलै, चलै रातको सूर ।
यह निश्चय कर जानिये, प्राण गमन बहु दूर ।।
रात चलै स्वर चन्दमें, दिनको सूरज बाल ।
एक महीना यों चलै, छठे महीने काल ।।

रातको इसलिये बायीं करवट सोना चाहिये यह अधिक प्राकृतिक एवं सुविधाजनक है ।

करना यह है कि आप तो जब शयनके बाद अवसर देखें कि निद्रा देवीने अब शरण दी है तभी बाँयी करवट सो जावें । सोनेके बाद सुषुप्ति अवस्था जो अनायास करवटकी अदला बदली होती है वह आपके करनेका विषय ही नहीं रहता । अतः आप उसका विचार ही न करें । रात्रिको दाहिना स्वर चलनेसे बायीं करवट सोनेसे भोजन पचनेमें अवश्य सहायता मिलती है । क्योंकि रात्रिके पश्चात् सामान्यतः कोई शारीरिक श्रम न तो किया जाता है न ऐसा सम्भव है । अतः करबद्ध निवेदन है कि आजसे ही स्वामी चरणदासजी महाराजकी आज्ञानुसार—

बायीं करवट सोइये, जल बाँये स्वर पीव ।
दहिने स्वर भोजन करें, सुख पावत है जीव ।।

भुवर्लोककी सैर

[श्री० व्रजनन्दन, श्री अरविन्द आश्रम पाँडीचेरी]

आज जब मनुष्य चांदपर भ्रमण कर सफलता-पूर्वक लौट आया और अन्य ग्रहों पर भी जानेका स्वप्न साकार करनेकी परिकल्पनाएं बनानेमें व्यस्त है, तो प्रश्न उठता है, कि लोग विश्वके स्थूल भूखंडोंको तो सामान्य चर्मचक्षुओंसे (दूरबीनी शीशे लगाकर ही सही) देखते हैं और वहां पहुंचनेकी योजनाएं बनाते हैं, जिनमें अगणित धन-राशिका व्यय होता है और लाभ एक "थ्रिल" के अतिरिक्त और भी कुछ होगा, यह अभी संदिग्ध है, किन्तु हमारे इस भूलोकसे नाता रखने वाले जो सूक्ष्मलोक हैं, तथा जो सतत इस पर हितकर या हानिकर प्रभाव डालते एवं क्रिया करते रहते हैं, उनके प्रभावोंको महसूस करते हुए भी उनपर बिलकुल नहीं या नहींके बराबर ध्यान देते हैं तथा उनकी छान-बीनके विषयमें सर्वथा उदासीन हैं । पर "थ्रिल" अन्ततः "थ्रिल"

ही है, वह आनन्द नहीं हो सकता और न मनुष्य उसके दु:ख-कष्टोंसे उद्धार ही कर सकता है जिसकी उसे सर्वोपरि आवश्यकता है। तथा भौतिक प्रणालियों द्वारा जिसकी खोजमें लोग परस्पर विनाश तथा आत्मनाश तक पर तुले हुए हैं।

तो चलिये आज मैं आपको भूलोकसे सटे एक निकटतम सूक्ष्मलोक—भुवर्लोक या प्राण-लोककी सैर कराऊं या, ठीक-ठीक शब्दोंमें, उसका वृत्तांत सुनाऊं। किन्तु सूक्ष्मलोकके वृत्तांतसे यह अर्थ न लें कि यह कोई परीकी कहानी है। नहीं, यह भी गहरी खोज पर आधारित है और अपनी खोजमें किसी भी प्रकारका वैज्ञानिक नहीं। पर यह भौतिकीकी खोज नहीं, आध्यात्मिक महापुरुषोंकी खोज है तथा भौतिकीकी खोजसे कोई कम मनोरंजनकारी नहीं है।

अभी थोड़ी देरके लिये हम पहलेकी खोजोंको छोड़कर पहले एतत् सम्बन्धी आधुनिक खोजों पर एक विहंगम दृष्टि डालें। आधुनिक खोजी जिसमें आउस्पेंस्की जैसे वैज्ञानिक एवं गणितज्ञ मस्तिष्क भी शामिल हैं, स्वचालित लेखों तथा मृत आत्माओंको बुलाने वाली गोष्ठियों द्वारा इस लोकके संपर्कमें आये तथा इसके जीवोंकी कुछ जानकारी प्राप्त की। इन लेखों तथा गोष्ठियोंका उद्देश्य होता है मृत व्यक्तियोंके प्रेतोंको बुलाना। पर इनमें प्रकट होने वाले प्रेत क्या मृत व्यक्तियोंकी अंतरात्माएं होती हैं? श्रीअरविन्द हमें बतलाते हैं कि भौतिक शरीर त्याग करनेके तुरंत बाद ही अंतरात्मा अपने सभी सूक्ष्म-कोष, मानस् कोष, प्राण कोष आदि भी छोड़ कर विश्रामार्थ आंतरात्मिक लोकमें चली नहीं जाती। प्रचलित परंपरोक्तिके अनुसार इस कार्यमें उसे तीन वर्ष लगते हैं, यद्यपि इसमें कम या अधिक समय भी लग सकता है। आंतरात्मिक लोकमें चले जाने पर अंतरात्मा, दूसरे जन्म ग्रहण करनेके पहले तक, वहां आत्मसमाहित होकर विश्राम लेती है, न कि पृथ्वीके साथ संबन्ध-व्यवहार करती है, कमसे कम इस प्रकार नहीं। और वह प्रेत या भूत जो उपर्युक्त गोष्ठियोंमें प्रगट होता है, अंतरात्मा नहीं होता। माध्यम द्वारा जो वस्तु आती है वह है (१) माध्यमकी तथा वहां बैठने वालोंकी अवचेतना (अवचेतना शब्दका व्यवहार यहां सामान्य अर्थमें किया जा रहा है, यौगिक अर्थमें नहीं) का एक घोल, मेल, (२) मृत व्यक्ति द्वारा छोड़े गये अथवा शायद किसी भूत या प्राणिक सत्ता द्वारा अधिकृत किये गये प्राणिक कोष, (३) मृत व्यक्ति स्वयं अपने प्राणिक शरीरमें अथवा उस अवसरके लिये धारण किये किसी प्रकारके शरीरमें (किन्तु सम्बन्ध व्यवहार प्राणिक भाग ही करता है), (४) प्राकृतिक शक्तियोंकी आत्माएं, (५) पृथ्वीके निकटके निम्नतम प्राणिक-भौतिक जगत्की सत्ताएं, आदि, आदि। अधिकतम अंशमें यह एक भयंकर सम्मिश्रण होता है—भुवर्लोकके धूसर प्रकाश तथा छायाके भीतरसे आता हुआ अनेकों वस्तुओंका घचपच। बहुतसे माध्यम ऐसे व्यक्ति प्रतीत होते हैं जो किसी ऐसे सूक्ष्म जगत्में अभी प्रवेश मात्र पाये हैं और जहां वे पार्थिव जीवनके एक अधिक सुधरे हुए संस्करण द्वारा अपनेको घिरा पाते हैं और समझ बैठते हैं कि यही है पृथ्वीके बादका वास्तविक एवं सुनिश्चित परलोक—किंतु यह मानव जगत्के विचारों और कल्पनाओं तथा संसर्गोंका मात्र एक आशावादी विस्तार होता है। पर यह सच नहीं कि सब कुछ नाटकीय कल्पना तथा स्मृतिका ही खेल है। कभी-कभी ऐसी बातें होती हैं जिनकी जानकारी या स्मृति वहां किसी भी उपस्थित व्यक्तिको नहीं होती, कभी-कभी यद्यपि ऐसा विरले ही होता है, भविष्यकी झांकियां मिलती हैं। किन्तु सामान्यतः

ये बैठक आदि, व्यक्तिको प्राणिक सत्ताओं एवं शक्तियोंके एक अत्यंत निम्न जगत्के साथ संपर्कमें ला देते हैं, जो स्वयं अंधकारमय, अस्पष्ट अथवा छलिया होती हैं और उनके साथ संबन्ध स्थापित करना अथवा उनका प्रभाव ग्रहण करना खतरनाक है।

फिर प्रश्न उठता है कि वे भूत क्या हैं, जिनके विषयमें हम कई लोगोंके मुंहसे सुनते हैं कि उन्होंने देखा है और जिसके कारनामे भी हमें देखने सुननेको मिलते हैं? ये अनेकों प्रकारकी सुस्पष्ट दृष्ट घटनाएं होती हैं, जिनका आवश्यक रूपसे एक-दूसरेसे कोई लगाव नहीं होता। इनके भी कुछ दृष्टांत श्रीअरविन्दके ही मुंहसे सुनें— (१) किसी व्यक्तिकी आत्मासे उसके सूक्ष्म शरीर में वास्तविक संपर्क, जो हमारे मनके आकृति अथवा सुनायी पड़ने वाले एक शब्दके रूपमें अनुदित होता है, (२) किसी स्थान या स्थल-विशेषके वातावरण पर किसी मृत मनुष्यके विचारों और संवेगों द्वारा अंकित एक मानसिक प्रकृति, जो वहां घूमती रहती है अथवा बार-बार प्रकट होती है, जब तक कि वह आकृति चुक नहीं जाती। किसी न किसी कारण द्वारा नष्ट नहीं हो जाती। भूतहा घर जैसी घटनाओं, जिसमें किसीकी हत्याके समय घटी या उसके चतुर्दिक वर्तमान तथा उसके पहलेकी घटी घटनाएं बार-बार प्रकट होती हैं तथा ऐसी ही अनेकों घटनाओंकी वही व्याख्या है, निम्नतर प्राणिक लोकोंका कोई जीव जिससे किसी मृत मनुष्य द्वारा त्यक्त उसका प्राणमय कोष अथवा उसके प्राणिक व्यक्तित्वका एक अंश धारण कर लिया है, तथा उसके रूपमें तथा उसके समान ही विचारों एवं स्मृतियोंके साथ प्रकट होना और क्रिया करना है, (४) निम्नतर प्राणिक लोकका कोई जीव, जो किसी जीवित मनुष्य अथवा किसी अन्य साधन या उपकरणके माध्यमसे अपनेको इतना पर्याप्त स्थल बना लेता है कि वह दृष्य रूपमें प्रकट हो सके या सुनायी पड़ने वाले शब्दोंमें बोल सके, अथवा बिना इस प्रकार प्रकट हुए ही, स्थूल वस्तुओंको जैसे कि टेबुल-कुर्सी आदि, इधरसे उधर बना सके अथवा सूक्ष्म वस्तुओंको स्थूल बना सके या उन्हें एक स्थानसे दूसरे स्थान हटाता फिरे। जिसे लोग गरजने वाले दुष्ट प्रेतके रूपमें जानते हैं तथा पत्थर फेंकने वाले, पेड़ों पर रहने वाले भूतों और ऐसे ही अनेकों सुविदित घटनाओंका यही कारण है, (५) वे छायायें जो स्वयं अपने ही मनकी रचना कृतियां हैं तथा इन्द्रियोंके सामने वस्तु परक रूप ले लेती है, (६) प्राणिक सत्ताओं द्वारा, जो कभी-कभी अपनेको मृत व्यक्तिका संबन्धी बतलानेका बहाना करती हैं, लोगोंका अस्थायी ग्रसन (७) मरने के समय प्रायश: मरने वाले व्यक्ति द्वारा प्रक्षिप्त उसकी निजी विचारमूर्तियां जो उस समय या उसके कुछ घंटे बाद उसके मित्रों या संबंधियोंके सामने प्रकट होती हैं।

हमारा यह पार्थिव वातावरण अत्यंत छोटी-छोटी असंख्य प्राणिक सत्ताओंसे भरा पड़ा है, जिसमें कुछ तो हितकर हैं, अधिकांशतः हानिकर तथा दुष्ट प्रकृतिके एवं कुछ प्राकृतिक शक्तियोंकी आत्माएं हैं। ये मनुष्योंके भीतर सभी प्रकारके भावावेग, काम, क्रोध, लोभ, मोहादि संप्रेषित करती रहती हैं और उनसे सभी प्रकारके कर्म करनेमें इन्हें मजा आता है। दुर्घटनाएं सृष्ट करनेमें इन्हींका हाथ होता है, युद्ध तो इनकी शानदार दावत है। पर किसी बड़े पैमानेमें कार्य करनेके लिए, जैसे विश्व-युद्ध लानेमें तथा अब तककी बनी हुई मृत्युकी विधान परंपराको कायम रखनेमें इनके पीछे इन सत्ताओंका एक महान् संगठन तथा महान् असु-

रोंका हाथ होता है—मिथ्या एवं मृत्युके असुरों का, अन्धकार एवं दुःख-कष्ट तथा घृणाके राक्षसोंका हाथ। ये महान् असुर कभी बड़े देवता थे "पूर्वदेवा"—पर किसी कारणवश (जिसकी व्याख्या इस लेखके क्षेत्रके बाहरका विषय है), ये अपने ठीक विपरीत तत्वमें परिणत हो गये, तथा जिस जगत्की सृष्टि करने और चलानेका भार इन्हें दिया गया था उसे सर्वप्रकारेण ग्रसनेके प्रयासमें व्यस्त हैं। वे अपनी विलक्षण शक्ति और सामर्थ्यके कारण मनुष्यको देवता जैसे प्रतीत होते हैं। हिटलरको अधिकृत कर उसके विश्व-युद्ध करने वाला असुर मिथ्याका असुर था। वह हिटलरके समक्ष ज्योतिर्मंडलसे आवृत्त देवता के रूपमें प्रकट होता था। और उससे कहता था, "मैं सभी राष्ट्रोंका अधिपति देवता हूँ, तुम्हें मैं सभी राष्ट्रोंका स्वामी बना दूंगा।" यदि वह सफल हो जाता है तो जगत्का उर्ध्वतर विकाश कमसे कम सौ सालके लिए पिछड़ जाता। किन्तु अधिक सशक्त ऊर्ध्वतर शक्तियां मैंदानमें उतर आयीं और एक ओर मित्र राष्ट्रोंके टूटे बल और उत्साहमें नव ऊर्जाका संचार कर तथा दूसरी ओर हिटलरको एक दूसरे दैत्यसे लड़नेको उभारकर उसका काम तमाम कर दिया।

अब देखिये प्राकृतिक शक्तियोंकी आत्माओंको, जैसे, पाला, तुषार-पात, वर्षा आदि। वर्षा क्यों होती है? वर्षा उत्पन्न करने वाली छोटी-छोटी सत्ताएं होती हैं, जिनके फूंकनेसे बर्षा होती हैं। बेचारा भौतिक बैज्ञानिक वर्षाके कुछ स्थूल भौतिक कारण मात्र जानता है, पर इन कारणोंके पीछे छिपे वास्तविक तथ्यका पता पानेका उसके पास कोई साधन नहीं—न तो वह अनावृष्टिका कारण बतला सकता है, न अतिवृष्टिका, और न इन्हें दूर करनेका कोई उपाय ही उसे ज्ञात है। फिर भी वे सूक्ष्म साधन जिनसे वृष्टि ज्ञात, तथा नियंत्रित की जा सकती है, उसे सर्वथा अमान्य हैं। यदि इन छोटी-छोटी अत्यंत मनमौजी सत्ताओं पर उच्चतर अतिमानसिक शक्तिका सतत प्रभावक चाप दिया जा सके तब इन्हें नियंत्रित किया जा सकता है। किन्तु क्योंकि यह विधान सारी मानवतासे संबन्ध रखता है, इससे कार्यमें मानव जातिके कमसे कम एक पर्याप्त समूहके संकल्प का सहयोग आवश्यक है, जैसे किसी विश्व-युद्धको जीतनेके लिये एक बड़े पैमानेमें राष्ट्रोंके सामूहिक शक्तिकी आवश्यकता पड़ती है।

(शेष अगले अंकमें)

तलाक और पुनर्विवाहके ग्रहयोग

[लेखक :—श्री कालीचरण शर्मा, सनावद म०प्र०]

प्राचीनकालसे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य कुलके अतिरिक्त बहुत सी जातियोंमें पुनर्विवाह होता आया है। समयके प्रभावसे जिन जातियोंमें पुनर्विवाहकी प्रथा नहीं थी, उनमें भी यह प्रवाह चल पड़ा है। धर्मशास्त्रकी दृष्टिसे इस संबंधमें विचार न करते हुये ज्योतिष-शास्त्र दृष्टया ही यह विषय विचारणीय है। राजस्थानमें पुनर्विवाह को ग्रामीण भाषामें 'नातरा लगाना' और मध्यप्रदेश व मालव देशमें इसे 'पाट लगाना' कहते हैं। तलाक दे देनी वाली नारियां एवं पुनर्विवाह करने वाली स्त्रियां प्रथम पतिकी जीवितावस्थामें ही पुनर्विवाह करती या पाट लगाती हैं। बहुत सी तो दो-दो तीन-तीनकी कौन कहे चार-चार पांच-पांच पाट लगाती हैं!

किसी भी कुण्डली परसे अमुक स्त्री तलाक देगी या पुर्नविवाह करेगी या नहीं करेगी ऐसा कहना सर्वसाधारणके लिये शक्य नहीं, कितने लोगोंकी ऐसी समझ है कि पुर्नविवाह करने वाली बालाओंकी कुण्डली विशेष प्रकारकी होती होगी। परन्तु इस संबंधमें विचार करने पर ऐसा अनुमान करना ठीक नहीं पाया जाता। पुर्नविवाह के विशेष योग होनेमें कोई कारण नहीं जँचता। पुरुषोंकी कुण्डलीमें भी ऐसी ही व्यवस्था मानी हुई है। कुण्डलीमें सिर्फ स्त्रीमारक किम्बा पति-मारक योग रहता है, इस कारण ज्योतिषी इतना ही कह सकता है कि, पुरुषकी कुण्डलीमें स्त्री-मारक योग हुआ तो "द्वि भार्या योग" है। ऐसा दैवज्ञ बन्धु कहते हैं, इस कारण बहुधा पुरुष एक स्त्रीके मृत होने पर दूसरी पत्नी करता है, ऐसी परंपरागत व्यवस्था व व्यवहार है। परन्तु, व्यवहार चाहे जैसा हो पुरुष कुण्डलीके वर्णनमें जो द्विभार्या शब्द आया है उसका तात्पर्य पुनर्विवाह शब्द व योग स्वतंत्र नहीं व उसका होना भी संभव नहीं। पति-मारक योग व व्यवहार (जिस जातिमें यह प्रथा चालू हो या ऐसोंका ही विशेष समागम होता रहता हो ऐसी चर्चा बार-बार सामने आती हो) मार्ग देखकर ही एवं प्रोत्साहन मिलने पर ही बिचारधारा बदलती है।

जिस पुरुषका पुर्नविवाह होता है उसको अपने कुटुम्ब व अपनी प्रजाका त्याग नहीं करना पड़ता (पुर्नविवाह अर्थात् फिरसे वैवाहिक बन्धन इतना ही अर्थ लगाया जाता है) परन्तु नारी जातिके लिये पुर्नविवाह व तलाक दे देने पर पहला कुटुम्ब व पहले पतिसे उत्पन्न सन्तानका परित्याग करना पड़ता है, तब इन घटित घटनाओं की साक्षी कुण्डलीमें ही होना भी आवश्यक है और होना भी चाहिये, जब कि ग्रह प्रभावानसार ही मानव शरीर व चरित्रका निर्माण होता है। तलाक देने वाली स्त्रियाँ व पुर्नविवाह करने वाली नारियोंके जन्मकालमें पुर्नविवाह (पति-मारक) योगके साथ कुटुम्ब त्याग करनेका योग है या नहीं यह समझ कर ही तलाक दे देने व पुर्नविवाह योगकी भविष्य-वाणी करना चाहिये। निम्नलिखित योग कुटुम्ब त्यागनेमें साधक हैं :—

(१) जन्मकुण्डलीमें कुटुम्ब (दूसरे) स्थान पर पापग्रह।

(२) शुक्रसे दूसरे स्थान पर पाप ग्रह।

(३) चन्द्रसे दूसरे स्थान पर पापग्रह।

(४) सप्तमेशसे २रे स्थान पर पापग्रह।

जिस स्त्रीके जन्मकालमें इस प्रकारके ग्रह योग होंगे वह नारी कुटुम्बका त्याग करेगी, कुटुम्ब से द्वेष भाव करेगी, और उसके कुलका व्यवहार मार्ग अनुकूल होकर जिसको वैधव्य योग होगा तो ऐसी नारी अनेक बार 'पाट' लगाती रहेगी और नये-नये नवयुवकोंसे पति संबंध करने वाली होगी, ऐसी भविष्यवाणी करनेमें संकोच नहीं करना चाहिये। यदि उक्त स्थान पर पापग्रह शत्रु क्षेत्री अग्निराशि (१।५।९) में हो वा नीच राशिस्थ हो तो निश्चित रूपसे तलाक देगी, व दूसरा विवाह करेगी।

कुटुम्ब स्थान चतुष्टयमें हर्षल प्लूटो, नीचस्थ रवि, वक्र मंगल, वक्र शनि, मांदी होंगे तो कुटुम्बसे किसी कारणको लेकर क्लेश उत्पन्न करके तलाक देगी, अन्य पुरुषके साथ भाग जाएगी, या प्रकट रूपसे पुर्नविवाह करेगी। स्त्रीकी कुण्डलीमें यदि सप्तम स्थान पर हर्षल हो और दूसरे योग (पुर्नविवाह कारक) हों और अनुकूल मार्ग (जहां पुर्नविवाह होते हैं) का मार्ग प्रचलित हो वा जहां ऐसी बातोंका प्रोत्साहन प्राप्त हो, या

ज्योतिष्मतीके लिए विशेष लेखमाला—

सामुद्रिक से पहले ज्योतिषकी जानकारी आवश्यक

[लेखक :—श्री मोहन लाल कावलिया, "मिनखराज" लायब्रेरियन,
डीडवाना (नागौर) राजस्थान]

कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ॥

उपरोक्त श्लोकका गहराईसे अध्ययन करें तो हमें यही ज्ञात होगा कि इसका अर्थ ज्योतिष-शास्त्र एवं सामुद्रिक शास्त्रमें पर्याप्त समानता रखता है । मनुष्य अपने करावलोकनके द्वारा भावी घटनाएं जो समय-समय पर प्रकटित होती रहती हैं—उनका पूर्वज्ञान होनेसे मनुष्य अपने भावी जीवनमें अप्रिय घटनाओंसे जूझनेमें समर्थ एवं प्रयत्नशील हो सकता है । इसी हेतु प्राचीन महर्षियोंने प्रातः शैया त्यागनेसे पूर्व निज हाथोंका दर्शन करना श्रेष्ठ बतलाया है । केवलमात्र हस्तावलोकन व प्रातःस्मरण करनेसे लक्ष्मी, सरस्वती, भगवान् कृष्ण आदि देवताओंके दर्शन लाभका पुण्य प्राप्त होता है । इस प्रातः क्रियाको नियमित करके धनवान् एवं विद्वान् होनेके कई प्रत्यक्ष प्रमाण है । हाथोंको देखकर सब कुछ जाना जा सकता है, आयु, मृत्यु, सुख-दुःख, विद्या-बुद्धि, स्त्री-सन्तान, मित्र-शत्रु, रोग, दुर्घटनाएं, व्यापारमें लाभहानि, जीवनके भूत, भविष्य एवं वर्तमानका ज्ञान केवल हस्तरेखाओंको देखकर जाना जा सकता है । इस हस्तरेखा विज्ञानके प्रणेता महामहिम पूजनील महर्षिवर समुद्र थे ।

उक्त बातोंकी जानकारी हस्त रेखाओंसे ज्ञात हो सकती है । किन्तु सामुद्रिक विद्या, ज्योतिष विद्याके बिना अपूर्ण ही रहती है । यदि यह कहा जाय कि सामुद्रिक विद्या एवं ज्योतिष विद्या एक ही सिक्केके दो पहलू हैं तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं । इसलिए सामुद्रिक विद्याके पूर्व ज्योतिषका अध्ययन परम आवश्यक है । ज्योतिषकी जानकारीसे ही हम हाथोंमें स्थित रेखाओंसे सम्बन्धित नक्षत्र ग्रह राशि इत्यादिकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । ज्योतिषमें पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेने पर तथा हस्तरेखाओंकी सहायतासे मनुष्यके तीनों कालों अर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमानका हाल स्पष्ट रूपसे जाना जा सकता है । ज्योतिष ज्ञानके लिए चित्त एकाग्रता तथा कुशाग्र बुद्धि होना आवश्यक है । मननशीलता एवं आत्म-संयम सिद्धिके प्रथम सोपान हैं ।

मेरा पाठक बन्धुओंसे यही निवेदन है कि वे ज्योतिष-शास्त्रका सम्यक् ज्ञान प्राप्त करें । जिससे हस्त सामुद्रिक शास्त्रके अध्ययनमें सुगमता

इस मार्गको अपनानेकी चर्चा चलती रहती हो) होने पर उस स्त्रीकी पतिसे पटेगी ही नहीं, पति प्रेमसे वंचित रहनेसे ऐसी युवतिको बाध्य होकर अन्य पतिकी बराबर इच्छा उत्पन्न होती ही है । ऐसे योग वाली स्त्रीकी जन्म कालीन ग्रहसंस्थामें पुनर्विवाह योग अनुकूल हो तो पतिके जीवित रहते एवं स्वस्थ व सम्पन्न सुन्दर रहते भी तलाक देकर दूसरा पति वरेगी ।

नोट :— वर-कन्याओंकी टिप्पणीमें कुण्डली मिलाते समय भी उपर्युक्त विचारधारा उपयोगमें लाकर अनुभव कर तत्पश्चात् सम्बन्धकी स्वीकृति दें ।

एवं पूर्णता प्राप्त हो सके। फिर आप हस्तरेखाओं को देखकर जो भी फलादेश करेंगे, उसमें गलतीकी किञ्चिन्मात्र भी सम्भावना नहीं रहेगी। "अनुभव ही मानवकी महान् सफलताकी कसौटी है।" अनुभवी होने पर शान्त और पवित्र आत्मासे इस कार्यमें प्रवृत्त होवें। आप अवश्य सफल मनोरथ होंगे। अनुभव पर अधिक जोर देनेका भी एक प्रयोजन विशेष है कि वास्तवमें सत्यता अनुभवमें सन्निहित है। अनुभव की हुई बात अधिक विश्वास एवं साहसके साथ कही जा सकती है। कभी-कभी ऐसा भी देखनेमें आता है कि कभी हस्तरेखाओंसे प्राप्त फलादेश अंशतः गलत हो जाता है। इसका एक कारण है—प्राचीन हस्त रेखाओंके शास्त्र प्रणेता ऋषि महर्षियोंके द्वारा जो फलाफल दिये गये हैं उनकी प्रामाणिकता निःसन्देह विश्वसनीय होते हुए भी आजके वैज्ञानिक युगमें यत्र-तत्र संदेहास्पद हो जाती है। ऐसा भी सम्यक् ज्ञानके अभावमें ही होता है। प्राचीनकालसे आज परिस्थितियां कितनी बदल गईं है, इसका अनुमान इस बातसे लगाया जा सकता है कि प्राचीनकालमें स्वास्थ्य शक्ति, आयुमें आजकल कितना अंतर आ गया है। प्राचीन कालमें मनुष्यकी औसत आयु १२० वर्षके लगभग थी, लेकिन आज औसत आयु ५० वर्ष ही है और पता नहीं भविष्यमें कितनी रह पायगी। यदि प्राचीन आयुका फलाफल लिया गया और वर्तमान परिस्थितियाँ दृष्टिगोचर की गईं तो फलाफलकी सत्यताकी प्रामाणिकता संदिग्ध रहे बिना न रहेगीं। इसके लिए अनेक हाथोंका अवलोकन करके अभ्यास करना वाञ्छनीय है।

किसी मनुष्यका हाथ देखनेमे पूर्व उसकी प्रकृति—परीक्षा अवश्य करनी चाहिए। इसी पर सामुद्रिकके साधकोंकी सफलता आश्रित है—प्रकृतिका ज्ञान ज्योतिषके माध्यमसे सम्भव है।

प्रकृति-परीक्षा

प्रायः देखनेमें आता है कि हस्त-सामुद्रिक विद्याके ज्ञाता प्रकृतिपरीक्षा करना जानते नहीं हैं, अथवा जानते भी हैं तो इसको आवश्यक नहीं समझते। ऐसा करना भयंकर भूल है, इन्हीं साधारण भूलोंके कारण आज भारतीय चमत्कारिक विद्याओंके प्रति अविश्वासकी भावना बढ़ती जा रही है। इनको कपोल-कल्पित कह कर उपेक्षा की जाती है। इसलिए आवश्यकता इस बातकी है कि किसी भी साधनाको किया जाय उसको धैर्यके साथ पूर्ण करके ही दम लेना चाहिए। इसके लिए अभ्यास किया जाय और जब तक पूर्ण जानकारी न हो जाय तब तक गलत फलाफल निर्णय नहीं देना चाहिए। हमें ऐसा विश्वास है कि प्रकृति-परीक्षा करके फलाफल निर्णय करना ही प्रतीक्षित सिद्धि दाता हो जाता है। प्रकृति-परीक्षा किस प्रकार की जाय इसीका विचार यहाँ करणीय है।

प्रकृति-परीक्षा तीन प्रकारसे की जाती है।

१—मुखाकृति, शरीर-गठन, बाह्यचिह्नोंके द्वारा।

२—पंजेकी बनावट देखकर।

३—जन्म-पत्री देखकर।

इनमें एक और दो नम्बर लक्षणोंका अनुमान लगा सकते हैं। किन्तु मुख्य वस्तु नम्बर तीन जो कि पूर्ण सन्तोष दाता है ज्योतिषका विषय है। उक्त नम्बर १—२ के अनुसार, शिर, ललाट, भृकुटि, चक्षु, नासिका, कर्ण, ओष्ठ, ठोडी, जबड़ा, ललाट, गरदन, बाल, (रंग, रचना, बनावट) मूछें, त्वचा, तिल, मस्से, गति, वक्षस्थल, कटि, हाथोंकी रचना (हाथकी हथेली, अँगूठा, उँगलियाँ, नाखून) अंगोंका हावभाव (हाथ मिलाना, हाथों और उंगलियोंकी आकस्मिक चेष्टायें मुंह ओष्ठोंकी चेष्टायें, बोलनेका शिष्टाचार, हंसी)

आदि के द्वारा जानी जा सकती है। स्थानाभावके कारण और लेख बढ़ जानेकी वजहसे इनके बारेमें अग्रिम लेखमें विस्तृत जानकारी आपकी सेवामें दी जा सकेगी। प्रस्तुत लेखोमें जन्म-पत्री द्वारा प्रकृति-परीक्षा जो कि शीर्षकसे विशेष सम्बन्ध रखता है, उसीका विस्तारसे वर्णन करेंगे।

जन्मपत्रीसे प्रकृति परीक्षा

हम ऊपर लिख चुके हैं कि हस्तरेखा विज्ञान और ज्योतिष-विज्ञानका आपसमें घनिष्ठ सम्बन्ध है। ज्योतिष-शास्त्रके द्वारा किये गये फलादेश पर सभीको आश्चर्य होता है और हमारे ऋषि मुनियोंके ज्ञान पर गर्व एवं आनन्द होता है कि उन्होंने अपनी अक्षय ज्ञान राशिसे जो अनुभव प्रदान किये थे उनकी प्रामाणिकता हजारों वर्ष बीत जाने पर भी सत्य प्रमाणित होती है। उन्होंने समय विभाजन बड़ी बुद्धिमत्तासे किया है। ३६५ दिनका एक वर्ष या संवत्सर माना गया है। ६० संवत्सरोंको मिलाकर साठिक माना गया है। संवत्सरके दो भेद सूर्यकी गतिके अनुसार दक्षिणायन और उत्तरायणमें विभक्त किया गया है। सूर्य भगवान् ६ महीने उत्तरायण तथा ६ महीने दक्षिणायनमें रहते हैं। उत्तरायणमें रहते हुए भूगर्भके उत्तरीय खण्डमें इसका बड़ा महत्व रहता है। और ऐसा होते हुए भगवान् भास्करके अनुगामी और अनुवर्ती नक्षत्रोंका प्रभाव कम रहता है, लेकिन दक्षिणायन होते ही क्रूर ग्रहोंकी बन आती है। और वे अपने प्रभावसे लोगोंको प्रभावित करते हैं।

हम लोग उत्तराखण्डके निवासी हैं। इसी कारण दक्षिणायनसे उत्तरायणको श्रेष्ठ और शुभ मानते हैं। इसी कारण हमारे सभी उत्तम कार्य उत्तरायण कालमें ही करना श्रेष्ठ बतलाया गया है। महात्मा भीष्मने इसी कारण दक्षिणायन सूर्य रहते अपने प्राण त्याग नहीं किये थे। श्रीकृष्ण भगवान्ने गीतामें कहा है कि :—

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः॥
(८—२४)

अर्थात् उत्तरायणमें शरीर त्याग कर ब्रह्म-वादी ब्रह्मको प्राप्त हो जाते हैं, पीछे फिर संसारमें जन्म मरण नहीं होता है।

प्रत्येक सम्वत्को फिर बारह भागोंमें बांटा गया है जो महीने कहलाते हैं। प्रत्येक महीना कृष्ण और शुक्ल इन दोनों पक्षोंमें बांटा गया है। प्रत्येक पक्षमें १५ तिथियां होती हैं। तिथियोंके बाद वार, और प्रत्येक वार, दिन और रात्रिमें विभाजित हैं। प्रत्येक दिन रात्रिमें एक नक्षत्र का व्यतीत होना माना जाता है और प्रत्येक ऐसे २। नक्षत्रोंमें राशि व्यतीत होती है। इनके अतिरिक्त प्रत्येक दिन रात्रिके चार चरण होते हैं। इनके सिवाय ज्योतिषमें योग, करण, लग्न और अंशोंका भी विचार है।

समय विभाजनके लिए एक बातका अवश्य ध्यान रक्खें कि समयका सूक्ष्म विभाग लग्न पर आधारित है। प्रत्येक लग्नकी प्रकृति भिन्न और उसका प्रभाव भी भिन्न होता है। इस प्रभावके कारण ही भिन्न-भिन्न नामकरण किया गया है। ज्योतिषके अनुसार हमने जितना भी समय विभाजन सम्बन्धी उक्त वर्णन किया है—उसका भिन्न-भिन्न प्रभाव होता है। यहां तक कि प्रत्येक संवत्सरका भिन्न प्रभाव और परिणाम होता है। भिन्नता सम्वत्सरोंके अनुसारसे केवल ६० वर्ष तक ही चलती है, इसके उपरान्त फिर क्रमशः वही प्रभाव होने लगता है। ऐसा ही पक्ष, मास आदिके बारेमें समझिये।

इन्हीं सबका प्रभाव मानव शरीर पर जन्मसे ही प्रारम्भ हो जाता है। जन्मका लग्न ही प्रथम देखा जाता है। लग्नको फिर अंशोंमें बांटा है, जो जन्म कालमें देखा जाता है। फिर नक्षत्र, राशि, दिन, तिथि, पक्ष, मास और वर्षके फलों को मिलाकर मिला हुआ निष्कर्ष ही किसीके जन्मफलका ठीक ठीक विचार है।

इसमें हमारा अभिप्राय केवल यही है कि जन्मलग्न या जन्म-पत्र देखकर मनुष्यकी प्रकृति जान लेना चाहिए। फिर हस्त-सामुद्रिक शास्त्रका अध्ययन करें, जिससे आपके द्वारा अतीत, वर्तमान, और अनागतके किये गये फलाफल बिलकुल ठीक हों। ज्योतिष शास्त्र एक ऐसा विशाल सागर है—इसके बारेमें जितना लिखें उतना ही कम है। अतः विस्तारके भयसे संक्षिप्त लेख लिखा है। प्रकृति-परीक्षाके शेष उपायोंका वर्णन पाठकोंकी सेवामें आगामी लेखमें शीघ्र प्रस्तुत करेंगे।

परमात्माका अस्तित्व

[कुमारी मुबारक जहाँ]

(गताङ्कसे आगे)

(५)

सन् १९४१ ई० का आविर्भाव हो चुका था। शीत ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर थी। तुषारमिश्रित वायु मानो सूर्यकी किरणोंको भी शीतलकर, कर देती थी और हमारे छोटे भाई डेढ़-दो मासके नन्हें-से अहमद अली दो दिनसे डब्बेके रोगसे ग्रस्त थे। न आंखें खोलते थे, न दूध पीते थे, न रोते थे, न हाथ-पैर हिलाते थे, बस चुपचाप धीरे-धीरे साँस ले रहे थे और माताजी समस्त संसारकी वेदना आंखोंमें सजाये उनको गोदमें लिये बठी धीरे-धीरे रह-रहकर ठण्डी सांसें ले रहीं थीं—रह-रहकर अपलक रूपसे उनको निहार रही थीं। घरभरमें अवसादकी छाया पड़ी हुई थी। कहांकी चहल-पहल, कहांका आमोद-प्रमोद, दो दिनसे चूल्हा तक न जला था।

उस समथ लगभग साढ़े चार वजे होंगे। सूर्य कदाचित् शीतके भयसे घबराकर अस्ताचल की ओटमें दुबकने जा ही रहा था, कि सहसा एक बाबाजी धड़धड़ाते हुए ऊपर आ पहुँचे और पिताजी हतप्रभसे होकर उनका मुंह ताकने लगे, परन्तु वे तड़ाक्से बोले—'देखता क्या है। ला-ला, रोटी खिला।'

पिताजी क्या उत्तर देते। रोटी पकी ही कहां थी, जो बाबाजीको खिलाई जाती? पिताजीको चुप देखकर बाबाजी उसी तड़ाकेसे बोले—"रोटी नहीं है, तो बाजारसे मिठाई मंगवा—दूध मंगवा। जल्दी कर जल्दी!"

यह सुनते ही माताजीने मुझे आज्ञा दी—'बेटी मुबारक, जा तो दौड़कर! महाराजकी दूकानसे पाव-भर मगद और आध सेर दूध ले आ। पेटीमेंसे एक रुपया निकाल ले। देख, रास्तेमें खेलने न लगना।"

मैंने तत्काल माताजीकी आज्ञाका पालन किया। जब बाबाजी मगद खा चुके और दूध पी चुके, तब माताजीके सामने जा खड़े हुए और बोले—'माई तू उदास क्यों है? बच्चा तो अच्छा है। सवेरे तक दूध भी पीने लगेगा।'

अहमदअलीको यह आशीर्वाद देकर बाबाजी चलते उनके आशीर्वाद पर माताजीने सहज

ही विश्वास कर लिया । विश्वास बलदायक ही नहीं, फलदायक भी होता है । अतः माताजीके धधकते हुए हृदय पर जैसे अमृतके छींटे पड़ गये । कहां तो वे दो दिनसे मौन धारण किये बैठी थीं और कहां अब भलीभांति बोलने–बताने लगीं और बाबाजीके आशीर्वादको प्रत्यक्ष देखने की आतुर प्रतीक्षा करने लगीं ।

नौ बजते-बजते अचानक कक्कू आ पहुँचे । वे नातेमें पिताजीके बड़े भाई होते हैं और आड़े समयमें पिताजीको अवश्य कुछ–नकुछ सहारा देते हैं । उन्होंने घरका उदास वातावरण देखते ही पिताजीसे प्रश्न किया—"आज तो कुछ हल-चल दिखाई नहीं देती—क्या बात है ?"

अहमदअली बीमार है—वही पुरानी बीमारी है !"

"कबसे ?"

"दो दिनसे ।"

"और मुझे खबर भी नहीं दी । तोबा-तोबा ! अक्ल पर पत्थर तो नहीं पड़ गये ? फिर इलाज किसका हो रहा है ?"

"उन्हीं गढ़कोटावाले वैद्यजीका ।"

"खूब ! तुम भी उस मूर्खको वैद्य समझते हो । मैं पूछता हूँ, किसी डाक्टरको क्यों नहीं बुलाया ?

मैं क्या करूं ? ये मानें, तब न । कहती हैं—डाक्टर बच्चोंका इलाज करना क्या जानें, मुझे डाक्टरोंकी बातों पर विश्वास नहीं, बगैरह–वगैरह । मैं भी मन मारकर रह गया—इसलिये कि बाप वेचारा माँ का दिल कहांसे लाये ।'

खैर कोई हर्ज नहीं । मैं जाता हूँ । किसी डाक्टरको लिये आता हूँ ।

कक्कू कुछ समय पश्चात् चमेली चौक-अस्पतालके डाक्टर और पिताजीके मित्र पण्डित रामदयालुजी गुरुको ले आये । गुरुजी नगरके प्रसिद्ध चिकित्सक हैं । भगवान्ने उनके हाथमें यश दिया है । उन्होंने अहमदअलीकी परीक्षा करते-करते पिताजीको बहुत-बहुत फटकारा और कहा – "क्या इसी विद्या-बुद्धिके बल पर साहित्य सेवा किया करते हो ? बच्चेकी ये अवस्था हो गई, और तुम्हारे साहित्य-देवताने करवट भी न बदली ! ... अच्छा चलो, अभी वह औषधि दूं कि जिसका नाम । यदि बच्चा सुबह तक बिलकुल चङ्गा न हो जाए, तो मेरा जिम्मा ।"

सचमुच गुरुजीकी औषधिने जादूका कार्य कर दिखाया । अहमदअली प्रातःकाल तक भलीभांति चङ्गे हो गये । बस, लगे टुकुर-टुकुर ताकने और चुरबुर-चुरबुर दूध पीने और उनके मुखड़ेसे विकीर्ण होने वाली प्रफुल्लतासे जैसे घर भर पर आनन्दकी मोहिनी छा गई ।

इस प्रकार बाबाजीका आशीर्वाद पूर्ण हुआ । जब मैं अहमदअलीको खेलते-कूदते देखती हूं, तो बहुधा सोचने लगती हूं—उस दिन अहमदअलीको आशीर्वाद देनेके लिये बाबाजीके रूपमें कौन आया था और कक्कूको अहमदअलीकी हित-प्रेरणा देकर किसने भेजा था ? ...... और जब अपने इन प्रश्नोंके उत्तरमें परमात्माके वरद अस्तित्वकी भी मधुर गुञ्जार सुनती हूं, तब मन ही मन चकित-विस्मित होकर रह जाती हूँ । कदाचित् इसी प्रकारकी किसी अनुभूतिसे प्रेरित होकर भक्तप्रवर तुलसीदासजी कह गये हैं—

'तुलसी या संसारमें,
सबसों मिलिये धाय ।
का जाने केहि वेशमें,
नारायण मिलि जाय ।।'

(६)

पन्दरह अगस्त सन १९४७ ई० के दिन देशका विभाजन हुआ । इसके पश्चात् पंजाबमें

जो साम्प्रदायिक कलहाग्नि प्रज्वलित हुई, दो दिसम्बरके अन्त तक उसकी प्रचण्ड ज्वालायें सागरमें भी आ पहुँची और मुसलमान अपनेको सर्वथा असहाय-असुरक्षित समझकर भोपालकी ओर भागने लगे। पिताजी उनकी इस प्रवृत्तिको अनुचित समझते और अपने इष्ट-मित्रोंसे कहते थे—'बस जमे रहो, कुछ न बिगड़ेगा, भागोगे, सर्वस्व नष्ट हो जाएगा।'

परन्तु जब मनुष्यके दुर्दिन आते हैं, तब उसकी मति भ्रष्ट हो जाती है। उन दिनों मुसलमानोंमें बिलकुल यही बात दिखायी देती थी। पिताजीके हित-वचन सुनकर लोग उनको हिन्दुओंका अनुचर समझते और उनका मखौल उड़ाते थे। शनैः शनैः परिस्थिति इतनी शोचनीय हो गई, कि पिताजीको भी विवश होकर अपना निश्चय त्यागना पड़ा। वे कुछ आवश्यक सामग्री लेकर माताजी तथा छोटे-छोटे भाई-बहिनोंके साथ घरसे बाहर निकले और बड़ी-बड़ी कठिनाइयां झेलते हुए स्टेशन तक पहुँचे।

परन्तु स्टेशन पर घोर अराजकता छाई हुई थी। गुण्डों-बदमाशोंकी बन पड़ी थी। वे तलाशी के बहाने भागने वालोंका तार-तार लूट रहे थे। यह देखते ही पिताजीने सोचा—'कहीं हम भी न लुट जाएं, तो टिकट तक न ले सकें। इसलिए शीघ्रसे शीघ्र टिकट ले लेना चाहिये।' परन्तु दुःख है, कि टिकट लेनेके पश्चात् हम लोगोंके हाथमें कुछ भी न रहा—गाड़ी पर बैठते-बैठते हमारी सम्पूर्ण सामग्री लुट गई।

जब हम लोग किसी प्रकार मरते-जीते बैरागढ़-भोपालके शरणार्थी-शिबिरमें पहुँचे, तो दो दिनके भूखे-प्यासे थे। और तो सब ज्यों-त्यों मन मारे बैठे थे, परन्तु मुबारकअली, नूरजहां और अहमदअलीकी दशा बड़ी ही शोचनीय बड़ी ही दयनीय थी। वे रह-रहकर रोते-कलपते और भूख-भूख चिल्लाते थे। पिताजी एक ओर खड़े थे—हारे-थके, हतबुद्धि, किंकर्तव्यविमूढ़ और आंखोंमें आंसू भरे। जो आता था, धैर्य और शान्तिका उपदेश देकर चला जाता था, यह कोई न कहता था—'लो ये दो-चार पैसे, हमारी ओरसे बच्चोंको चने ही खिला दो।'

सचमुच उस समय अद्भुत अवस्था थी हमारी। ऊपर शून्य आकाश, नीचे शुष्क धरती, इधर-उधर निर्दय जन-समूह और चारों ओर उमड़ता हुआ चिन्ताका काला-काला सागर। साथ-साथ हृदयको खण्ड-खण्ड कर डालने वाले वचनवाणोंके तीखे प्रहार—'कितने बेरहम हैं ये मां-बाप! बच्चे भूखसे तड़प कर मर जाते हैं और इनसे दो रोटियोंका भी इन्तजाम नहीं होता।' बस जी यही चाहता था किसी कुएं-तालाबमें डूब मरें। धीरे-धीरे सन्ध्या हो चली, हम लोगोंको दूर-दूर तक निराशाकी अंधियारी दिखाई देने लगी। पिताजी एक तप्त उच्छ्वास छोड़कर बोले 'हाय! सब यहीं मरेंगे, किसीको कफन भी नसीब न होगा।'

और तभी पिताजीके मित्र, नहीं, एक परिचित सज्जन श्री रज्जबअली साहब देवदूतके समान पधारे और बोले—'सब सुन चुका हूं। और बातें फिर करूंगा। पहले यह बताइये कि बच्चोंको कुछ खिलाने-पिलानेका इन्तजाम हुआ या नहीं?'

'कहांसे हुआ भाई! पास कुछ हो, तब न!' पिताजीके नेत्रोंसे तप्त-तप्त जल-बिन्दु निकलकर भूमिपर गिरने लगे।

घबराइए नहीं! अल्लाह सबकी फिक्र रखता है। यह लीजिये- फिलहाल काम चलाइये। धीरे-धीरे सब हो जायेगा। मैं अभी हाजिर हुआ। यह कहते-कहते वे दस रुपयेका नोट देकर चले

गये और कुछ समय पश्चात् ही आटा, दाल, चावल इत्यादि आवश्यक सामग्री लेकर लौट आये।

इस प्रकार उस दिन श्रीरज्जब अली साहब की सहायता और सहानुभूतिसे हम लोगोंको नवजीवनकी प्राप्ति हुई। यदि उनके हृदयमें परमात्माकी ओरसे प्रेरणा न होती और वे हमारी सुधि न लेते, तो ? इस प्रश्नके उत्तरकी कल्पनामात्र मेरा हृदय कुचल डालती। यही कारण है, जो मैं श्रीरज्जव अली साहबके इस मनुष्यत्वमें परमात्माके अस्तित्वका दर्शन करती हूँ। कौन कह सकता है, कि मेरे इस विश्वासमें किसी प्रकारकी भ्रान्ति है ?

(७)

दो-तीन दिन पश्चात् ही पिताजीने अनेक मित्रों और सम्पादकोंको अपनी इस दारुण दुर्गतिकी सूचना दी। परन्तु दुःख है, कि अनेक मित्रोंने चुपके रहनेमें ही अपनी उदारता और अनेक सम्पादकोंने प्राप्त होने वाला पारिश्रमिक दबा रखनेमें ही अपनी शालीनता समझी। फिर भी, यह संसार देवताओंसे न कभी रिक्त रहा है, न कभी रिक्त रहेगा और इस अवसर पर पिताजीको उनकी वड़ी ही सुखद प्राप्ति हुई। कहनेका अभिप्राय यह है कि पिताजीके अनेक पत्र भलीभांति सफल रहे।

सर्वप्रथम मध्यप्रदेशके प्रमुख प्रकाशक स्वर्गीय पण्डित नर्मदा प्रसादजी मिश्र जबलपुरसे पांच सौ रुपयेकी सहायता तार-द्वारा प्राप्त हुई। उस समय मिश्रजी अस्वस्थ थे। रुग्ण-शय्या पर पड़े हुए थे और यह निधि सम्भवतः उनके सुपुत्र श्रद्धेय भाई बसन्तकुमारजी मिश्रने भेजी थी। सहृदयता की पराकाष्ठाके ऐसे उदाहरण कदाचित् ही कभी दिखाई देते हैं। इसके अतिरिक्त कविवर श्रीगङ्गाप्रसादजी 'प्रेम' प्रिंसिपल इण्टर मीडिएट कालेज, मङ्गलौर-सहारनपुर, श्रीकन्हैयालालजी मिश्र 'प्रभाकर' सम्पादक 'विकास' सहारनपुर, श्रीविश्वनाथजी सम्पादक-'सरिता' न्यू दिल्ली, श्रीदुलारेलालजी भार्गव, संचालक-'गङ्गा-पुस्तक माला लखनऊ और श्रीरामदहिनजी मिश्र, अध्यक्ष 'बाल-शिक्षा-समिति बांकीपुर-पटनासे भी यथेष्ट सहायता मिली थी। इन सबसे 'प्रेम' जीकी सहायता इसलिये विशेष महत्वपूर्ण थी, कि उनसे पिताजीका न कोई परिचय ही था और न पत्र-व्यवहार ही। उन्होंने केवल 'प्रभाकर' जीसे ही पिताजीकी स्थितिका वर्णन सुना था और अपनी कोमलतम उदारवृत्तिका परिचय दिया था।

यह उक्त श्रद्धेय महानुभावोंकी ही कृपाका फल था, जो हम लोग वह महान् विपद-काल काटनेमें समर्थ हुए और सम्मानपूर्वक अपने जीवनकी रक्षा कर सके। जब मुझे शोक-सन्तापसे परिपूर्ण उन घड़ियोंका स्मरण आता है तब मेरे मनमें सहज ही यह प्रश्न उठता है, कि उक्त उदारमना सज्जन दूर थे—बहुत दूर, फिर वे हमारे लिये क्यों इतने चिन्तातुर हुए ? यदि मैं कहूं कि इस 'क्यों' के अन्तर्गत उसी सर्वशक्ति-सम्पन्न परमात्माकी प्रेरणा थी, जो सदैव सर्वत्र सबकी सुधि लेता रहता है, तो सर्वथा उचित है। कोई कुछ भी सोचे-समझे, मेरी तो एक ही आस्था है, कि इन सज्जनोंके माध्यमसे परमात्मा ही हम लोगोंके आहत हृदयों पर प्यारकी कोमलतम थपकियां दे रहा था और उसके अस्तित्व पर विश्वास करनेके लिये मेरी इस आस्थामें पूरा-पूरा बल है।

इस प्रकारकी घटनाएं मानव-जीवनके साथ-साथ चलती और सुकृत्योंके लिये ये प्रेरकका कार्य

करती हैं। परन्तु वर्तमान-कालीन विज्ञान-मूलक शिक्षा-पद्धति मानव मनको नास्तिकताकी ओर धकेलती है, जिससे यह अविश्वास एवं अधर्ममें रुचि रखता और ऐसी घटनाओंके प्रति अपने नेत्र बन्द किये रहता है। यदि ऐसी घटनाओंकी चर्चा चलती भी है, तो नाना प्रकारके तर्कों द्वारा उनका मखौल उड़ाता अथवा 'संयोगकी बात' कहकर उनके महत्वमें हीनता दिखाता है। बस, मानवकी यही प्रकृति परमात्माके प्रति विद्रोहकी और अपने प्रति विविध विपत्तियोंकी सृष्टि करता है।

अभिप्राय यह है कि ऐसी दिव्य घटनाओंमें 'संयोगकी बात' देखना ताजमहलमें झोंपड़ीकी कल्पना करना है। भला झोंपड़ी समझ लेनेसे ताजमहल क्योंकर महत्वहीन हो सकता है ? ताजमहल बनाने वाला तो संसारमें एक-मात्र शाहजहां ही हुआ है। इसी प्रकार 'संयोगकी बात'-जैसी घटनाओंकी अवतारणा करने वाली एक अदृश्य-अव्यक्त दिव्य शक्ति है और उसे ही मैं परमात्माके अस्तित्वकी परिचयदात्री समझती हूं। 'संयोगकी बात' सही, संसारका महान्-से-महान् वैज्ञानिक ऐसी एक छोटीसी घटनाकी अवतारणा कर तो दिखाये। कौतूहलकी बात तो यह है, दुःखग्रस्त होने पर भूले-भटके ही सही, बड़ें-से-बड़े नास्तिकके मुँहसे भी परमात्माका नाम निकल पड़ता है। क्या यह उसके अस्तित्व का सुन्दरतम प्रमाण नहीं है ?

एक संक्षिप्त परिचय

श्रीगायत्री अखण्डदीपक तपोभूमि, उज्जैन

[लेखक :— डा० रुद्रदेव त्रिपाठी]

भारतीय जनजीवनकी अन्तर्धारामें ओतप्रोत उपासना प्रक्रियामें द्विजातिमात्रके लिये अनिवार्य उपास्या भगवती गायत्रीमाताकी आराधना विविध रूपोंमें प्रचलित है। अनेक व्यक्ति अपनी इस अनन्यशरणा माँ की शरणको भूल कर इधर-उधर भटकते भी रहते हैं और यथासमय ईश्वर कृपासे कतिपय ऐसे आदरणीय पुरुष भी अवतरित होते रहते हैं जो अपनी समस्त सांसारिक प्रवृत्तियों को गौण बनाकर अपने वास्तविक कर्तव्य पालन को प्रमुखता देते हैं और अनन्यभावसे माँ गायत्री की उपासनामें द्विजातिमात्रको निरन्तर प्रेरित करते हैं।

रायपुर (मेवाड़) राजस्थानमें गुर्जरगौड़ ब्राह्मण परिवारमें उत्पन्न महान् उपासक, गायत्री भक्त आचार्य पंडित रामचन्द्रजी शास्त्री ऐसे आदरणीय पुरुषोंमेंसे एक हैं। आपने उज्जयिनी में 'श्रीगायत्री अखण्डदीपक तपोभूमि' की स्थापना सं० १९८३ में की है। यह संस्थान आज वस्तुतःअवन्तिकाके अन्यान्य तीर्थस्थानोंके समान ही परम महनीय बन गया है। गत ज्येष्ठ मासमें सिंहस्थपर्वपूर्तिके पश्चात् प्रसंगवशात् हमने (ज्योतिष्मतीके सहसम्पादकने) शास्त्रीजी से साक्षात्कार किया और तपोभूमिकी प्रवृत्तियों के सम्बन्धमें परिचय प्राप्त किया। तदनुसार हमें यह ज्ञात कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आज यहां प्रातःसे रात्रिके १० बजे तक अनेक स्त्री-पुरुष एवं छात्र-छात्राएँ अपनी-अपनी समस्यायोंको लेकर तपोभूमि पर आते हैं तथा शास्त्रीजीकी प्रेरणासे गायत्रीमन्त्र लेखन द्वारा अपने कष्टोंसे छुटकारा पाते हैं। यथासम्भव

शास्त्रीजी स्वयं आगत व्यक्तियोंकी कष्टकथा सुनते हैं। प्रश्नकर्ताके रूपमें आये हुए व्यक्ति भेंटके रूपमें श्रीफल, सुपारी अथवा ऋतुफल आदि जो भी वस्तु लाते हैं उसीको शास्त्रीजी स्थूलदर्शक काँचके द्वारा परखते हैं तथा अपनी प्रतिभा एवं माँ की कृपाके आधार पर प्राश्निक की भावनाओंको यथावत् कह देते हैं।

हमने शास्त्रीजीसे तपोभूमि स्थापना एवं स्वयंके जीवनवृत्तके विषयमें जिज्ञासा की। तदनुसार ज्ञात हुआ कि वे 'ज्योतिष्मती'के सम्पादक ज्योतिषाचार्य पं० हरदेवजी त्रिवेदीके भ्रातृज हैं। आपके पिताका नाम पं० नारायणजी त्रिवेदी था और बाल्यकालमें ही उज्जैनके निकट चीकली ग्राममें पं० गोविन्दरामजीके यहाँ आप दत्तकपुत्रके रूपमें आ गये थे। वैसे आपका अध्ययन अजमेर, भीलवाड़ा तथा उज्जैनमें हुआ है। आपने संस्कृत और उसमें भी ज्योतिष.कर्मकाण्ड एवं पुराणोंका विधिवत् अध्ययन किया है। आपके ज्येष्ठ भ्राता पं० माँगीलालजी अच्छे हरिकथावाचक थे। शास्त्रीजीने उन्हींकी प्रेरणासे गायत्रीमन्त्र लेखन आरम्भ किया था। जब आपका यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ था उसके कुछ समय पश्चात् ही एक संन्यासी महाराजने आपको पंचप्रणव तथा बालामन्त्रयुक्त गायत्रीमन्त्रके जपका उपदेश दिया था। तबसे आपने तीन पुरश्चरण किये और माँ की प्रेरणा हुई कि वे गयत्रीजपका प्रचार करें।

आपको 'अखण्ड-ज्योति' रखनेमें बड़ा आनन्द मिलता था। इस रुचिको आपने १९८१ वि० सं० से ही मूर्त रूप दिया और वह आज ग्यारह दीपोंके अखण्ड ज्वलनमें परिणत दिखाई देती है। श्रीशास्त्रीजीने जब अखण्ड जप आरम्भ किया तब आपके मनमें गायत्री माताकी मूर्ति प्रतिष्ठित करनेकी इच्छा हुई। एक बार रात्रिमें आपको स्वप्न हुआ कि कालिकाजीके मन्दिरके पास नदीके किनारे पर एक गायत्रीकी मूर्ति है उसे ले आओ। दूसरे दिन प्रातः आप उस मूर्तिको ले आये और यथावत् प्रतिष्ठा की। सं० १९९३ की यह घटना है। प्रस्तुत मूर्ति बिना हाथोंकी थी अतः अब आपकी इच्छा हुई की जयपुरसे एक गायत्रीविग्रह लाकर प्रतिष्ठित किया जाय। इन विचारोंके दिनोंमें ही एक दिन सं० १९९४ में स्वतः प्रेरित किसी सन्तने एक विशाल मूर्ति और कुछ दक्षिणा सहित शास्त्रीजीकी अनुपस्थितिमें शास्त्रीजीके घर रख गये। वही मूर्ति आज तक 'तपोभूमि' रूप घरके एक भागमें—मन्दिरमें विराजमान है। अब शास्त्रीजीकी इच्छा है कि कहीं एक विशाल मन्दिर बनवाकर वहाँ इस मूर्तिकी स्थापा की जाय।

हमने शास्त्रीजीसे यह जानना चाहा कि गायत्री-मन्त्रके स्ययं लेखन तथा अन्य भक्तोंके द्वारा लिखवानेमें आपकी क्या दृष्टि है? इस प्रश्नका समाधान देते हुए आपने कहा कि—"मेरे परिवारमें बहुत-से लोग गायत्री-मन्त्र लिखते थे। और मेरे जेष्ठ भ्राता अच्छे लेखक और चित्रकलाके ज्ञाता थे। वे गायत्री-मन्त्रको विविध आकृतियोंमें देवचित्रात्मक रूपमें लिखा करते थे। मैंने भी लेखन आरम्भ किया और मुझे अनुभव हुआ कि कायिक, वाचिक और मानसिक एकाग्रता के लिये 'मन्त्रलेखन' एक अचूक साधन है और आजके इस व्यस्तजीवनमें कुछ समय ईश्वर चिन्तनमें लगानेका यह उत्तम मार्ग है।" अब प्रतिदिन शास्त्रीजी स्वयं प्रातःकृत्यसे निवृत्त होकर ५०० मन्त्र लिखते हैं। तभी भोजन ग्रहण करते हैं। वैसे १००० प्रतिदिन लिखते हैं और स्थानीय भक्तवर्ग भी आपकी प्रेरणासे ५००० के करीब मन्त्र प्रतिदिन लिखकर दे

जाते हैं। इस प्रकार आपके पास १ अरब ११ करोड़से अधिक लिखित गायत्रीमन्त्रोंका संग्रह हो गया है।

आपके यहां जो दुःखी-रोगी आते हैं उनको आप गायत्री माताकी आज्ञानुसार अभिमन्त्रित जल, भस्म, कवच, गण्डे, ताबीज आदि देते हैं और कहते हैं कि सर्वप्रथम एक सौ आठ मन्त्र लिखकर यहाँ प्रार्थनापत्र माँ के चरणोंमें भेजिये, आपकी इच्छाएँ पूर्ण होंगी। हमने अनेक आगन्तुकों द्वारा तथा वहाँ सुरक्षित हजारों प्रमाण-पत्रों द्वारा ज्ञात किया कि प्रायः सभी इससे लाभान्वित होते हैं। आगन्तुकोंमें जो द्विजातिसे इतर होते हैं उन्हें राम नाम लिखनेके लिये कहते हैं और बोहरे मुसलमान आदि भी इस लेखनसे लाभान्वित हुए हैं। प्रेतबाधा निवारणार्थ कई मुसलिम-बोहरे आपकी शरणमें आये और दुःख मुक्त बने। फलतः आज भी वे राम नाम लिखते हैं। शास्त्रीजीने अपने ब्रह्मतेजकी वृद्धिके लिये तथा लोक कल्याणके लिए अनेक यज्ञ किये और करवाये, जिनमें १०८ कुण्डोंका यज्ञ जो उज्जैनमें किया वह अभूतपूर्व था। आपने गायत्री-चालीसा, गायत्री-स्तोत्र, लघुदुर्गा, ईश्वर प्रार्थना आदि छोटी पुस्तकोंका भी प्रकाशन किया है। और भी साहित्य आपने संग्रह कर रखा है, जिसका यथासमय प्रकाशन होगा। चोरीमें गई वस्तुओंको आप यथावत् बतला देते हैं। आपके पास ४० हजार प्रशंसापत्र संगृहीत हैं। अब आप एक गायत्री-मन्दिर, संस्कृत विद्यालय और छात्रावासका स्थायी निर्माण करवाकर स्वयं उसमें ५-७ हजार लगाना चाहते हैं तथा अन्य राशि भक्तोंसे संगृहीत होगी।

हम ऐसे आदरणीय शास्त्रीजीके दीर्घ जीवन की माँ गायत्रीसे करबद्ध प्रार्थना करते हैं और चाहते हैं कि समस्त गायत्री प्रेमी आपके इस पुण्य कार्यमें सहयोगी बने और अपने कष्टोंसे मुक्ति पानेके लियें शास्त्रीजीसे परामर्श प्राप्त करें। पता इस प्रकार है—

आचार्य पं० रामचन्द्रजी शास्त्री
श्रीगायत्री अखण्डदीपक तपोभूमि
उर्दूपुरा, उज्जैन, (म०प्र०)

संस्था एव व्यक्ति—परिचय

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय, वाराणसीका प्रशंसनीय कार्य

यूँ तो भारतका प्रत्येक नागरिक संस्कृत भाषाके उन्नयन और सार्वत्रिक प्रचारकी अभि-रुचि रखता है और अनेक संस्कृत-सेवक तथा संस्कृतसेवी संस्थाएं अपनी-अपनी सीमा और साधनोंके अनुरूप प्रचार-प्रसारमें तत्पर दिखाई देती हैं। किन्तु उपर्युक्त संस्था और इसके संचालक पंडितप्रवर श्रीवासुदेवजी शास्त्रीकी लगन एवं कार्यप्रणाली एक अनूठी प्रक्रियाको अपनाये हुए हैं। आज भारतके प्रत्येक प्रान्तमें इस दिशामें होने वाले कार्योंमें यह प्रणाली सर्वोपरि मानी जाती है।

इस संस्थाके संस्थापक और सञ्चालक शास्त्रीजीने संस्कृत-प्रचारके लिये कई प्रकारके प्रकाशन किये हैं। संस्कृत सीखने-सिखानेकी सहायक पुस्तकें, अभिनव गीत एवं हास्य-विनोद की पुस्तकें, स्तुति-प्रार्थना, सुभाषित एवं नीति धर्म सम्बन्धी पुस्तकें, संस्कृत प्रचारके लिये प्रेरक तथा पथप्रदर्शक पुस्तकें, संस्कृतशिक्षाके सम्बन्धमें महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी पुस्तकें और प्रायः १६ पोस्टर (भित्तिपत्रक) इस प्रणालीसे सम्पादित, सङ्कलित और रचित हैं कि प्रत्येक संस्कृत जिज्ञासु के लिये अत्यन्त सरल किन्तु सारपूर्ण ढंगसे

संगृहीत हैं, कि इसका दूसरा उदाहरण मिलना असम्भव है ।

इस तरहके प्रचार-प्रसारसे लाभ उठाने वाले यद्यपि लोग कम हैं, फिर भी हम देखते हैं कि जिसने इनका अवलोकन किया उसने अवश्य ही उसका आदर किया अपनाया । गत कुछ समय पूर्व शास्त्रीजीने वाराणसीमें ही एक सम्मेलनका आयोजन किया था, जिसमें विभिन्न आयोजनोंमें संस्थाकी प्रकाशित सामग्री और भावी रूपरेखाओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला था ।

इन दिनों शास्त्रीजीने संस्कृत प्रचार-प्रसारके निमित्त देशव्यापी आयोजन तथा उसकी रूप-रेखाको दृष्टिमें रखते हुए 'संस्कृत प्रचारप्रदर्शनी' के लिये एक चौदह सूत्री कार्यक्रम बनाया है । उसके परिपत्रका अवलोकन करते हुए लगता है कि यह योजना अवश्य ही सर्वसम्मान्य बनेगी ।

इसके लिये संस्कृत-संसार सदा सदाके लिये ऋणी तो रहेगा ही । साथ ही हम संस्कृतज्ञ और संस्कृतानुरागी समाजसे आशा करते हैं कि वे अधिकाधिक रूपमें "सार्वभौम संस्कृत-प्रचार कार्यालय, डी०३८।२० हौज कटोरा, वाराणसी" से प्रकाशित साहित्यको खरीदें और यथाशक्ति शास्त्रीजीके संस्कृत प्रचारमूलक शुभसङ्कल्पको सफल बनानेमें सहयोग दें ।

राजगद्दी

[लेखक : श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त, खोरी जिला गुड़गावां]

सच्ची घटना

(१)

"कब तलक सोते रहोगे मियां मुट्टन !" कहते हुये नम्बरदारने पीछेसे मुट्टनके कन्धे पर हाथ रक्खा ।

मुट्टनने पीछे फिर कर देखा, गांवका नम्बर-दार है । अजी नम्बरदार साहब ! मुआफ कीजिये, कहते हुये मुट्टन बोला आपकी यह पहेली मेरी समझमें नहीं आई, मैं कैसे सो रहा हूँ ?" नम्बरदारने कहा, तुम्हें पता ही नहीं कि कहां क्या हो रहा है ? अगर तुम इसी प्रकार सोते रहे तो कुछ अर्सेमें इस चौकीदारीसे भी हाथ धो बैठोगे । "हैं ! मेरी चोकीदारी छिन जायेगी ?" कहकर मुट्टन नम्बरदारको आश्चर्यपूर्ण निगाहसे देखने लगा ।

"क्यों नहीं छिन जायेगी । क्या तुम हमेशाके लिए खुदाके यहां से पट्टा लिखवा कर लाये हो" नम्बरदारने कहा ।

मुट्टन बोला – नौकरी छिन जानेमें तो तौहीन होगी । अगर आपको यही बात दिखलाई देती है, तो मैं पहिले ही क्यों न त्यागपत्र दे दूं । कौनसी बड़ी नौकरी है । चौकीदारी ही तो है । नम्बरदार लोबा – "वाह ! मियाँ मुट्टन ! इतनी सी बात पर घबराकर नौकरी छोड़नेको तैयार हो गये । हिम्मत न हारो भाई ! हौसलेसे काम लो ।

"आप ही समझाइये क्या मुआमला है ? —— और मुझे क्या करना चाहिए ।" "भाई यह तो तुम जानते ही हो कि हमारी रियासतके नबाब साहबका देहान्त हो चुका है । "हाँ यह तो मैं क्या सभी, जानते हैं ।" मुट्टनने कहा, और यह भी तुम्हें पता होगा - उनके कोई सन्तान नहीं है ।"

"हां ! यह मुझे मालूम हैं । नवाब साहब मरहूम, खुदा उन्हें जन्नत बख्शे । मुझ पर बहुत प्रेम रखते थे । और सभी बातों पर विश्वास करते थे ।"

नम्बरदार बोला—इसी प्रेम और विश्वासके कारण ही तुम निरे चौकीदार ही नहीं, मुखत्यार भी माने जाते हो।

"खैर ! नम्बरदार साहब ! खुदाके फज़लसे आपका कहना दुरुस्त हैं । मगर उनकी जगह कोई तो नबाव बनेगा ही । हमें तो नौकरी करनी है। नम्बरदारने जोरसे कहा जब उनके कोई सन्तान ही नहीं हैं तो नवाब कौन बनेगा ?

मुट्टन बोला—"कोई भी नहीं बनेगा । तो अंग्रेज इस रियासतको भी बृटिश इलाकेमें मिला लेंगे। अंग्रेजी अमलदारी हो जायेगी।"

नजीरअली, जो इनकी बातें बैठा हुआ सुन रहा था।

एक दम उछल पड़ा, और तमक कर बोला। क्यों हो जावेगी, अंग्रेजी असलदारी ? क्या तुम मर गये हो ? मुट्टन नजीरअलीका मुँह देखता रह गया और बूढ़ा नजीरअली कहता चला गया। ———

"मियां मुट्टन होश करो। गद्दीके लिए कई हकदार खड़े हो गये हैं। और वे अपने-अपने हक के लिए कमिश्नरीमें दावा भी दायर कर चुके है। मुट्टनने कहा। जिनका हक है, वे तो करेंगे ही, इससे मेरे होश और बेहोश होनेकी क्या बात है ?

"तुम भी रहे निरे मुट्टन ही, इतना समझाने पर भी नहीं समझे। नम्बरदार नजीरअली तमक कर कहने लगा : —

मियां जैसें दूसरे हकदार हैं, वैसे ही हकदार तुम भी हो। तुम भी अपने हकका दावा दायर कर दो।

"नवाबीके लिये दावा कर दूँ ? क्या कह रहें हैं आप ?"

"ठीक कह रहा हूं' घबराते क्यों हो ?"

मट्टनने कहा—मुझे दावा वावा कुछ करना नहीं आता, आप ही यह काम करवाओ।

दूसरे दिन बुढ्ढा नजीरअली और नम्वरदार मुट्टनके साथ देहली गये। और कमिश्नरीमें दावा दायर कर दिया।

(२)

गुड़गावां जिलेमें "पाटोदी" नामक एक छोटी सी रियासत है। स्वतंत्रतासे पहले इसमें ४५ गाँव थे। अंग्रेजोंको मराठोंके युद्धमें यहांके जागीरदार फैज तलबखाँने सहायता दी थी। फलस्वरूप अंग्रेज सरकारने उनको नबावीका हक दिया था।

सन् १८६८ ई० में उनके वंशज मुहम्मद तकी खाँ को अंग्रेजोंने पाटोदीका नवाब घोषित कर दिया। नबाब तकीके बाद उनके पुत्र मुमताज हूसैन खाँ गद्दी पर बैठे। परन्तु मुमताज हुसैन लावारिस फौत हो गये। मुट्टन खाँ नामी एक व्यक्ति रूध ग्राममें चौकीदारीका काम करता था। वह कुछ पढ़ा लिखा नहीं था। मामूली वेतन मिलता था। परन्तु नबाब साहबका विश्वास-पात्र था, रियासतके किसी भी ग्राममें झगड़ा होता, तो उसे निपटानेके लिए मुट्टन खाँ ही जाता था। मुट्टन गाँवकी चौपाल या सार्व-जनिक स्थान पर जाकर लोगोंको बुलाता। गाँव वाले उनके बैठनेके लिए खाट (चारपाई) डाल देते, मुट्टन उस पर बैठ जाता। और बड़े-बड़े कठिन मामलोंको बातकी बातमें निपटा देता था, न किसी वकीलकी ज़रूत होती थी, नमिसल बनानेकी। यही रियासतका हाईकोर्ट था।

जब किसी गाँवकी मालगुजारी बसूल नहीं होती थी, तो वहाँ मुट्टनखाँ जाता और लोगों को समझा बुझाकर मामला लाकर रियासतके खजानेमें जमा करा देता था।

मुमताज हुसैनके मरने पर गद्दीके लिए झगड़ा छिड़ा। दिल्लीमें मुकदमा था। शमशाद अली और वसीयत अलीके दावे दायर हो चुके थे। तीसरा दावा मुट्टन खाँ का भी हो गया।

अदालतमें कई पेशियाँ लगीं। कमिश्नर साहब (कागजी सबूत) लेते, वकील जिरह करते और आगे तारीख लग जाती। कई पेशियोंके बाद वसीयत अली खाँ का नाम खारिज कर दिया गया। रह गये मियाँ मुट्टन और शमशाद अली खां। शमशाद अंग्रेजी उर्दू तालीम याफता थे। और मुट्टन अनपढ़, दोनोंमें यह भी फर्क था।

(३)

आज दिल्लीके चाँदनीचौकमें बड़ी भीड़ है। हुजूम पर हुजूम उमड़ा पड़ता है। छोटे बड़े बाल जवान जरठ नरनारी छत्तों और वृक्षों पर बैठे जलूसका तमाशा देख रहे हैं। बाजारमें बड़ी भीड़ है। पुलिसका काफी इन्तजाम होने पर भी खव्वेसे खव्वा छिलता है। आज मियाँ मुट्टन भी पेशी भुगतानेके लिये देहली आये हैं। मगर भीड़में रास्ता ही नहीं मिलता है। एक चबूतरे पर खड़े हो गये, लोगोंसे पूछा आज इतनी भीड़ क्यों है? किसीने बताया—आज भगवान् श्रीरामचन्द्रजी बनवाससे वापिस आये हैं। देखते नहीं हो, रथमें ऊँचे सिंहासन पर बीचमें रामचन्द्र जी और उनके बाईं ओर सीताजी तथा दांई ओर छोटे भाई लक्ष्मण बैठे हैं और यह दूसरे जो दिखाई देते हैं, कौन है?" मुट्टनने पूछा "हनुमान सुग्रीव विभीषण आदि रामके सेवक हैं।" एक व्यक्तिने बताया।

"यह अब कहाँ जायेंगे?" जायेंगे कहाँ अपने घर जा रहे हैं। वहां भरतजीसे मिलेंगे, फिर आज रामचन्द्रजी राजगद्दी पर बैठेंगे।"

'श्रीरामजीको तो लोग हिन्दुओंका खुदा बताया करते हैं—मुट्टनने कहा।

"बतानेका क्या अर्थ? खुदा है, दूसरा व्यक्ति बोल उठा।

जब तक जलूस चबूतरेके और पास आ पहुँचा था। मुट्टन किसी विचारमें तल्लीन हो गया। मुट्टनने शीघ्र ही, भीड़में ही नीचे झुककर भगवान् रामको प्रणाम किया।" हे राम! यदि मुझे आपकी कृपासे राजगद्दी मिल जाये तो मैं अपने यहाँ सदैव रामलीला कराया करूंगा" पास वाले इस बात पर उसे पागल समझकर हँसने लगे।

(४)

"नवाव शमशाद अलीखां" चोवदारने जोरसे आवाज लगाई। दूसरी आवाज पर एक नौजवान, चुस्त पजामा, अचकन पहिने, सरपर अमामा बांधे अदालतके कमरेमें घुसा, चपड़ासीने फिर पुकारा—नवाव मुट्टन खां! मुट्टन खां अन्दर जाने लगा, चपड़ासीने रोक दिया क्योंकि मुट्टन खाँ धोती बाँधे मामूली कुरता पहिने कन्धे पर एक खादीकी चादर डाले हुये थे।

चपड़ासीने फिर पुकारा "नवाव मुट्टन खां!!!"

मुट्टनने कहा मेरा ही नाम मुट्टन खाँ है। मुट्टन खांने अन्दर जाकर कमिश्नर साहबको आदाब अर्ज किया। कमिश्नर साहबने आखिरी फैसला सुना दिया - रियासत पाटोदीके हकदार मुट्टन खां ही साबित होते हैं। मैं मुट्टन खां को पाटोदीका नवाब तजवीज साबित करता हूं, जाओ नवाबीका कार्य सम्भालो। मुट्टनने अदालत में ही खड़े-खड़े भगवान् रामको नमस्कार करते हुये शुक्रिया अदा किया। लोग समझे अदालतका शुक्र माना है।

जशनके समय नवाब साहबने नम्बरदारसे कहा चोकीदारीका पट्टा मैंने खुदासे नहीं

लिखवाया था, परन्तु नवाबीका पट्टा खुदा (रामजी) से लिखवा लाया हूँ।

(५)

मुट्टनखाँ ही मुजफ्फ़रअली खां के नामसे पाटोदी के नवाब हुये। नवाब साहब जब तक जीते रहे नियमित रूपसे पाटोदीमें रामलीला करवाते रहे। वे रामलीला खुद देखते और गरीबोंको पसे बांटते थे। उनके बाद अब्राहीम उनके पुत्र गद्दी पर बैठे और उसी प्रकार रामलीला करवाया करते थे, उनके पुत्र इफ्तखार अली खां उसी प्रकार रामलीला करवाते रहे।

स्वतन्त्रता होने पर कांग्रेस सरकारने उन्हें ४०००) मासिक मुआवजा देकर रियासतको भारतीय संघमें मिला लिया है। तथा तहसील रेवाड़ीके ४५ गांव और मिलाकर ९० गावोंकी एक सब तहसील बना दी। अब नवाब इफ्तखार अली खांके पुत्र नवाब मनशूर अली खां हैं— जो क्रिकेटके चैम्पियन हैं। अब भी पाटोदीमें प्रति वर्ष उसी प्रकार रामलीला होती है। और रामलीलाका विशाल मैदान "सियावर रामचन्द्र की जयसे" गूंजने लगता है।

अनुभूत प्रयोग

[लेखक :—वैद्यवाचस्पतिः देवीदत्त शर्मा वैद्यविभूषण आयुर्वेदाचार्य साहित्यशास्त्री]

[इस लेखके विद्वान् लेखक कोठियां (मेवाड़)में राजकीय चिकित्सालयके प्रधान वैद्य हैं। आयुर्वेदके क्षेत्रमें इन्होंने अच्छा अनुभव प्राप्त किया है। अभी ये नवयुवक ही हैं और एक पीयूषपाणि सद्-वैद्यके सभी लक्षण इनमें विद्यमान् हैं। आयुर्वेद इनकी पैतृक सम्पत्ति है। ये संस्कृतके सुकवि और माँ के उपासक भी हैं। इनके अनेक पद्य स्तोत्ररूपमें लिखे हुए हैं। इस बार अजमेर और ब्यावर प्रवासमें गतमासमें ये हमसे मिलने आये और अपनी कुछ रचना सुनाई। इसी अङ्कमें आगे भगवतीकी एक सरल संस्कृत पद्यमयी स्तुति इनकी रची हुई हम प्रकाशित कर रहे हैं। हम चाहते हैं ऐसे प्रतिभाशाली सदाचारी विद्वान् नवयुवक प्रकाशमें आवें और उनके द्वारा कुछ समाज सेवा हो सके।

—सम्पादक]

लू लगना (अंशुघात)

(१) चनेकी पानसी १ तोला।
(२) पीली मिट्टी (मुलतानी मिट्टी) १ तोला।
(३) इमली १ तोला।
(४) प्याज १ तोला।

इन सब चीजोंको कांसीकी थालीमें पानी डालकर भिगो दिया जावे। तत्पश्चात् रोगीको चित्त लिटाकर इस थालीको शरीरसे रगड़ता हुआ ललाटसे पैरके अंगूठे तक सात बार छुआता हुआ ले जाया जाय। यदि लू का असर है तो थाली सीने पर कुछ अटकती सी मालूम होगी। इसके बाद थालीमेंसे कुछ पानी लेकर आँखों कनपटी सीना हाथकी हथेली तथा पैरके तलुओंमें लगाया जावे। इस प्रकार दो तीन बार करनेसे तुरन्त लू का असर चला जाता है।

आधा शीशी (अर्धावभेदक

कुचलेकी टिकियाको चंदनकी भाँति घिसकर जिधर दर्द हो उधर लेप कर दें। इसके लगाते ही दर्द तुरन्त जाता रहेगा। शिरमें बहुत ठण्डक मालूम होगी। रोगी रोता हुआ आयेगा। और हँसता हुआ जावेगा।

रोगीको यह मालूम न हो कि कुचला घिस कर लगाया गया। शिर धोते समय आँखोंको बन्द करके फिर धोया जावे। ताकि आँखोंमें पानी न जावेगा।

कष्टी (कष्ट) प्रसवा

यदि आसन्न-प्रसवा स्त्री कष्टसे पीड़ित हो और प्रसव नहीं हो रहा हो तो भैंसका ताजा गोबर लेकर मोटे कपड़ेमें रखकर पानी निचोड़ लेवे। उसमेंसे दो तोला रखकर कष्टी स्त्रीको पिला देवे। पीड़ा दूर होकर तुरन्त बच्चा हो जावेगा।

उदरशूल (पेटका दर्द)

आकड़े (आक) की जड़की छाल ३ माशा, साँभर नमक ३ माशा, सौंठ ३ माशा, हींग चनेके बराबर (हींगको रुईमें रखकर फूला ली जावे) इन सब औषधियोंका चूर्ण बनाकर रोगीको निवाये जलके साथ फक्की लगवायें। तुरन्त वेदना शमन होगी।

नेहरू (बाले) निकलना

मोर पंखके सफेद भागको चाँवलके बराबर कतरकर तीन टुकड़े कर गुड़में मिलाकर निगलवा देवें, तीन दिन तक रोग शान्त होगा।

सर्प दंशपर

मयूर पिच्छाको चिलममें रखकर बजाय तम्बाखूके रोगीको पिला दिया जावे। जो भस्म (मयूर पिच्छाकी) चिलममें बने वह सर्प दंशपर लगा दीं जावे।

वृश्चिकविष (बिच्छूका डंक)

सुपारीको बारीक कूटकर तम्बाखू की तरह पिला दी जावे।

अतिसार संग्रहणी

खानेका चूना ३ तोला अफीम ६ तोला। आधी अफीम ३ तोलाको सेक ली जावे, आधीको बिना सिकी हुई रखे, अदरखके रसमें भिगोकर चणक प्रमाण अर्थात् सबको मिलाकर चनेके बराबर गोली वना ली जावे। १ गोली ठंडे पानीके साथ दी जावे। पथ्यमें तक्र (मठा या छाछ) पिलावें।

रक्तस्रावकी रामबाण दवा

रोगीको चाहे वह रक्ताश, रक्तातिसार, रक्तप्रवाहसे क्यों न पीड़ित हो। उसे ढाल पर बिठाकर प्रति दिन दो घंटे ईश्वरोपासना करवायी जावे। यदि ढाल (गेंडेकी खाल) उपलब्ध न हो तो गेंडेकी खालका कड़ा हाथमें पहना दिया जावे। जैसे कि दशनामी साधु या सिक्ख पहना करते हैं। अथवा कहरवेकी बनी हुई माला फेरनेको दी जावे। चाहे कैसा ही रक्त प्रवाह क्यों न हो वह प्रभु कृपासे सदाके लिये बन्द हो जावे। 'तमः सूर्योदये यथा।'

तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम्

[रचयिता – वैद्यवाचस्पति देवीदत्त शर्मा कविकलानिधि]

मधुकैटभ शुम्भ निशुम्भ हरे !
महिषासुर मर्दिनि ! विश्वधरे !
प्रणतार्तिशमे ! मम वेदनया ।
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ १ ॥

जय देवि ! शिवे ! यमपाशहरे !
शरणागत रोग विनाशकरे !
जय सर्वगते ! सुखदे ! धनदे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ २ ॥

जय व्याधि-विनाशन सौख्यप्रदे !
चतुरानन चर्चित सिद्धिप्रदे !
जय गौरि ! शिवे ! गिरिराजसुते !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ ३ ॥

जय पूजित पादयुगे जननि !
जय मित्रकलत्र वियोग हरे !
जय चण्डकमुण्डक नाशकरे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ ४ ॥

परमे ! परमेश्वरि ! पाहि जनन्
भवसागर पार करे गिरिजे !
पुरुषोत्तम पूजित पादयुगे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ ५ ॥

जयसर्वगते ! जय देवि ! शिवे !
महिषासुर नाश करे ! जननि !
वरदे जयदे सुख शान्ति प्रदे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ ६ ॥

जय शत्रुविनाशिनि ! रोगहरे !
परमे ! सुखदे ! शुभशान्तिप्रदे !
जय दर्पविनाशिनि मोक्षप्रदे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ ७ ॥

भवरोगविनाशिनि ! भीतिहरे !
जय दारुणदुःख समूह हरे !
अयि मामवलोकय दीनजनम्
तवनौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ ८ ॥

जय पुष्कर तीर्थ निवास करे !
जय दुष्कर कार्य कलाप करे !
भवभामिनि ! भाग्यविधान हरे !
तव नौमि महेश्वरि ! पाद युगम् ॥ ९ ॥

जय जाड्य हरे ! सुखसार करे ।
जय दुःख विनाशिनि ! चारुतरे !
मद मान विनाशन मोह हरे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ १० ॥

जय शाम्भवि ! देवि ! शिवे ! वरदे !
जय सूर्यसुधाकर नेत्र धरे !
जय पुत्र-कलत्र समृद्धि करे
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ ११ ॥

जय गौरि ! पितामह शक्रनुते !
जय सायक भूषितहस्तवरे !
जय लोकसमस्तक ताप हरे !
तव नौमि महेश्वरि पादयुगम् ॥ १२ ॥

जय नाकनिदर्शिनि ! दुःखहरे !
जय सागरगामिनि ! विष्णुनुते !
जय भोगप्रदायिनि सौख्यकरे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ १३ ॥

जय पुत्र प्रदायिनि दुःखहरे !
जय दम्पतिदुःखहरे ! जननि !
जय रोगविनाशिनि मौर्ख्यहरे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ॥ १४ ॥

जय अन्धक दैत्य विनाशकरे !
जय माहिषमर्दिनि ! शूल धरे !
जय वाञ्छितदायिनि ! सिद्धि करे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ।। १५ ।।

जय देवि ! शिवे ! जगदीश प्रिये !
त्रय ताप विनाश-निरामयदे !
जय पावक भूषित वक्त्र धरे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ।। १६ ।।

पुरुषोत्तम पूर्वज पुण्य प्रदे !
नवनीत प्रिये ! बहुमान प्रदे !
जय भास्कर तस्कर शीर्ष नुते ।
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ।। १७ ।।

जय षण्मुख सायुध ईशनुते !
नहि यावदहं व्यपजीव युतः ।
भुजगादि भयादधुनाह्यवमाम्
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ।। १८ ।।

जय देवि शिवे ! त्रयतापहरे !
जय विद्युत् वारिणि कालहरे !
जय वज्रप्रपात निपातकरे !
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ।। १९ ।।

गृहणीपति पूजितपादयुगे !
प्रणताय सदा गुरु दात्रि ! विभो
जय देवि शिवे ! भव तापहरे
तव नौमि महेश्वरि ! पादयुगम् ।। २० ।।

वाचस्पति कृतं स्तोत्रं
यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।
वने विशुद्ध भावेन
प्रीयात् परमेश्वरी सदा ।। २१ ।।

अनुभव सिद्ध यन्त्र-मन्त्र प्रयोग

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

'ज्योतिष्मती'के इस स्तम्भमें हम भारतके सुप्रसिद्ध तन्त्र-मन्त्र-मर्मज्ञ महापुरुषोंके अनुभव सिद्ध मन्त्र यन्त्र प्राप्त करके पाठकोंके लाभार्थ प्रकाशित कर रहे हैं । यहाँ युवा कन्याओंको योग्यवर प्राप्तिका यन्त्र और पुत्र प्राप्तिका अनुभूत मन्त्र प्रकाशित कर रहे हैं। अनेक परिवारोंमें कन्यायें विवाह योग्य युवा हो जाती हैं, पर उन्हें योग्य वर नहीं मिलता । अतः माता पिता उनके लिए अत्यन्त चिन्ताग्रस्त रहते हैं। उन कन्याओंके लिए यहाँ एक अनुभव सिद्ध यन्त्र-प्रयोग दिया जा रहा है।

वर प्राप्तिका यन्त्र

विवाह योग्य कन्याओंको चाहिये कि वे नीचे लिखा यन्त्र सफेद कागज पर लाल स्याहीसे ७२ बार लिखकर गन्धाक्षतसे पूजन करें। ७२ दिन तक इस प्रयोगके करने पर योग्य वर प्राप्त होकर विवाह हो जावेगा । कन्याको चन्द्रबल देखकर शुक्ल पक्ष शुभ मुहूर्तमें यंत्र लिखना आरम्भ करना लाहिए । सफेद पूरे लम्बे कागज या कापीमें यन्त्र लिखने चाहिए। यन्त्र लिखते समय अपने इष्ट देवता या भगवती गौरीका ध्यान करना आवश्यक है । यन्त्र यह है :—

वर प्राप्त्यर्थ द्वासप्तत्यङ्क यन्त्रम् ।

७	३१	३४	क्लीं
३३	१	६	३२
२	३६	२९	
३०	४	३	३५

जो कन्याएँ रजस्वला होती हों वे ५ दिन बीचमें यन्त्र लिखना बन्द रखें।

पुत्र प्राप्तिका अनुभूत प्रयोग

यद्यपि इस समय चारों ओर परिवार नियोजनका उद्घोष सुनाई दे रहा है, तथापि कई दम्पति पुत्र प्राप्तिके लिए तरसते हैं। अनेक प्रयत्न करने पर भी उनको पुत्र प्राप्ति नहीं होती। ऐसे निराश दम्पतियोंके लिए श्री बालमीकि रामायणका एक सिद्ध प्रयोग प्रकाशित किया जा रहा है। बालमीकि रामायण और रामचरित मानसके सुन्दरकाण्डका पाठ ही सब प्रकारकी मनःकामना पूर्ण करने वाला है। इससे लाखों श्रद्धालु सज्जन लाभ उठाते हैं।

पुत्र प्राप्तिके लिए दम्पतीको चन्द्र बल देख कर शुक्ल पक्ष सुमुहूर्तमें निम्नलिखित प्रयोग आरम्भ करें। प्रथम गणेश पूजन करके भगवान् श्री सीता-रामकी प्रतिमा वा चित्रका षोडषोपचार पूजन करके श्री हनुमान्‌जी और पुस्तक (बालमीकि- रामायण) की पंचोपचार पूजा करें।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय,
देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो,
नमोस्तु चन्द्रार्क मरुद्गणेभ्यः॥

इस मन्त्रसे प्रणाम कर सुन्दरकाण्डमें लिखे अनुसार अङ्गन्यास करके 'सीतामुदार चरितां०" मन्त्रसे भगवती सीताका ध्यान और किसी भी मन्त्रसे भगवान् श्रीरामका ध्यान करके प्रातः सूर्योदयसे ५ घटी या २ घण्टे उपरान्त सुन्दरकाण्ड का पाठ आरम्भ करें। प्रत्येक मन्त्रको "सीतायै नमः" इस पंचाक्षर मन्त्रसे सम्पुटित करें। ३१ दिन तक यह प्रयोग करें। और अन्तमें १००० कमलगट्टोंसे गोघृतकी आहुति द्वादशाक्षर मन्त्रसे देवें। यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कन्या पूजन करें तो इस प्रयोगसे अवश्य पुत्र प्राप्ति होगी। श्री भंवरलाल शर्मा जोशी (रींगस राजस्थान) ने १५ निःसन्तान दम्पतियोंको इस प्रयोगके द्वारा सफल मनोरथ किया है। सबीज सन्तान गोपाल मन्त्रसे सम्पुटित सुन्दर काण्डके पाठसे भी पुत्र प्राप्ति होती है। वह प्रयोग आगामी अङ्कोंमें प्रकाशित करेंगे।

सर्वकामना पूरक श्रीगणेश मालामन्त्र

[लेखक :—श्रीकालीचरण शर्मा ज्योतिषी, सनावद, मध्यप्रदेश]

'श्रीविश्वविजय-पंचाङ्ग' और 'ज्योतिष्मती' में अनुभवसिद्ध यंत्र-मंत्र-तंत्र प्रकाशित होते रहते हैं, इनसे दुःखी जनोंके लिए कल्पवृक्षके समान उपकार हो रहा है, इसी सद्‌भावनाके साथ इस वर्ष श्रीगणेशजीका चमत्कारी मंत्र सेवामें समर्पित किया जा रहा है।

सिद्धि, साधककी श्रद्धा भक्ति और योग्यता पर ही निर्भर है। शास्त्र कहता है—

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः॥

तथा च दूसरी बात यह भी स्मरणीय है कि केवल पुस्तकमें छपे हुए मंत्र यंत्रको पढ़कर ही मंत्र-यंत्रकी साधना करनेसे कुछ भी पल्ले न पड़कर कुछ न कुछ हानि ही उठानी पड़ती है, यथा—

बलेन तस्करेण कपटानुनयनेन वा।
न गृह्णीयान्नगृह्णीयान्नगृह्णीयात्कदाचन॥
दुष्टबीयस्तु गृह्णीयाद् गुरुहस्ताच्च पुस्तकात्।
तं दहत्याशु सा लक्ष्मीरनुगान्वय संयुतम्॥

इति बल्लभाम्बा कलौ कथितम् । अर्थ सरल और स्पष्ट है । इस "गणेश माला मंत्र" जप करनेके इच्छुक शुभ समय पर किसी भी सदाचारी ब्राह्मणको सामर्थ्यानुसार भेंट देकर मंत्र ग्रहण करें, पश्चात् जप करें ।

आचम्य प्राणानायम्य 'अपवित्र पवित्रो वा० इतिमंत्रेण जल मार्जनं कृत्वा प्रथमं मानसिकपूजनं ततः बाह्यपूजनं ततो मालामंत्र जपः ।

अस्य श्रीमहागणपति माला मंत्रस्य भैरव ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीमहागणपति देवता गं बीजं स्वाहा शक्तिः फट्कीलकं श्रीमहागणपति प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

अथ न्यासः ॐ गां हृदयाय नमः । ॐ गीं शिरसे स्वाहा । ॐ गूं शिखायै वषट् ॐ गं कवचाय हुँ ॐ गौं नेत्र त्रयाय वौषट्, ॐ गः अस्त्राय फट् । लोकत्रयेण (भूर्भुवः स्वः) दिग्बन्धः एवमाद्यं करन्यासं कृत्वा ध्यानं कुर्यात् ।

बालार्क कोटि द्युतिमप्रमेयं
बालेन्दु रेखा कलितोत्तमाङ्गम् ।
भ्रमद् द्विरेफावृत गंडभालं
भजामि माला तनयं गणेशम् ।।
इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ।

ॐ नमो भगवते ग्लौं महागणपतये सिन्दुर रचिताय तुण्ड्रेक्षुगदाशूल परशु पाशाङ्कुशधराय ॐ क्षीं ह्रीं क्लीं सर्वसंक्षोभणाय सर्वलक्ष्मीप्रदाय, सकललोकवशीकराय क्रों क्रों क्रों आं आं आं क्लीं क्लीं क्लीं पाशाङ्कुशाभ्यां सकल राजमण्डल मम वशमानय वशमानय क्षीं क्षीं क्षीं सकल विघ्न निवारणं कुरु कुरु ह्रं ह्रं ह्रं ह्रां ह्रीं ह्रू क्षः सकल भूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस यक्षिणी मोहिनी शूलिनी चतुःषष्ठि योगिन्यादि सकल वेताल ग्रह शाकिनी डाकिनी विध्वंसनं कुरु कुरु प्रों प्रों प्रों सकल चौर भयं निवारय निवारय ठं ठं ठं सकल शत्रु मंडलं स्तंभय स्तंभय ग्लौं ग्लौं ग्लौं सकल विघ्नान् विध्वंसय सौः श्रीं मम मनोरथ साधय साधय ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महागणपतये हूँ फट् स्वाहा ।। २१०० जपः पुरश्चरणम् ।

विधि आसन रक्त वर्ण, माला रक्त चंदन की हो, गणपति पूजनमें रक्त चंदन, रक्त अक्षत हों, रक्त पुष्प, रक्तपुष्पमाला, दूर्वाङ्कुर २१ हों । नैवेद्यप्रमाणमें ऽ।- एक दो या पांच मोदक हों । पूजनमें जलका प्रयोग कूपोदकसे ही हों । नवेद्य भी कूपोदकसे ही बने । रक्तवस्त्र धारण करें । पश्चात् सामर्थ्यानुसार पंचोपचार दशोपचार या षोडशोपचारोंसे पूजन करके जप करें । २१०० जप करने पर मंत्रमें जागृति आती है, परन्तु "कलौ चतुर्गुणं प्रोक्तम्" नियमानुसार ८४०० जप होकर दशांश हवन, तद्दशांश तर्पण, तद्दशांश मार्जन, समाप्तिमें २१ ब्राह्मणोंको भोजन कराना आवश्यक है । श्रद्धासे करिये, आपकी कामना पूर्ण होगी । हमने स्वयं अनुभव किया १ – २ को बतलाया सत्य पाया । आप भी करें और दुखियों को उसके दुःख दूर होनेका मार्ग प्रदर्शित करें । अपना अनुभव 'ज्योतिष्मती' में प्रकट करें जिससे सर्वसाधारणकी श्रद्धामें वृद्धि हों ।

हाजिर और वायदा-बाजार भविष्य

[लेखक :- दैवज्ञभूषण श्री पं० हंसराज शर्मा, ज्योतिश्चन्द्रमणि, सिविल लाईन, लुधियाना]

(१२ जनवरी से ११ अप्रैल १९७१)

विशेष योग

१३ जनवरी दोपहर १-३० पर पृथ्वी मंगल केन्द्र, १६ जनवरी रात्रि २-२२ पर सूर्य मंगल त्रिएकादश, २३ जनवरी प्रातः ४-२४ पर पृथ्वी बुध केन्द्र, २६ जनवरी प्रातः ६-४७ पर मंगल बृहस्पतिकी युति केवल १।३ डिग्रीसे, १ फरवरी दोपहर १२-२१ पर बृहस्पति नैपच्यून की युति, ५ फरवरी सायं ५-२७ पर सूर्य शनि केन्द्र, ११ फरवरी रात्रि १-५० पर पृथ्वी शनि केन्द्र, १३ फरवरी दोपहर ११-३० पर पृथ्वी बृहस्पति केन्द्र, १७ फरवरी दिनमें ३-४७ पर शुक्र हर्षल केन्द्र, १८ फरवरी सायं ५-२३ पर बुध शनि केन्द्र, इसी रात्रि १०-१४ पर मंगल बुध षडष्टक, २४ फरवरी रात्रि ८-२७ पर सूर्य बृहस्पति केन्द्र, १ मार्च मंगल राहु त्रिएकादश, ६ मार्च रात्रि १२-३१ पर सूर्य बुधकी युति (Superior) ८ मार्च प्रातः ५-४३ पर बुध शनि त्रिएकादश, ९ मार्च प्रातः १०-४४ पर सूर्य शनि त्रिएकादश, इसी दोपहर २-२७ पर बृहस्पति शुक्र त्रिएकादश, १४ मार्च सायं ६-४४ पर मंगल बुध केन्द्र, २३ मार्च रात्रि ११-५५ पर शुक्र राहुकी युति, २४ फरवरीको प्रातः ५-५५ पर चन्द्रमा शुक्रकी आच्छादन युति (Occultation) यह दृश्य आकाश पर पूर्वमें देखने योग्य होगा, जब चन्द्रमा द्वारा शुक्र छिपेगा और दृष्टिगोचर होगा। २६ मार्च दोपहर १-१३ पर पृथ्वी बुध केन्द्र, ३ अप्रेल रात्रि ९-१३ पर सूर्य मंगल केन्द्र, और १-१७ पर बृहस्पति शुक्र केन्द्र, ९ अप्रैल दोपहर २-५० पर पृथ्वी शुक्र केन्द्र। इनके अतिरिक्त ग्रहोंकी युति, प्रतियुति, त्रिएकादश, केन्द्र, अर्द्धकेन्द्र, षडष्टक, द्विर्द्वादश, ट्राईन (नवपंचक), नवांश युति, सैक्सटाईल आदिका भी ध्यान रखकर ही यह लेख लिखा गया है।

हाजिर पर प्रभाव

माघ कृष्ण पक्षमें सराफा, तेल तिल्हन तथा रस पदार्थोंके भाव पृथक् पृथक् चलेंगे। मक्की, बाजरा, गेहूँ, गुड़, शक्कर, तांबा, जिस्त, मटर, अरहर आदिमें तेजी रहेगी, इससे इन वस्तुओंका स्टाक करनेमें अधिक लाभ की आशा कम है, फ़िर भी इस पक्षमें सरसों, तोरिया, अलसी, अरण्डा, तारामीरा, मूंगफली और वनस्पति विशेषकर स्टाक करनेसे शीघ्र ही अच्छा लाभ देंगे। इस पक्षमें गरम मसालोंमें तेजी रहेगी, जिनका स्टाक धीरे-धीरे निकाल देना ही उत्तम रहेगा। माघ शुक्ल पक्षमें इन वस्तुओंमें तेजी बराबर बनी रहेगी, परन्तु गुड़ शक्कर और चीनी आदि रस पदार्थोंमें जोरदार मन्देकी आशा है, इससे इनका स्टाक करनेसे आगे भारी हानि हो सकती है।

बाजार सराफ़ामें सोनेके भावमें भारी मन्दीकी आशा नहीं, फिर भी थोड़ा-थोड़ा भाव नर्म ही रहेगा। परन्तु, चांदीमें थोड़ी थोड़ी अवधि पर ही तेजीके अच्छे उछाले आयेंगे और जो तेजी इसमें चल रही है वह आगे जा कर और ऊँचे नये भाव बनायेगी, चांदीमें स्टाक करनेसे अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। १४ फरवरी तक

चांदी यदि मन्दी रहे तो ८ अप्रेल तक निश्चय ही अच्छी तेजी आ सकती है।

तेलके बीज, पंसारीकी वस्तु, रस पदार्थोंमें ३ मार्च से ही मन्दा चलेगा, जो १८ मार्च तक काफी मन्दी आनेकी आशा है। उसके पश्चात् फिर तेजी चल सकती हैं। परन्तु २० मार्चसे गर्म मसाला, खुश्क मेवा, मूंग, मोठ आदिमें मन्देकी आशा है, वारदाना आदिका स्टाक करनेके लिये यह समय काफी उत्तम है, इससे शीघ्र ही लाभ होगा।

इस वर्ष बजटके समय चन्द्रमा मंगलका ट्राईन, विशेष महत्त्वपूर्ण है, संभवतः चन्द्रमा भी लग्नमें हो, इससे कई बातें स्पष्ट होंगी, बजटका प्रभाव समयसे पहले ही शुरु होगा, नये कर भी लगेंगे, २३ फरवरीसे १ मार्च तक भाव काफी चलेंगे। इसका प्रभाव शेयर बाजार पर भी अवश्य पड़ेगा। जूट वारदाना बिजलीका सामान, मशीनरी, सिग्रेट आदि वस्तुओंके मूल्यमें बजटसे पहले ही तेजी शुरु हो जावेगी।

वायदा बाजार

इस समय भारतके भिन्न-भिन्न स्थानों पर किसी न किसी रूपमें, कपास, चांदी वायदा, तेल मूंगफली, बिनौले, गुड़, सरसों, वारदाना, जूट, अलसी हिन्द मोटर्स, ग्वारा, चने, चावल व कालीमिर्चका सौदा चल ही रहा है।

वायदा बाजारके लिये इस अवधिको नीचे लिखी लाईनों पर बांटनेसे सीमा (Limit) रख कर काम करनेमें सुविधा रहेगी :—

१ मार्च तक और उसके पश्चात्‌की लाईन अवश्य ही अपना रंग दिखायेंगी।

समय	सराफा,	तेलतिल्हन,	रसपदार्थ
१२-१-७१ से १८-१-७१	तेजी	मन्दा	तेजी
१८-१-७१ से ३०-१-७१	मन्दी	तेजी	मन्दी
३१-१-७१ से १४-२-७१	तेजी	तेजी	कमीवेशी
१४-२-७१ से २६-२-७१	कमीवेशी	मंदी	तेजी
२६-२-७१ से १-३-७१	यहां सभी वस्तुओंमें भाव काफी चलेगा		
२-३-७१ से ९-३-७१	तेजी	तेजी	मन्दी
१०-३-७१ से २३-३-७१	मन्दी	मन्दी	तेजी
२४-३-७१ से ११-४-७१	तेजी	तेजी	कमीवेशी

जूट वारदाना आदि पर नये टेक्स या डयूटी आदि लगनेसे तेजीके उछाले अच्छे आवेंगे। इसी प्रकार कालीमिर्च और कपासकी स्थिति रहेगी। तेल तिलहनमें शनि मार्गीसे लाईन बदलकर अप्रैल तक चलेगी, जिससे सावधान रहें।

त्रैमासिक व्यापार-दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन, पर्जन्य एवं अर्घकाण्ड-शास्त्री, मैनपुरी (उ०प्र०)]

माघ मास

१२ जनवरीको रातमें दस बजे वृश्चिके भौम होते ही जलीय राशिमें गुरु+शुक्र+भौम योग दक्षिणी वायु चलाकर उ०प्र० राजस्थान, पञ्जाब, मध्यप्रदेशमें पूरे मासभर सार्वत्रिक यत्र-तत्र वर्षा करता रहेगा। गुड़, खांड, चीनीमें जबर्दस्त मन्दा आयेगा। चांदी सोना, सर्वधातु रुई रेशम, पाट, बोरी, ऊन, शेयर्सको भी प्रभावित करेगा।

१४ जनवरीको दोपहर बाद मकर संक्रान्ति शनि की विशेष दृष्टिसे सभी वस्तुओंमें रस्सा-कसी, झटकापटकी चलेगी। तथा मन्दा रहेगा। ता० १५ को सायं ३ बजे भौम राहु केन्द्रसे महान् दुष्काण्ड और मन्दीका धड़ाका होगा।

सभी वस्तुयें मंदी होंगी । सायं वायदेमें जी भरके गली लगावें । कृष्णा ५ शनिवारी गुड़, खांड शक्करमें अच्छी मन्दी लावेगी । ता० १७ को शनि मार्गी होगा, यथा फल

वक्र चाल चलते हुये, शनि मार्गी हो जाय ।
सभी वस्तु व्यापारकी, इकदम पल्टा खाय ॥

मन्दा सम्भव है । ता० २४ से घटते भाव बढ़ने लगेंगे । ता० ३० जनवरीको सायं धनु शुक्र होते ही बुध+शुक्रयोग, मोटे अन्न तेज गुड़ खांड मन्दे, साथ ही जलीय राशिमें गुरु+भौम योग होते ही श्रेष्ठ वर्षा, सभी वस्तुयें मन्दी । शुक्ला ४ शनिवारी सभी खाद्य वस्तुओंके दाम सवाये कर दें, आश्चर्य नहीं । तेलके बीज भी तेज होंगे । शुक्ला ६ उपरान्त ७ सोमवारी तेजी का ही सङ्केत करती है । शुक्ला ११ उपरान्त १२ सोमवारी तेलके बीजोंमें अच्छी तेजी लायेगी । ज्येष्ठायां भौम ता० ८ फर्वरीको सभी वस्तुओंमें अच्छी तेजी लायेगा ।

फाल्गुन मास

दि० १३ फरवरी शुक्रवारकी रात्रिमें राहुसे युक्त भौमसे सदृष्ट होकर सूर्य कुम्भ राशिस्थ होंगे फलतः ५ दिनमें सभी खाद्य वस्तुयें तेज होंगी । ता० १७ को पूर्वास्त बुध भयानक बड़ी मन्दी लायेगा । ता० १७ को ही मकरे राहु कर्क केतु जो ३ फर्वरीसे चली आने वाली लायनको बदल देगा । शास्त्र सम्मत है कि तीन मासमें रुई, रेशम, पाट बोरी, कालीमिर्च, सूत कपड़ा, बिष पदार्थ, घी, अन्न कांसीमें मन्दा, पश्चात् तेजी । चलती लायनका उपयोग करें । सभी वस्तुयें प्रभावित होंगी । ता० १८ को चन्द्र+गुरु+भौम योग तैलके बीज, दाल, अन्न, मक्का बाजरामें मन्दा । गुड़, खांड शक्कर ता० २० को ११ बजे तक तेजी । ता० २१ को धनिष्ठायां बुध चावल तेज, अन्य सभी वस्तुयें मन्दी । ता० २० से देशी घी, सुपारीमें अच्छी तेजी आयेगी । ता० २३ को महाशिवरात्रि मार्केटकी जबरदस्त चलती लायनको बदल देती है । फाल्गुन शुक्ल १ से अमावस तक (गुजराती फाल्गुन मास) में ५ शुक्रवार रुई, रेशम पाट, बोरी कालीमिर्चमें मन्दा लावेगा । ता० २६ को सायं ५ बजे शनि दृष्ट शुक्र राहु योग घी, तेलके बीज चांदी दाल अन्नादि तेज, गुड़ खांड सोना, रुई, रेशम पाट बोरा कालीमिर्च मंदे होंगे । सन् १३६१ हिजरीका प्रारम्भ होते ही (शनिवारा गुर्रा) यवनों पर महान् सङ्कट लावेगा ।

शुक्ला ८ रोहिणी नक्षत्र तेलके बीज, दाल अन्नादि की वृष-संक्रान्तिमें तेजी करेगा । फाल्गुन शुक्लामें वर्षा भी होगी । ता० ७ मार्चको सूर्य बुध की वहिर्युति १ सप्ताह पूर्व सभी वस्तुओंमें तेजी कर देगी । १ मार्चको रात्रिमें धनुषि भौम होते ही सभी वस्तुओंमें तेजी लायेगा, तथा भौमका गुरुसे राशि परिवर्तन योग बादल वर्षा गुड़ (गोल) खांडमें अच्छी तेजी । तेलके बीज, लाल-मिर्च, रुई रेशम पाट बोरी आदि में तेजी । गुरुवारी पूर्णिमाको होलिका-दहन पूर्णिमा वृद्धि सभी वस्तुओंमें अच्छी मन्दी लावेगी ।

चैत्र मास

चैत्रमें ५ शनिवार दुर्भिक्षकारी हैं, व्यापारियोंका ऐसा मत है । चैत्र कृष्णा २ को ज्येष्ठ वायदेकी वस्तुयें खरीदना प्रायः लाभकारी है । ता० १४ मार्चको रातको १०।१६ बजे श्री सूर्यदेव गुरु-भौमसे संदृष्ट तथा सप्तमस्थ चन्द्रमें बुधके साथ होकर मीन राशिस्थ होंगे । फलतः सभी खाद्य वस्तुओंमें अच्छी तेजी होगी । ता० २० को पश्चिमोदयी बुधसे बादल वर्षा वायुवेग ता० १७ से चली लायन बदले या मन्दी आवेगी । ता० २३ को प्लूटो पृथ्वीके सन्निकट आकर भयंकर काण्ड

प्रस्तुत करेगा। आज ही शामको ५ वजे गुरु वक्री (शनि शीघ्री गुरु वक्री) बादल वर्षा वायुवेग पाट बोरी तेज, सभी वस्तुओंमें मन्दा, आगे आषाढ़ मासमें वा मार्गशीर्षमें तेजी करेगा। चतुर्दशीका क्षय सभी वस्तुओंमें मन्दा करेगा।

चैत्र शुक्ला १ शनिवार (२७ मार्च) होनेसे सं० २०२८ का राजा शनि होगा, फलतः उपजकी वतुयें फसलकी मन्दीमें खरीदकर आगे श्रावण और मार्गशीर्ष मासमें बेचनेसे लाभ होगा। नोट कर लें। शुक्ल पक्षमें ३ शनिवार सभी खाद्य वस्तुओंमें तूफानी मन्दी कर दें आश्चर्य नहीं। इस वर्ष शुक्ला १ को रेवती नक्षत्र वर्षाकालमें अधिक वर्षा कारक है। इसी दिन मेषे बुध ६।४ बजे होते ही शनि+बुध पाट बोरी कालीमिर्चमें तेजीकी लम्बी मोटी लायन भी दे सकेगा, गुड़ खांड मन्दे होंगे। २३ मार्चको शीघ्री कृत्ति. शनि (गुरु वक्री है) जो १२ जुलाई सन् ७० को बड़ी मन्दी दाल अन्न, तेलके बीजोंमें ला चुका है। यहाँ बाजारकी चाल देखकर ही कार्य करें।

१ अप्रैलको भौम हर्षल केन्द्रसे महान् दुष्काण्ड, हर वस्तुमें दैनिक तेजी। ता० ३ को हर्षल पृथ्वीके सन्निकट महान् दुष्काण्ड वायुमण्डल दूषित करेगा। ता० ७ को सायं ४ बजे शनि राहु केन्द्रसे भीषण दुष्काण्ड, व्यापारकी सभी वस्तुयें मन्दी। ता० ९ को रात्रिमें बुध वक्री (बुध गुरु दोनों वक्री) बादल बर्षा वायुवेग, चांदी सोना सर्व धातु तेज, अन्न तेलकी मन्दी। ता० १० को वृश्चिकमें भौम+शनि ता० १५ तक तेजी। पूर्णिमा शनिवारी हस्त संयोगी तेजी लाती है।

नोट श्रीरामनवमी या श्रीमहावीर जयन्ती से व्यापारमें अच्छी लायन निकलती है तदनुसार व्यापार करें।

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल

[लेखक :—श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्य विशारद, खांरी जिला गुड़गावां]

माघ मास

बदी एकमको वृश्चिक राशि पर भौमका प्रवेश रुई तथा सोनामें अच्छी तेजीका चांस है। ताम्बा पीतल जस्ता आदि तेज। राजाओंमें विरोधभावना बढ़ेगी। गुड़में भी तेजी होगी। परन्तु यहां—

भौम-भार्गव-गुरु बसै, एक राशि पर तीन।
अन्न भाव मन्दा रहै, संग्रह करो प्रवीन॥

वर्षा होने पर मन्दी चलेगी। इस मन्दीमें माल खरीदना चाहिये।

मकर संक्रान्ति गुरुवारी मन्दीकारक है। परन्तु अश्लेषा नक्षत्र तेजीकारक है। आषाढ़में कर्कसंक्रांति भी गुरुवारी थी। कर्क-मकर दोनों संक्रांतियां एक वारी होने पर या तो किसी प्रधान राज्याधिकारीका निधन होता है या घोर दुर्भिक्ष होता है। गुरुवार होनेसे विशेष अनिष्टकी सम्भावना नहीं है। सूर्य संक्रमणकालमें कर्कका चन्द्रमा होनेसे कपास सूत घी संग्रह करके पांचव मासमें बेचनेसे लाभ होगा। कपड़ा तिल तेल जुवारका भी संग्रह करें। घी का स्टाक संक्रांति तक कर लेना चाहिये। ता० १५ जनवरी सोना चांदी मन्दा होकर तेज, रुई सूत कपास गल्ला मन्दा रहेगा। ता. १७ जनवरीको सोना, चांदी, सूत, रुई खाण्ड चावल मन्दा। अनुराधाका भौम लाल रंगके पदार्थ तेज करेगा। आज शनि मार्गी होकर बाजारकी लाइन बदल देगा। एक बार पहिले सुभिक्ष होकर दो मास पीछे अलसी सरसों तिलहन हींग लाल मिर्चोंमें तेजी आएगी। अरब, पाकिस्तान आदि देशोंमें दुर्भिक्ष होगा। रुईमें अच्छी मन्दी आनेकी आशा है। रुईके व्यापारियोंको रुई बेचनी चाहिये। रविवारी षष्ठी घी तथा अनाजमें तेजी लाएगी। जहां आज आकाश निमल रहे वहां व्यापारियों को कपासका संग्रह करना चाहिये। ता. १६ को रुई कपास कपड़ा सूत मूंगा सोना तेज होगा। २१ को बाजार मन्दा रहेगा। २३ को सरसों, अलसी, अरण्डी बिनोला तिल तेलमें तेजी, रुई तथा चांदी मन्दी। २४ जनवरी श्रवणे रवि, सरदी बढ़ेगी, सोना चांदी रुई सूत सन चावल अलसी शेयर्स तेज। गेहूं में विशेष तेजी होगी। अमावस्या मंगलवारी तेजी करेगी। आज आठ दिनकी तेजी लगा दें। गल्ला, गुड़, खाण्ड तिलहन तेज। अमावस्या क्षय होनेसे रुई चांदी और अलसीमें घटबढ़ चलेगी। रुईमें ५०)६०) की तेजी आ सकती है। सुदी १ बुधवारी है। "प्रतिपत्सर्व मासेषु बुधे दुर्भिक्षकारिणी" गल्ला, गेहूं दालें, मसाले गड़ खाण्ड घी तेल आलू अदरक गोभी बैंगन आदि शाक सब्जी सभी खाद्य पदार्थ इस पक्षमें तेज रहेंगे। सोना चांदी रुई मन्दी। २८ जनवरीका चंद्रोदय सोना चांदी किराना गुड़ खाण्ड मन्दा और गल्ला तेज करेगा। घास चारा मन्दा। सुदी ४ शनिवारी धान्यका नाश चोर-अग्निभय दुर्भिक्षकारक है। धनुषि शुक्रः सोना चांदी रुई कपास गेहूं तेज। प्रजामें संगठन की भावना बढ़ेगी। बसन्तपंचमी रविवारी तेजी कारक है। उषायां बुधः फसल अच्छी बढ़ेगी, आठ वर्षकी उम्रके बालक बीमार होंगे। २ तथा ३ फरवरीको जिन क्षेत्रोंमें बादल हों वहां अन्नको बेचना और नहीं हो तो खरीदना चाहिये। ता. ४ को बाजारमें मन्दीका रुख रहेगा, रुईमें अच्छी मंदीकी आशा है। ६ फरवरी धनिष्ठायां

रवि: अन्न चांदी सोना रुई सूत ताम्बा लोहा तथा कपड़ामें तेजी होगी । जनतामें कुछ उपद्रव उठे, सरदी घटेगी। ता. १० फर० बुधवारी पूनम तेजीकारक है। अश्लेषा नक्षत्र इस तेजीको बढ़ावा देगा। श्रवणे बुध: जौ गेहूँ चनेकी खेतीमें सर्दीसे हानि करेगा।

नोट:—माघ कृष्ण पक्षमें गुरु शुक्रका राशि योग वर्षा तथा युद्धका प्रतीक है । कृष्णपक्षमें जनरल लाईन मंदी और शुक्ल पक्षमें तेज रहेगी। शुक्ल पक्षमें देशी घी तेज रहेगा।

दोहा—माघी साते सुदिसे, चौदस तक दिन आठ।
वर्षा ऋतुमें समझ लो है वर्षाका ठाठ॥

इन दिनोंमें जहां वर्षा होगी वहाँ मंदी चल पड़ेगी।

फागुन मास

गुरुवारी १ सुभिक्षकारी है। पू. षा. का शुक्र तिल तेल सरसों अलसी उड़द नमक मन्दे करेगा। चांदी और रुईमें पहिले तेजी फिर मन्दी। १२ फरवरीको कुम्भ संक्रान्ति कालमें सिंहस्थ चन्द्रमा है। अनाजमें चौथे मासमें लाभ होगा। लोकमें सुख शान्ति, जौ, गेहूं जुवार बाजरा चणा मूंग मौठ मसूर उर्द घी कपास रुई तिल तेल गोला गुड़ खण्ड मन्दी रहेगी । मन्दीमें माल खरीद, यदि आज वर्षा हो जाये तो लाल रंग की चीजें खरीदें, पांचवें मासमें लाभ होगा। १५ को एक चरण चित्रा श्रेष्ठ वर्षा तथा मन्दी-कारक है। परन्तु स्वाति नक्षत्र तेजीका प्रतीक मंगलवार होनेसे रुई कपास कपड़ा सूत मूंग सोना तेज होगा । ता० १७ को मकर राशिमें बुध अस्त होगा, व्यापारियोंके लिये हानिकारक रहेगा। ता० १९ को चांदी सोना गेहूं गुड़ रुई सूतमें तेजी रहेगी। २० को रुई और चांदीमें अच्छी मन्दी। गल्लामें तेजी रहेगी । २ फरवरी सोना गुड़ किराना मन्दा। रूसमें कोई नवीन घटना घटेगी, २३ को प्रजामें आन्दोलन उपद्रव तथा रुईमें मोटी मन्दी चलेगी। अमावस्या गुरुवारी मन्दी कारक है। वर्षा होगी।

मावस्या गुरुवार वा गुरु दिन मास व नक्षत्र।
ज्योतिषका सिद्धान्त है वर्षा हो सर्वत्र॥ (भ०भा०)

इस पक्षमें तीन गुरुवार होनेसे जनरल लाइन मन्दीकी । २६ को मकरे शुक्र खेतीमें हानि करेगा, अनाजमें तेजी और सोना चांदीमें भी तेजी होगी। २७ को मुसलमानी हिजरी सन् १३९१ आरंभ होगा, गुर्राका मालिक शनि है । शनि नीचका होनेसे नेष्ट फल कारक है। इस वर्षमें वर्षाकी कमी, गुड़ घी कपास सोना चांदी ताम्बा लोहा जस्ताकी तेजी रहेगी । संयोगसे सं० २०२८ बिक्रमीका राजा भी शनि ही है। सुदी ३ का क्षय इस पक्षमें मूंग उर्द घी तेज करेगा। ता० १ मार्च धनुषि भौम आलू अदरक, मूंगफली हल्दी सौंठ चारा घास, घी में तेजी करेगा। सुदी ७ को कृत्तिका नक्षत्र चांदी रुई कपासमें मन्दी करेगा। अन्न गुड़ तेज। सुदी ८ को रोहिणी नक्षत्र है, इस योगके आते ही अनाजमें मन्दी और पीछे भारी तेजी आती है । पूभायां रवि रुई सूत सन पाट वस्त्र तथा धातुएं तेज करेगा। ता० ५ से १२ मार्च तक सूर्य बुध नक्षत्र युति तेजीकारक रहेगी। सुदी १० शनिवारी आर्द्रा युक्ता दुर्भिक्षकारक है, खेतीमें नुक्सान, अन्नमें तेजी होगी । श्रवणे शुक्र: रुई मन्दी और तिलहन तेज करेगा। ९ मार्चको सोना चांदी कांसी पीतलके बर्तन तेज होंगे। पूर्णिमा गुरुवारी मन्दी कारक है । आज आठ दिनकी मन्दी लगा दें । पूर्णिमाकी वृद्धि "जो पूर्णमासी बढै तो मन्दा बाजार। जौ, गेहूं चावल मटर मूंग मोठ गुड़ गुवार" (भ०भा०) गत वर्ष भी यही पूर्णिमा बढी थी । फागुनमें कृष्ण पक्षकी अपेक्षा शुक्लपक्षमें जनरल लाइन मन्दी की रहेगी।

चैत्र मास

ता० १४ मार्च रविवारी मीन संक्रांति अनाज नमक तिल तेलमें तेजीकारक है। परन्तु, गुरु दृष्ट होनेसे तेजीमें बाधा पड़ जायेगी। कन्याका चन्द्रमा होनेसे जुवार बाजरा मकई मोठ मूंग गवार आदि का संग्रह चार मासमें लाभ देगा। १७ मार्च उ०भा०में रविः चांदी सोना रुई कपड़ा गेहूं गुड़ आदि रस पदार्थ तेज होंगे। १८ मार्च, चोर डाकुओं और भ्रष्टाचारियोंको कष्ट होगा। मोटर रेल वायुयानोंकी दुर्घटनाएं होंगी। २० को बुधका उदय वर्षामें कमी तथा तेजी करेगा, सोना चांदी रुई सूत सन गुड़ गेहूं मन्दा। २३ मार्चको पूषायां भौमः रोगोंमें वृद्धि। घास चारा घी तेल चावल नमक मूंगफली तेज, अनाज मन्दा होगा। आज ही गुरु बक्री होगा। सुभिक्ष-कारी है। सभी तरहका अनाज कपास तथा घी का संग्रह करनेसे मँगसिरमें लाभ होगा। २४ को सभी बस्तुओंमें मन्दीका रियक्शन आएगा। सरदी बढ़ेगी, अमावस्या शुक्रवारी मन्दीकारक है। चांदीमें मोटी मन्दीका चांस है।

सुदी १ शनिवार—सं० २०२८ में राजा शनि है। इस संवत्में वर्षा कम, खेतीकी उपज कम, दुर्भिक्षका भय रहेगा। काले रंगके पदार्थ उर्द, तिल, कोयला लोहा, जस्ता, मशीनरी कम्बल आदि तेज रहेंगे। आज ही नवरात्र आरंभ होंगे। नवरात्रोंमें दुर्गासप्तशतीका पाठ करने करानेसे धन धान्यमें वृद्धि होती है। २६ मार्च चांदी तथा नमक मन्दा, नशीली वस्तुएँ बेचने और सेवन करने वालोंको कष्ट होगा। सुदी ५ को रोहिणी नक्षत्र कष्टकारक है, आज जिन क्षेत्रोंमें दिनभर बादल रहें उनमें गेहूंका स्टाक करना चाहिये, आज ही। कृत्तिकाका शनि प्रजामें विग्रह अग्निकांड और अनावृष्टिसे कष्ट होगा। गल्ला तेज। ता० ३ अप्रेल गल्ला अलसी सरसो तिल तेल साबुन घी बारदाना तेज होगा, कई प्रकारकी दुर्घटनाओंसे प्रजाको कष्ट होगा।

ता० ४ अप्रैलसे पूर्णिमा तक तिलहनमें जनरल लाईन मंदीकी रहेगी। ता० ६ को गल्ला और रस पदार्थ तेज रहेंगे। ता० ६ को बुध वक्री होगा। गुरु पहिले ही वक्री है शनि शीघ्री है, वर्षा वायुका जोर होगा, चांदी सोना आदि धातुओंमें तेजी, अनाज तथा तिलहनमें मंदी की आशा है। शनिवारी पूर्णिमा तेजी कारक है। चैत्रमें ५ शनिवार हैं। अतः नाना प्रकारकी दुर्घटनाएं उपद्रव उत्पात अग्निकांड रोग दुर्भिक्ष आदिसे प्रजाको कष्ट होगा। बाजार स्थिर नहीं रहेंगे, जोरदार धटबढ़ होगी।

शकुन विचार

माघ

माघमास प्रतिपदाको नभ निर्मल अरू बाय।
वस्त्र सुगंधित तेल तिल, तिलहन तेज बिकाय॥
माघमासमें चतुर्थी, को आवै शनिवार।
चौर अग्निभय, धान्यक्षय अति दुर्भिक्ष विचार॥
माघी पूनमको अगर बादल छवें अकास।
संग्रह करो अनाजका लाभ सातवें मास॥

फागुन

फागुनमें बादल रहैं किन्तु न वर्षे नीर।
तो फिर वर्षाकालमें वर्षा हो गम्भीर॥
सत-अठ-नव-दस-ग्यारसी, फागुन सुदिमें जोय।
कृत्तिका करै सुभिक्ष अरू आर्द्रा उपज न होय॥
होली जलनेके समय यदि बादल हो जायँ।
जौ गेहूं रोली लगें महंगे भाव बिकायँ।

चैत्र

चैत बदी पाँचे दिना मंगल या बुधवार।
गेहूं अरु घी में चले तेजी बारम्बार॥
चैत सुदीमें चौथ तक जो वर्षे दिन चार।
वर्षा ऋतुमें जानियें वर्षा भली प्रकार॥
चैत मासमें आ पड़े पांच शुक्र शनिवार।
प्रजा नाश दुर्भिक्ष दुःख दिन दिन तेज बाजार॥

श्रीमती गांधीकी जन्मकुण्डली पर विचार

[लेखक :—श्री पं० जयसिंह शर्मा भारद्वाज, खैरथल (अलवर)]

श्रीमती इन्दिरा गांधीको भिन्न-भिन्न ज्योतिषियोंके मतसे शनि सहादशाका प्रवेश भिन्न-भिन्न तारीखोंमें हुआ है। जैसे श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदीजीके मतानुसार ता० १२-११-७० ई०, श्री रमण बंगलौर द्वारा ता० १४-३-७० ई० श्री रामचरणजी द्वारा ता० २७-७-७० ई० 'ज्योतिष-मार्तण्ड' द्वारा प्रकाशित ता० ६-१०-७० ई० और ता० ३०-४-७० ई० है।

यह मतभेद पंचांगभेदके कारण नक्षत्र अवधि के कारण प्रतीत हुआ है। कुछ भी हो श्रमत गांधीको शनिमहादशाका प्रवेश हो चुका है।

यह शनि अच्छा तथा शुभफलप्रद नहीं है क्योंकि कुण्डलीसे जन्म लग्नमें सप्तमेश तथा अष्टमेश है और लग्नमें शत्रु राशिमें बैठा है। ५४वें वर्षमें भी नीचका होकर शत्रु मंगलकी राशि में होकर बैठा है, साथ ही वक्री होकर मंगलसे दृष्ट है और दोनोंका षडष्टक योग भी बन रहा है। ऐसी दशामें यह कहावत चरितार्थ हो रही है कि 'करेला नीम चढ़ा' अर्थात् शनिका फल अच्छा नहीं मिलेगा। इस वर्षमें शिरोरोग, शिरमें चोट-पहुंचना, रोगग्रस्त, राज-भंग योग प्रकट होता है। साथ ही आगामी बर्ष ५५वाँ वर्ष द्विजन्मा वर्ष है। यह वर्ष २०-११-७१ को लगेगा इसमें लग्नमें केतु बैठा है। मुंथा राहु ग्रस्त है। वर्ष लग्नेश छठे बैठा है, अष्टममें मंगल शनिकी राशिमें स्थित है। शनि तथा मंगल एक दूसरेको पूर्ण दृष्टिसे देख रहे हैं, अतः दोनों वर्ष ५४वाँ तथा ५५वाँ वर्ष नेष्ट है। दोनों दुर्घटनाकी ओर संकेत करते हैं, अतः मैं माँ भगवती जगदम्बासे प्रार्थना करता हूँ कि वह श्रीमती इंदिरा गाँधीकी रक्षा करे तथा सुरक्षा अधिकारियोंको भी विशेष सतर्क होकर प्रधान मन्त्रीकी सुरक्षाका ध्यान रखना चाहिए। अच्छा हो प्रधानमंत्री ग्रहोंका विशेषकर शनि तथा मंगलका उपाय भी करें।

ग्रहस्थिति इन दोनों वर्षोंमें श्रीमती इंदिरा गांधीके पक्षमें नहीं रहेगी। शरीर तथा राज्यके लिए हानिकारक है। अतः आगानी चुनावमें श्रीमती इंदिरा गाँधी १६७२ के चुनावोंके बाद प्रधानमंत्री बनी रहेगी यह सम्भव नहीं दीखता है। अतः प्रधानमंत्रीको बहुत सम्भलकर चलनेकी आवश्यकता है।

२३वें वर्ष स्वतन्त्रता दिवसकी वर्षकुण्डली भी अनेक प्रकारकी चिन्ता खड़ी कर रही है। यान विमानोंकी दुर्घटना, राजमन्त्रीमण्डलमें परिवर्तन। दो तीन महापुरुषोंका निधन, शत्रु आक्रमण भय। प्रतिपक्षकी प्रबलता प्रकट हो रही है।

२२वाँ गणतन्त्र वर्ष जो २६-१-७१ को लग लग रहा है उसकी कुण्डली भी शत्रुभय, आर्थिक संकट प्रकट कर रही है। शासनाध्यक्षकी शक्ति नष्ट हो जावेगी। बड़ी बेचैनी होगी। चिन्ताका समय रहेगा। एक दो नेताओंका निधन प्रकट हो रहा है। शत्रु आक्रमणकी आशंका है।

श्रीमती गाँधीको शनि महादशाका प्रवेश ता० १२-११-७० को हुआ मान रहा हूँ। यह महादशा १६ वर्ष रहेगी अर्थात् १२-११-८६ ई० तक रहेगी। इसमें प्रथम ३ वर्ष ३ दिनकी अन्तर्दशा शनिकी चालू हुई है जो १८-११-७३ ई० तक रहेगी। इस ३ वर्ष ३ दिनके समयमें हमारे

त्रैमासिक व्यापार-भविष्य

[लेखक :— श्री पं० ओंकारप्रसाद दैवज्ञभूषण हापुड़, (उ०प्र०)]

माघसे चैत्र शुक्ला १५ सं० २०२८ तदनुसार तारीख १२ जनवरी ७१ से १० अप्रैल १९७१ तक के ३ महीनोंमें ज्योतिष-शास्त्रानुसार प्रथम तो इंफीरियर लाइन चालू रहेगी, यह लाइन २८ दिसम्बर १९७० से चालू होकर ६ मार्च १९७१ तक चलेगी । यह लाइन तेजीकी सर्व सम्मत है। इसी लाइनमें शरद् ऋतुके उत्पन्न पदार्थोंमें जोरदार तेजी बनेगी और चांदी सोना पीतल तांबा तथा हल्दी जीरा धनिया इसी लाइन में तेज होंगे। मीठेमें खासी चमक रहेगी। यद्यपि कुछ बीचमें अन्य ग्रहोंके डायरक्शन मंदीकारक बनेंगे, लेकिन यह मंदी टिकाऊ नहीं होगी। ऐसी पूर्ण आशा है । ता० १२ जनवरीसे ३० जनवरीके मध्य गुड़ आदि रस पदार्थ बहुत तेज और तिलहनके मध्य स्टेडी होगी । ता० १७ जनवरीको शनि मार्गी होनेपर चना गेहूँ मूंगफली तेल लोह पदार्थोंमें जोरदार मन्दी आना स्वाभाविक है । माघ शुदि में एक बार मन्दी खत्म होगी ।

फर्वरी १९७१ के प्रारम्भमें बुधाष्टमीको नवमी क्षय होनेसे गुड़ मीठेमें जोरदार तेजी बनेगी । स्टाकिस्ट उत्तरप्रदेशके व्यापारी भी स्टाक करनेसे हाजिरको ऊंचा उठा ले जायेंगे और वायदा हाजिरीका डिफरेंस कम होने लगेगा। तथा ६ फरवरीसे १० दिनमें और मार्चके प्रथम सप्ताहमें तूफानी तेजी चीनी गुड़ खंडसारीमें आवेगी। यहां घी तेलकी आखिरी मंदी समाप्त होगी, तथा जूट पाट बिनौलामें मंदी, रुईमें तेजी तथा लोह शेयर चांदी सोनामें बहुत ही मामूली घटबढ़ निकलेगी ।

मार्च १९७१ ई० में ता० ७ मार्चको १ A.M. पर सुपीरियर लाइन चालू होगी । जोकि ता० १९ अप्रैल तक चलेगी । इस लाइनमें चना गेहूँ व दालोंके भावोंमें घोर मंदी होगी । इस वास्ते स्टाकिस्टोंको हाजिर माल बेच देना चाहिये, वर्ना आगे भाव हाथ नहीं आयेंगे और जोरदार तूफानी मंदी हाजिरमें आयेगी, इसके विपक्षमें घी तेल तिलहनादिमें तेजीका एक नया वातावरण सामने आने लगेगा, क्योंकि मार्चमें नैपच्यून डायरक्ट पोजीशनमें होकर ज्यों-ज्यों अपनी विकलाओं पर बढ़ेगा रबड़के मानिन्द भाव बढ़ेंगे। इसी लाइनमें ता० १२ मार्चको सायन पंचाङ्गसे भौम मकरमें तथा ता० १४ मार्चको बुध मेष राशिमें ४थी १०वीं दृष्टिके फासलेसे परिभ्रमणके फलस्वरूप मंगल व बुधके अधिकारकी वस्तुओंमें

प्रधानमंत्रीको महान् कष्टों व चिन्ताओं तथा परेशानियोंका सामना करना होगा। १२ दिसम्बर सन् १९७० ई० को बृहस्पति तुला राशिसे वृश्चिक राशिमें प्रवेश कर रहा है। उसके पश्चात् श्रीमती इंदिरा गांधी को १९७१ ई० के आरम्भके ३ मास विशेष चिन्ताके होंगे । नवीन कांग्रेसमें फूट होनेके चिन्ह प्रकट होंगे । गृहस्थ जीवनके रूपमें पुत्र-पौत्रकी ओरसे भी चिन्ता होगी। १९७२ के चुनावमें विजय प्राप्त कर श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री नहीं बन सकेगी।

आगामी वर्ष जनताके लिए भी कष्टप्रद रहने की सम्भावना है। उत्पादन अच्छा न होनेसे मँहगाई बढ़ेगी । स्थान-स्थान पर आन्दोलन होंगे, बेकारी बढ़ेगी । साम्प्रदायिक दंगे होंगे। गरीबोंकी गरीबी बढ़ेगी। धनी और धनी होंगे, हिंसक घटनायें चोरी डकैती बढ़ेगी। रेल दुर्घटनायें होंगी ।।

ऊंची तेजी होगी १० दिनमें ही तेजी तहलका मचा देगी, कुछ वस्तु अवश्य ढीली रहेगी।

ता० २४ मार्चको गुरुदेव वक्र पोजीशनमें चलेंगे यह चाल ही जोरदार तेजीमें ब्रेकका काम देगी। क्योंकि सायनसे गुरुदेव स्व राशि में हैं इसलिये गुरुके अधिकारकी वस्तुओंमें तूफानी मंदी व धनु राशिके अधिकारकी वस्तुओंमें भयंकर मंदी आवेगी जिसे कोई रोक नहीं सकता, सिर्फ चांदी सोना ही तेजी पर जावेगा। हल्दी व पीले रंगकी वस्तुओंमें बहुत ही जोरदार मंदी आयेगी। यहां दैनिक लाइनोंके चक्करमें मत पड़ना बिनौला चना तो अवश्य ही बेचान बोलना।

तीन मासमें तीन लाखके चांस

ऊपर लिखे ३ महीनोंमें ता० ५ जनवरीको शुक्र बृहस्पतिका युद्ध, ता० ७ को बुध मार्गी, ता० १७ को शनि मार्गी, ता० १८ को हर्षल वक्री होनेपर बिजलीके करंटकी मानिन्द मार्केट चलेगा और २६ जनवरीको मंगल बृहस्पतिके युद्ध होने पर एवं ता० २७ को मंगल नैप्च्यूनका युद्ध होने पर गुड़ और चनेमें तहलकेका मार्केट चलेगा। फरवरी १९७१ में ता० १ को बृहस्पति नैपच्यूनका युद्ध ता० १४ को बुध पूर्वमें अस्त होने पर फौरन एकदम मार्केटमें मंदी आयेगी, मार्चमें ता० ५ को नैप्च्यून वक्री, ता० ६ सूर्य बुधका युद्ध और १७ मार्चको पश्चिममें बुध उदय होनेके बाद सूर्य से बुध समानान्तर रेखाओं पर चलते हुये सुपीरियर पोजीशन बनायेगा। ता० २३ मार्चको बृहस्पति वक्री होने पर अनाजोंके भाव एकदम टूट जायेंगे, आखिरमें ता० ९ अप्रैलको बुध वक्र हो जायेगा तब एक और धमाकेकी मंदी अनाजों में, हल्दीमें जबरदस्त आयेगी। ऊपरलिखे चांसोंमें नजराने तेजी मंदी लगानेसे भी व्यापारी लाखों रुपये कमा सकते हैं। ऊपर लिखे तीन महीनों में ता० १८ जनवरी ता० १४ फरवरी ता० १७ मार्च और २३ मार्च विशेष नजराने लगानेकी तारीखें हैं।

साप्ताहिक व्यापार भविष्य

(१) ता० ११ से १७ जनवरी ७१—ता. ११ को वृश्चिकका भौम होनेसे मिर्च आदि लाल वस्तुओंमें तेजी आयेगी। ता० १४ को संक्रान्ति अपने असरसे गुड़ खांड शक्कर तेल तिल घृत देशी व कोटोजम अलसी सरसों अरंडा मूंगफली बिनौला सींगदाया खल चावल दाल गेहूँ जौ चना मटर अरहर ज्वार बाजरा मक्का उरद मूंग मोठ मसूर आदिमें तेजी व रुई कपास सूत सन शेयर मोटर बारदाना हैशियनमें घटाबढ़ी होकर बाद तेजी आयेगी। ता० १६ को मार्गी शनि होनेसे तेल सरसों हींग मिर्चमें तेजी और रुईमें मंदी आयेगी। ता० १७ को अनुराधामें भौम होनेसे गेहूँ लाल मिर्च लाल चन्दन आदि लाल वस्तुओंमें तेजी आयेगी। आज ही ज्येष्ठामें शुक्र होनेसे सोना चांदी तिल चावल तेल सरसों आदि में मन्दी आयेगी।

(२) ता० १८ से २४ जनवरी १९७१—ता. १७ की बनी लाइन ता० २० तक गुड़ खांड शक्कर गेहूँ चना जौ मटर अरहर मूंग उड़द मोठ मसूर ग्वार ज्वार बाजरा मक्का चावल दाल तिल तेल खल घृत देशी वेजीटेबिल सरसों अलसी अरंडा मूंगफली तिलहन सींगदाना बिनौला शेयर जूट पाट हिन्द मोटर हैशियन बारदाना सन सुतली बोरी रुई सूत कपास हल्दी धनिया मिर्च जीरा नमक काली मिर्च नारियल इलायची सुपारी बादाम किशमिश आदि किरानेकी वस्तुओं में ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता० २१ में मार्गी पूषामें बुध होनेसे अरंडा बिनौला सूत सन कपासमें तेजी आयेगी। ता० २१ को बनी लाइन ता० २३ तक वदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता० २४ को श्रवणे रवि: होनेसे सोना

चांदी रुई चावल जौ गेहूँ सूत सन गुड़ खांड जूट पाट बारदाना मोती मणि तांबा रेशम तुष धान्य तैल बीज सुगन्ध पदार्थ आदिमें तेजी आयेगी।

(३) ता० २५ से ३१ जनवरी १९७१ ता. २४ की बनी लाइन ता० २७ तक सभी किरानेकी वस्तुओंमें ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता० २८ को चन्द्रदर्शन होनेसे सोना रुई वस्त्र सूत सन गेहूँ जौं चना मटर अरहर उरद मूंग मोठ ग्वार ज्वार बाजरा चावल दाल खल बिनौला तेल तिल घृत सरसों अलसी अरंडा मूंगफली सींगदानामें तेजी। चांदीमें घटबढ़ होगी। ता. ३० को मूला धनुषिच शुक्र होनेसे अनाजोंमें तेजी सोनेमें घटबढ़, रुई पहले तेज बादमें मंदी होगी। ता० ३१ को उषायां बुध होनेसे धान्योंमें मन्दी आयेगी। साथ ही रेशमी वस्त्र कम्बल सूती वस्त्र स्नेह मिश्रित अन्न विचित्र वस्तु जलज वस्तु स्फटिक त्रिफला दालचीनी चोप चीनी मधु पठानी लोध जायफल अगर वच जूट पाट बारदानामें ७ से १७ पर सैंटकी मन्दी आयेगी।

(४) ता० १ से ७ फरवरी ७१—ता. ३१ की बनी लाइन ता० २ तक उपर्युक्त सभी वस्तुओंमें ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता० ३ को मकरे बुध होनेसे सोना चांदीमें तेजी, गेहूँ जौ चना मटर आदि के भाव सम व रुईमें विशेष तेजी आयेगी। ता० ३ को बनी लाइन ही बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता० ६ को अनुराधा ३ गुरु होनेसे गेहूँ जौ चना मटर ज्वार बाजरा मक्कामें तेजी, सोना चांदीमें मन्दी आवेगी। आज धनिष्ठामें रवि होनेसे रुई अलसी तिलहन आदि में तेजी आयेगी।

(५) ता० ८ से १४ फरवरी—ता० ८ को ज्येष्ठायां भौम होनेसे चांदीमें मंदी और रुईमें घटबढ़ होगी। ता० ८ की बनी लाइन ता० ९ तक बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता० १० को श्रवणे बुध होनेसे गुड़ खांड चावल चना धान्य आदि में ७ से १७ परसैंटकी तेजी आयेगी। ता० ११ को पूषायां शुक्र होनेसे उरद मूंग मोठ तिल तेल सरसों अलसी अरंडा सींगदाना जूट पाट बारदानामें तेजी आयेगी। ता० १२ को कुंभ संक्रांति ४५ मुहूर्ती होनेसे चांदी चन्दन श्वेत वस्त्रमें तेजी आयेगी। ता० १२ को बनी लाइन ता० १४ तक गुड़ खांड शक्कर गेहूं जौ चना मटर अरहर ज्वार बाजरा मक्का सोना चांदी पीतल तांबा शेयर मोटर इन्डियन आयरन तेल तिल सरसों सींगदाना जूट पाट बारदाना खली बिनौला हल्दी मिर्च जीरा धनिया हींग सूत सन कपास वस्त्रादिमें बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी।

(६) ता० १५ से २१ फरवरी १९७१ - ता० १२ की बनी लाइन ही बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता० १६ को मकरे राहु आश्लेषा ४ कर्के केतु होनेसे सोना चांदीमें तेजी आयेगी। ता० १७ को पूर्वास्त बुध होनेसे धान्य घृतादिकमें मन्दी और रुईमें घटबढ़ चलेगी। ता० १८ को धनिष्ठामें बुध होनेसे सोना चादी धान्य आदि में मंदी, रुईमें घटबढ़, चावलमें तेजी आयेगी। ता० १९ को शत. रवि होनेसे रुई चांदी सोना सूत गेहूँ कपास गुड़ खांड सरसों तिल तेल अलसी सरसों अरंडा सींगदाना जूट पाट बारदाना, शेयर मोटर इण्डियन आयरन, टाटा आर्डनरी, दाख जायफल हल्दी आदिमें तेजी आयेगी। ता० १९ की बनी लइन ही बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता० २१ में मार्गी भरण्यां ४ शनि होनेसे रस कस तेल कपूर हींग सरसों मजीठा आदिमें तेजी आयेगी।

(७) २२ से २८ फरवरी १९७१ ता० २२ को कुंभे बुध होनेसे सोना चांदी आदि धातुओंके

भाव सम, रुई खांड घृत तिल तेल अलसी सरसों अरंडा सींगदाना जूट पाट बारदानामें ५ से ८ प्रतिशत मंदी आयेगी । ता० २३ को उषामें शुक्र होनेसे गुड़ खांड सोना चांदी आदिमें मंदी, रुई व गेहूँ चना जौ मटर ज्वार मक्का आदिमें मन्दी आये ता० २३ को बनी लाइन ता० २४ तक बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता० २५ को मकरे शुक्र होनेसे खांड गुड़, घृतमें तेजी, जूट पाटमें घटबढ़ और वस्तुमें ज्यों की त्यों चलती रहेंगी। ता० २६ में शत. बुध होनेसे सोना चांदीमें अच्छी मंदी आयेगी और आज ही चन्द्र-दर्शन होनेसे गेहूँ जौ चना मूंग मोठ सोना चांदी रुई सरसोंमें मंदी आयेगी । ता० २६ की बनी लाइन ही ता० २८ तक बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी।

(८) ता० १ से ७ मार्च सन् १९७१—ता० १ मार्च को मूलायां धनुषि च भौम: होनेसे धान्य चांदी चावल सोना रुई आदिमें तेजी आयेगी। ता० १ को बनी लाइन ता. २ तक बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी । ता. ३ को अभिजितमें शुक्र होनेसे चांदी चावल रुई सूत सन सफेद वस्त्र में तेजी आयेगी, क्योंकि इसमें पहला ग्रह इन वस्तुओंमें तेजीका है और यह भी तेजीका लगा है इसलिए यह नोट है कि इससे पहले जिस वस्तुके हाईअस्ट भाव क्रौस हो जायेंगे उनमें जोरदार तेजी उतने ही परसैंटकी और आ जायेगी। ता. ४ को पूभायां रविः होनेसे सोना गुड़ खांड शक्कर गेहूँमें तेजी आयेगी । ता. ५ पूभायां बुध होनेसे सोना चांदी लोहा तांबा शेयर हिन्द मोटर जूट पाट बारदानामें मंदी आयेगी। ता० ६ को श्रवणे शुक्र होनेसे सोना चांदी गुड़ खांड शक्कर उरद मूंग मोठमें मंदी, कपास तिल तेल सरसों अलसी अरंडामें तेजी आयेगी। ता. ७ मार्चको ता० ६ की बनी लाइन ही ज्यों की त्यों चलती रहेगी।

(९) ता. ८ से १४ मार्च १९७० तक — ता. ८-९ में किसी खास ग्रहका संक्रमण नहीं है इसीलिए ता. ६ की बनी लाइन ही वायदा मार्केटोंमें बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता. १० में मीने बुध होनेसे रुईमें तेजी, सोना चांदीमें पहले जितनी तेजी आई है उतनी ही मंदी आयेगी, गेहूँ गुड़ खांड शक्करमें ७ से १७ परसैंटकी मंदी आवेगी। ता. १० को बनी लाइन ता. ११ तक तमाम वायदा मार्केटोंमें बदस्तूर एकतर्फा ज्यों की त्यों चलती रहेगी । ता. १२ को उभामें बुध होनेसे चांदीमें घटबढ़, रुई गुड़ खांड चावल व धान्यभाव सम रहेगा। ता. १४ को मीन संक्रान्ति प्रगल्भावस्थामें एवं ३० मुहुर्ती होनेसे गेहूँ चना जौ मटर अरहर आदि में साधारण तेजी । मक्का ज्वार बाजरा किशमिश सोंठ कालीमिर्च हींग जीरा धणिया गेरू लालचन्दन मजीठ आदि लाल रंगकी वस्तुओंमें तेजी। गुड़ शक्कर खांड तेल तिलहन सरसों अलसी मूंगफली बिनौला अरंडा सींगदाना जूट पाट बारदाना हैशियनके भाव सम, चावल नारियल शेयर सुपारीमें मंदी व कस्तूरी कपूर केशर इत्र तथा सोना चांदी तांबा पीतल आदिमें घटबढ़ होगी तथा यह संक्रान्ति अपने अन्तिम १० दिनोंमें विशेष प्रभाव दिखावेगी।

(१०) ता. १५ से २१ मार्च १९७१—ता. १४ को बनी लाइन १६ तक गुड़ खाँड शक्कर गेहूँ जौ चना मटर अरहर मूंग मोठ उरद ज्वार बाजरा मक्का तिल तेल सरसों अलसी अरंडा सींगदाना जूट पाट बारदाना शेयर हिन्द मोटर आयरन सोना चांदी पीतल तांबा रांगा, हल्दी मिर्च जीरा धनिया लोंग कपूर केशर कस्तूरी बादाम छुवारा किशमिश आदिमें बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी। ता. १७ को उभामें रवि

होनेसे सोना चांदी रुई गुड़ खांड शक्कर गेहूँ आदि में तेजी आयेगी । ता. १८ को धनिष्ठामें शुक्र होनेसे सोना चांदी रुई कपास मूंग मोठ ज्वार बाजरा उरदमें तेजी तथा गेहूँमें मन्दी आयेगी । ता. १९ को रेवतीमें बुध होनेसे चांदी गुड़ खांड घृत तेल तिल सरसों आदिमें मंदी, गेहूँ केशर मजीठ लाल चंदन गेरु लाल मिर्च आदि में तेजी आयेगी । ता. २० को बुध पश्चिम में उदय होनेसे १५ दिनमें रुई कपास व धान्य में मंदी आयेगी । ता. २० की बनी लाइन ता. २१ तक बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी ।

(११) ता० २२ से २६ मार्च सन् १९७१ ई० ता. २२ को गुरु वक्री होनेसे पीले पदार्थ हल्दी जटामांशी तगर मोम सेंधा नमक बेलसे उत्पन्न होने वाली चीजें सरसों गेहूँ जौ और पशुओंमें घोड़ा गायमें तेजी आयेगी । ता. २३ को पूफामें बुध होनेसे गेहूँ जौ चना मटर अरहर ज्वार बाजरा मक्का गुड़ खांड शक्कर आदिमें मंदी आयेगी, ता. २४ को कुंभमें शुक्र होनेसे गेहूँ जौ चना उरद मूंग ज्वार बाजरा आदि में मंदी आयेगी, क्योंकि उससे पहला ग्रह भी मन्दीका है और यह ग्रह भी मन्दीका लगा इसलिए यह नोट है कि जिस वस्तुके नीचे भाव औस हो जायेंगे उनमें जोरदार मंदी उतने पर्सेंटकी आ जायेगी । ता० २४ की बनी लाइन ही ता. २५ तक बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी । ता. २६ को अश्वि. मेषे च बुधः होनेसे सोना चांदी आदि धातु, मूंगा जवाहिरात गेहूँ जौ चना आदि में तेजी, रसादि पदार्थ गुड़ खांड तेल तिल सरसों अलसी अरंडा घृत रुई कपास आदि में मन्दी आयेगी ।

(१२) ता. २७ मार्च से ३ अप्रैल १९७१— ता. २८ मार्चको चन्द्रदर्शन होनेसे गुड़खांड शक्कर आदि में मंदी तथा अलसी सरसों मूंगफली अरंडा सींगदाना बिनौला आदिमें तेजी आयेगी । ता. २९ को शत.शुक्र होनेसे रुई कपास वस्त्र सूत सन चावल गुड़ खांड शक्कर घृत तेल तिल सरसों अलसी बिनौला मूंगफली सींगदाना सोना चांदी आदि धातुओंमें तेजी आयेगी । ता. २९ की बनी लाइन ता. ३० तक समस्त व्यापारिक वस्तुओंमें बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी । ता. ३१ को कृत्तिका १ शनि होनेसे सोना चांदी तांबा पीतल आदि धातु तथा गेहूँ जौ चना मटर ज्वार बाजरा मक्का आदि अनाजोंमें तेजी आयेगी । ता. ३१ मार्चको बनी लाइन ता. ३ अप्रैल तक समस्त व्यापारिक वस्तुओंमें ज्यों की त्यों चलती रहेगी ।

(१३) ता. ४ से १० अप्रैल सन् १९७१ ई० – ता. ३ की बनी लाइन ता. ७ तक समस्त व्यापारिक वस्तुओंमें बदस्तूर बिना रियक्शन ज्यों की त्यों चलती रहेगी । ता. ८ को बुध वक्री होनेसे गुड़ खांड शक्कर आदि में तेजी व धान्यादि में मंदी आयेगी । आज ही पूर्वाभाद्रपदमें शुक्र होनेसे रुई कपास सूत सन वस्त्रादिमें तेजी व समस्त धान्यादिमें मंदी आयेगी । ता. ८ की बनी लाइन ता. १० तक गुड़ खांड शक्कर गेहूँ जौ चना मटर अरहर उरद मूंग मोठ मक्का ज्वार बाजरा आदि समस्त व्यापारिक वस्तुओंमें बदस्तूर ज्यों की त्यों चलती रहेगी ।

संक्षिप्त त्रैमासिक राशिफल

माघ फाल्गुन चैत्र सँ० २०२८ वि०

(ता. १२ जनवरी से १० अप्रैल १९७० तक)

मेष

माघसे फागुन शु. ५ दि. १ मार्च तक राशि-स्वामी मंगल अष्टम रहेगा, गुरु भी साथ है और मेष में शनि चल रहा है अतः मेष राशिके लिए यह मास अपव्यय, मानसिक चिन्ता, विवाद, और स्वतः या पारिवारिकजनोंके स्वास्थ्यमें चिन्ताकारक है। व्यय विशेष होगा। यात्रा भी होगी। जिनकी जन्मकुण्डलीमें मंगल शनि दूषित होंगे वे दुर्घटना ग्रस्त हो सकते हैं। २२-२३-३०-३१ जनवरी अशुभ दिन हैं। १ मार्चसे १० अप्रैल तकका समय साधारण बीतेगा। नवीन प्रेम सम्बन्ध स्थापित होगा। आयसे व्यय अधिक होगा। महिलाओंके लिए मध्यम हैं। विद्यार्थियों को परिश्रम भरपूर करने पर ही सफलता मिलेगी।

वृष

माघ फाल्गुनमें २८ फरवरी तक स्वास्थ्य, व्यापार धन्धा उत्तम रहेगा, स्त्रीको पीड़ा होगी, व्यय बढ़ेगा यात्रा होगी। फरवरी मार्चमें रोजगार धन्धोंमें लाभ होगा, प्रतिष्ठा बढ़ेगी। राज्यमें विजय और रुके काम बनेंगे। मांगलिक कार्य में सम्मिलन। २४-२५ जनवरी और १-२-३-२०-२१-२२ फरवरी एवं १-२ मार्च अशुभ दिन हैं। १ मार्चसे १ अप्रैल तक समय सामान्य रहेगा।

मिथुन

माघमें ३० जनवरी तक शारीरिक मानसिक श्रम अधिक करना पड़ेगा। उद्योग व्यवसाय मध्यम, तीर्थयात्रा, फरवरी मार्चमें काम धन्धा कमजोर, अनेक बाधाएं उपस्थित होंगी। परिवार में किसीकी बिमारी या मृत्यु। नवीन स्नेह-सम्बन्ध स्थापित होगा। फाल्गुन चैत्रमें मालिक या उच्चाधिकारीसे झड़प होगी। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। १७-१८-१९-२६-२७ जनवरी, ४-५ १३-१४-१५-२३-२४ फरवरी, ३-४-१४-२२-२३-३०-३१ मार्च चिन्तामय और अधिक व्यय-कारक दिन हैं।

कर्क

माघ फाल्गुन मासमें २० फरवरी तक अनेक उलझनें पैदा होंगी। स्त्रीसुखमें बाधा, लाभ मध्यम, यात्रामें कष्ट, व्यय विशेष। मार्च अप्रैलमें आर्थिक स्थिति सुधार पर होगी। बिगड़े काम बनेंगे। पत्नीसे अकारण क्लेश होगा। विद्यार्थियों और महिलाओंके लिए तीनों मास उत्तम फल-दायक हैं। जनवरी २०-२१-२८-२९, फरवरी ६-७-१६-१७-२५-२६, मार्च ५-६-१५-१६-१७-२४-२५ और अप्रैलकी ४-५ तारीखें अशान्ति, अपव्यय, चिन्ताकारक हैं।

सिंह

माघ फाल्गुनमें २८ फरवरी तक स्वास्थ्य निर्बल रहेगा। उदर विकार अपचन वात व्याधिसे सावधान रहें। फरवरी मार्चमें आर्थिक तंगी और स्वजनोंसे विरोध होगा। स्त्री सुख मध्यम। रोजगार धन्धा ठीक चलेगा। मकान मालिक या। किरायेदारसे झगड़ा होगा। राज्यपक्ष प्रबल है यात्रा होगी। धार्मिक सामाजिक संगठनोंमें, यश मिलेगा। जनवरी १२-१३-२२-२३-३०-३१

फरवरी ८-९-१०-१८-१९-२०-२७-२८ और मार्च की ८-९-१८-१९-२६-२७ तारीखें अशोभनीय हैं।

कन्या

माघ मास सामान्य है, अष्टम शनि स्वयं या पत्नीको वायु विकार करेगा। किसी स्वजनसे क्लेश होगा। इन तीन मासोंमें खर्च भले ही अधिक हो, किन्तु अपना काम सिद्ध कर लेंगे। काम धन्धा ठीक रहेगा। मार्च अप्रैलमें पराक्रममें वृद्धि होगी। छोटी मोटी यात्रा। पत्नी व सन्तान से क्लेश। जनवरी १५-१६-२४-२५, फरवरी १-२-३-११-१२-२२ और मार्चकी १-२-१०-११ १२-२०-२१-२८-२९ तारीखें अशोभनीय हैं।

तुला

माघ मासमें स्त्री पुत्रादि सुख उत्तम, स्वास्थ्य निर्बल, उदर विकार वात व्याधिसे कष्ट। फाल्गुन चैत्रमें मिश्रित फल होंगे। कभी उत्तम कभी नेष्ट। घर गृहस्थीके झंझटोंसे मन अशान्त रहेगा। किसी प्रियजनका वियोग होगा। राजकीय सेवामें स्थानान्तर सम्भव है। कोई गुप्त शत्रुता करेगा। जनवरी १७-१८-१९-२६-२७, फरवरी ४-५-१३-१४-१५-२३-२४ और मार्चकी ३-४-१३-१४-२२-२३-३०-३१ तारीखें अशोभनीय हैं।

वृश्चिक

माघ फाल्गुन मासमें २८ फरवरी तक विशेष अनुकूल समय है। स्वास्थ्य और पराक्रममें वृद्धि, शासक वर्ग अधिकारी या किसी क्षत्रिय जातिके मित्रसे सहयोग मिलेगा। बिगड़े काम सुधरेंगे। शत्रु परास्त होंगे। सामाजिक कार्योंमें यश मिलेगा। मार्च अप्रैल सामान्य फलकारक हैं। तीर्थ यात्रा और मित्र-मिलाप होगा। कार्य-क्षमता बढ़ेगी। महिलाओं और विद्यार्थियोंके लिए ये तीन मास प्रगतिकारक हैं। जनवरी २८-२९, फरवरी ६-७-१६-१७-२५-२६ और मार्चकी ५-६-१५-१६ तारीखें अशोभनीय हैं।

धनुः

माघ फाल्गुन मासमें २८ फरवरी तक लाभ, साधारण और व्यय विशेष होगा। शत्रु प्रबल होकर परास्त होंगे। सन्तानकी ओरसे चिन्ता रहेगी। मार्च अप्रैलमें प्रभाव बढ़ेगा। धन व्यय सिद्धिदायक होगा। चैत्रमें रक्त-विकार या चोट लगनेकी सम्भावना है। किसी स्वजनसे क्लेश होगा। विद्यार्थियोंके लिए फाल्गुन चैत्र मास प्रतिकूल हैं अतः पढ़ाईमें पूरा ध्यान देवें। जनवरी २२-२३-३०-३१, फरवरी ८-९-१०-१८-१९-२७-२८ और मार्चकी ८-९-१८-१९-२६-२७ तारीखें अशोभनीय हैं।

मकर

माघ फाल्गुन मासमें २८ फरवरी तक उद्योग व्यवसायमें उन्नति, कार्यमें यश, समाजमें प्रतिष्ठा बढ़ेगी, यात्रा भी होगी। स्त्री और सन्तानकी ओरसे कुछ चिन्ता रहेगी। राजकर्मचारियोंका पदोन्नतिके साथ स्थानान्तर सम्भव है। मार्च अप्रैलमें शुभ कार्योंमें धन व्यय होगा। व्यवसायमें उन्नति। मासान्तमें कोई अप्रिय समाचार मिलेगा। स्त्री पक्षसे कष्ट होगा। जनवरी १५-१६-२४-२५, फरवरी २-३-११-१२-२१-२२ और मार्चकी १-२-१०-११-२०-२१-२८-२९ तारीखें अशोभनीय हैं।

कुम्भ

कुम्भ राशिके लिए ये तीनों मास प्रगतिकारक हैं। राजकर्मचारियोंकी उन्नति होगी। व्यापारियों को व्यवसायमें लाभ होगा। उद्योग धन्धे अच्छे चलेंगे। मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लग्नमें राहु वायु विकार और स्त्री कष्टकारक है। स्वास्थ्य कुछ

निर्बल रहेगा। कोई अधिकारी या मित्र विश्वासघात करेगा। मार्च अप्रैलमें खर्च बहुत होगा। किसी मांगलिककार्य और स्वजनकी बिमारीकेलिए यात्रा होगी। साहस बढ़ेगा, महिलाओं और विद्यार्थियोंके लिए समय अनुकूल है। जनवरी १७-१८-२६-२७, फरवरी ४-५-१३-१४-१५-२३-२४ और मार्चकी ३-४-१३-१४-२२-२३-३०-३१ तारीखें अशोभनीय हैं।

मीन

गतवर्षसे जो काम रुके हुए हैं और पिछले १३ महीनोंमें जो विघ्न वाधाएं उपस्थित हुई वे सब अब समाप्त होंगी। साहस बढ़ेगा। परिश्रमका फल मिलेगा। रोजगार धन्धेमें लाभ होगा। राजपक्षमें सम्मान और राजकर्मचारियों की पदोन्नति होगी। स्थानान्तर एवं यात्राका योग भी है। धनभावमें शनि और व्ययमें राहु खर्च बहुत करावेगा। परन्तु, खर्च मांगलिक कार्य विवाहादि उत्सवों और जमीन जायदाद मकान बनाने तथा वाहनों पर होगा। १ मार्चके आगेका समय विशेष अनुकूल रहेगा। १५ मार्चसे १० अप्रैल तक स्वास्थ्य निर्बल रहेगा। रक्तप्रकोप उदर वात व्याधिसे कष्ट सम्भव है। जनवरी १९-२०-२१-२८-२९, फरवरी ६-७-१३-१७-२५-२६ और मार्चकी ५-६-१५-१६-२४-२५ तारीखें अशोभनीय हैं।

(पृष्ठ १६ का शेष)

कारखानोंमें भयंकर गतिरोध हड़ताल आदि उत्पात होंगे। चतुर्थभाव में मंगल और गुरु शुक्र परस्पर विरोधी है, अतः रूस अमेरिका इंगलैण्ड आदि कोई भी भारतके वास्तविक मित्र नहीं रहेंगे। केवल दिखावटी मित्रता होगी। इस चतुर्थ मंगलके कारण इस वर्षमें चतुर्थ माससे आगे विशेषकर मंगल राहु योगमें वैशाखसे कार्तिक तक भारतमें अन्तःकलह, विद्रोह, उत्पात और शत्रु आक्रमणका भय अधिक है, अतः इस अवधिमें भारतको पूर्ण सावधान रहना चाहिए। लोक-सभा विधान सभाओंमें अभूतपूर्व हंगामे और राष्ट्रमें अनेक अकल्पित दुःखद घटनाएँ घटेंगी।

गृहमन्त्री को भारी सङ्कटका सामना करना पड़ेगा। प्रान्तीय मन्त्री-मण्डलोंमें फूट प्रतिस्पर्द्धा और दलबदलका रोग केन्द्रके लिए भारी सिर दर्द होगा। वैसे तो इस गणतन्त्र वर्ष के आरम्भसे ही (२६ जनवरीसे) राजनैतिक सङ्कट उग्र बनता जावेगा। रक्ताक्षी संवत्सर आरंभ होगा अतः फरवरी मार्चमें केन्द्र और अनेक प्रान्तीय सरकारों पर भारी आपत्ति आवेगी। अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत होंगे। शासन वर्गका प्रभाव प्रजा पर कम होगा। मन्त्रि-मण्डलोंमें परिवर्तन सम्भव होगा। पंचममें द्विस्वभाव राशिमें बुध, शनि दृष्ट होनेसे राष्ट्रनायकोंका विवेक सन्तुलित न रह कर द्वेषपूर्ण बनेगा। छात्रोंमें असन्तोष बढ़ेगा। शिक्षा संस्थाओंमें अवाञ्छनीय काण्ड होंगे। षष्ठेश शनि नवम मंगलके घरमें है, छठे स्थानमें सूर्यचन्द्र, अतः दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। खेती जमीन नहरी-पानी विवाद उग्र बनेंगे। निष्कर्ष यह है कि इस वर्ष फरवरी मार्च अप्रेल और जून जुलाई अगस्त मास राष्ट्रके लिए विशेष घटना कारक हैं। जून मासमें शनिका गुरु और नेपच्यूनसे प्रतियोग होगा, यह कहीं भयंकर प्रकृति-प्रकोप भूकम्पादि दुर्घटनासे और कहीं राजनैतिक भूकम्प मन्त्रि-मण्डल पतनसे चिन्ता व्यापेगी। वै०शु० ४ दि० २८ अप्रेल १९७१ को शनि वृषभ राशिमें प्रवेश करेगा यह भी प्रजामें विग्रह, अशान्त वातावरण बनाने वाला है—पश्चिमोत्तरीय सीमा सङ्कट ग्रस्त होंगी, सीमा-प्रान्त पंजाब हरियाणा मैसूर महाराष्ट्र बंगाल असममें हिंसक उदद्रव होंगे।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

जनवरी १९७१ ई०

ता. ११ सोमवार–पौषी पूर्णिमा सत्यव्रत माघ-स्नानारम्भ।
१३ बुधवार–लोहड़ी उत्सव (पंजाबियोंका)।
१४ गुरुवार–मकर संक्रान्ति पुण्यकाल, गंगा सागर यात्रा।
१५ शुक्रवार–संकटहारिणी श्रीगणेश चौथव्रत चंद्रोदय रात्रि स्टे.टा. ९।१७।
१७ मंगलवार–श्री स्वामी विवेकानन्द जयन्ती
२३ शनिवार–षट्तिला एकादशीव्रत, नेताजी श्री सुभाष चन्द्र वसु जयन्ती।
२४ रविवार–प्रदोषव्रत।
२५ सोमवार–मेरुत्रयोदशी (जैनियोंकी)।
२६ मंगलवार– भारतीय गणराज्य महोत्सव, मौनी अमावस, अर्धकुम्भ प्रयाग मेला, श्रीआदिनाथ जयन्ती।
२८ गुरुवार–चन्द्रदर्शन ला० लाजपतराय ज.
३० शनिवार–महात्मा गांधी निधनदिवस।
३१ रविवार–वसन्त पंचमी श्री ५।

फरवरी १९७१ ई०

ता. २ मंगलवार–भीष्माष्टमी।
५ शुक्रवार–जया एकादशीव्रत स्मार्त्तगृहस्थों.
६ शनिवार–एकादशीव्रत्त वैष्णवोंका।
७ रविवार–प्रदोषव्रत, ईदुलजुहा (बकरीद)।
९ मंगलवार–सत्यव्रत, रथयात्रा जैनपर्व।
१० बुधवार–माघी पूर्णिमा, श्रीरविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्ति।
१२ शुक्रवार–कुम्भमें सूर्य संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल अगले दिन।
१४ रविवार–श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय रात्रि स्टे. टा. ९।४९
१६ शुक्रवार–समर्थ श्रीरामदास नवमी।
२१ रविवार–विजया एकादशीव्रत स्मार्त्तोंका।
२२ सोमवार–एकादशीव्रत वैष्णवों का।
२३ मंगलवार– भौमप्रदोषव्रत श्रीमहाशिव-रात्रिव्रत (अर्धरात्रव्यापिनी चतुर्दशी)
२४ बुधवार–मेला शिवचतुर्दशी।
२५ गुरुवार–अमावस्या।
२६ शुक्रवार–चन्द्रदर्शन मु० ३०
२७ शनिवार–श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती।

मार्च १९७१ ई०

ता. ७ रविवार–आमला एकादशीव्रत।
८ सोमवार–ताजिया मुहर्रम।
९ मंगलवार–भौमप्रदोषव्रत।
११ गुरुवार–होलिका दहन रात्रि स्टे. टा. ६।३९ उप. सत्यव्रत, हुताशनी।
१२ शुक्रवार–धुलैंडी धूलिवन्दन।
१३ शनिवार–होला १ वसन्तोत्सव आम्र-कलिका प्राशन, मेला आनन्दपुरसाहब पंजाब
१४ रविवार–मीनमें सूर्यसंक्रान्ति मु० ३०।
१५ सोमवार–श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय रात्रि स्टे. टा. ९।३६
१७ बुधवार–रंग पंचमी।
१९ शुक्रवार–शीतला सप्तमी।
२१ रविवार–सायनमेषमें सूर्य महाविषुवदिन।
२३ मंगलवार–पापमोचनी एकादशीव्रत।
२४ बुधवार–प्रदोषव्रत।
२५ गुरुवार–मेला पृथूदक (पिहोवा कुरुक्षेत्र)
२६ शुक्रवार–अमावस्या।
२७ शनिवार–वासन्ती नवरात्रारम्भ श्री-गौतमजयन्ती, चान्द्रसँव्वत्सरारम्म।
२९ सोमवार–श्रीगणगौरी ३ पूजन, मत्स्य ज.
३१ बुधवार–स्कन्दषष्ठी।

अप्रैल १९७१ ई०

ता. ३ शनिवार–श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीरामनवमीव्रत मेला श्री मनसादेवी, तारा जयन्ती।
६ मंगलवार–कामदा एकादशीव्रत।
८ गुरुवार–प्रदोषव्रत अनङ्ग १३ जैन महावीर जयन्ती।
९ शुक्रवार–गुड फ्रायडे।
१० शनिवार–चैत्रीपूर्णिमा, सत्यव्रत, सिद्धा-चल यात्रा।

बम्बई और महाराष्ट्रके पाठकोंको शुभ सन्देश

अ०भा० गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभाका १८वां महा अधिवेशन इसी दिसम्बर मासके अन्तमें दि० ३०-३१ बुध गुरुवारको बम्बईमें हो रहा है। इसका उद्घाटन श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १००८ जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी महाराज संकेश्वर करवीरमठ करेंगे और सभापतित्व नव-निर्वाचित अध्यक्ष पूनाके सुप्रसिद्ध विद्वान् दानवीर श्री चम्पालालजी चाष्टवे करेंगे। स्वजातिके सभी गण्यमान्य सज्जन एवं महासभाके सदस्य बम्बई पधारेंगे। महिला-सम्मेलन, युवक-सम्मेलन, कवि-सम्मेलन, अ०भा० ब्राह्मण सम्मेलन और मनोरंजक सांस्कृतिक कार्य-क्रम भी रक्खा गया है, अतः यह अधिवेशन महासभाके इतिहासमें अभूतपूर्व होगा।

महासभाके वर्तमान अध्यक्ष श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी २९ दिसम्बरको सायंकाल बम्बई पहुंच रहे हैं। पूज्या माताजी (श्रीमती त्रिवेदी) भी साथ होंगी। २८ दिसम्बर सायंकाल ४ बजे दिल्लीसे पश्चिम एक्सप्रेस शयन कक्षमें आपकी दोनों शीटें रिजर्व करा ली गई हैं। मरुभूमि सेवासंघके अध्यक्ष वैद्यराज श्री हीरालालजी शास्त्री, महासभाकी उपाध्यक्षा श्रीमती दया शर्मा जी एम. ए. और अर्थमंत्री श्री रघुनाथ प्रसादजी शर्मा आदि सज्जन भी संभवतः इसी गाड़ीसे श्री त्रिवेदीजीके साथ बम्बई पहुंचेंगे। महाराष्ट्रमें 'ज्योतिष्मती' और 'श्रीविश्वविजय-पंचांग'के अनेक पाठक त्रिवेदीजीके श्रद्धालु हैं--उनका विशेष अनुरोध होनेसे आप पूना नाशिक मालेगांव जालना आदि नगरोंमें भी पधारेंगे, अतः स्थानीय सज्जनोंको आपसे मिलनेका सुअवसर प्राप्त हो सकेगा।

निवेदक :—
प्रेमचन्द शर्मा

उपव्यवस्थापक, ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन हिमाचलप्रदेश

आजीवन, दशवर्षीय और पंचवर्षीय-सदस्योंका विशेष लाभ

१०१) रु० भेजकर आजीवन सदस्य बनने वाले सज्जनोंको जीवन पर्यन्त 'ज्योतिष्मती' बराबर पहुंचती रहेगी। वार्षिक मूल्य चाहे कितना ही बढ़ जावे, उन्हें कभी कुछ नहीं देना पड़ेगा। साथ ही आयुर्वेद कामशास्त्रका अद्भुत ग्रंथ 'केलिकुतहल' एवं 'क्षयरोग और उसकी चिकित्सा' नामक सचित्र ग्रन्थ दश रुपये मूल्यके और ज्योतिष्मतीके दश गताङ्क २०) रु० मूल्यके कुल ३०) रु० का साहित्य केवल ५) रु० डाक रजिस्ट्री खर्च अधिक भेजने पर बिना मूल्य प्राप्त हो सकेगा।

७०) रु० भेजने वाले दशवर्षीय सदस्योंको उक्त दोनों ग्रन्थ और 'ज्योतिष्मती' के गत दो वर्षोंके ८ अङ्क १६) रु० मूल्यके कुल २६ रु० का साहित्य डाक रजिस्ट्री खर्चके लिए ५) रु० अधिक (कुल ७५ रुपये) भेजने पर निःशुल्क प्राप्त हो सकेगा।

३५) रु० भेजने वाले पंचवर्षीय सदस्योंको 'केलिकुतूहल' और ज्योतिष्मतीके पांच गताङ्क कुल १५) रु० का साहित्य डाक रजिस्ट्री खर्च ५) रु० अधिक अर्थात् ४०) रु० भेजने पर बिना मूल्य प्राप्त हो सकेगा।

'केलिकुतूहल' और 'क्षयरोग चिकित्सा' नामक अद्भुत ग्रन्थकी अब बहुत थोड़ी प्रतियां शेष रही हैं, शीघ्र सदस्य बनने वालोंको ही यह लाभ प्राप्त हो सकेगा।

व्यवस्थापक—ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल-प्रदेश)

प्रेस की भूल

सं० २०२८ के 'श्री विश्वविजयपंचांग' में पृष्ठ २ के दूसरे कालममें "घटी पलोंके स्थानमें स्टेण्डर्ड घण्टा-मिनट" शीर्षकके नीचे पहली पंक्तिमें 'जलवाड़ा' की जगह 'जलघड़ी' शुद्ध है। और १३वीं पंक्तिमें ९७ पलकी जगह ५७ पल एवं स्टे.टा. २५।३६ की जगह २५।३९ शुद्ध है। इसी प्रकार १६वीं पंक्तिमें २६।१७ के स्थानमें २९।१७ शुद्ध है। इसी कालममें कई जगह 'पंचाङ्ग' के स्थानमें 'पंचांक' अशुद्ध छप गया है, पाठक शुद्ध कर लें।

—सम्पादक।

अखिल भारतीय गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभाके नवनिर्वाचित अध्यक्ष

श्री चम्पालालजी चाष्टवेका

हार्दिक अभिनन्दन

'ज्योतिष्मती' के पाठकोंको यह विदित ही है कि गत १½ वर्ष पूर्व अ०भा० गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभाके अध्यक्षपदका गुरुत्तर भार इन पंक्तियोंके लेखकको सौंपा गया था। और समय-समय पर कार्यकी व्यस्ततासे प्रकाशन एवं पत्राचारमें भी कुछ विषमता आई थी।

प्रस्तुत वर्षमें सर्वसम्मतिसे अध्यक्षपदके लिये पूना निवासी श्रीयुत चम्पालालजी चाष्टवेका गुर्जरगौड़जाति बन्धुओंने चयन किया है, यह प्रसन्नताकी बात है।

श्री चाष्टवेके पूर्वज मूलतः राजस्थान प्रान्तके 'बाली' नगरके निवासी हैं, किन्तु आपका जन्म नाशिक जिलेके अगुर नामक स्थान पर हुआ। आप विद्या और लक्ष्मी दोनोंके कृपापात्र हैं, तथा सामाजिक जीवनमें सदा सहयोगी रहे हैं। व्यापक कार्यकलापके रहते हुए भी आप सरल, शान्त मृदुभाषी व धार्मिक वृत्तिसे सर्वसाधारणके आत्मीय बने हुए हैं।

यह और भी आनन्दका विषय है कि आपकी अध्यक्षतामें महासभाका १८वाँ अधिवेशन भारतकी महानगरी बम्बईमें आगामी ३०-३१ दिसम्बर १९७० को होने जा रहा है।

महसभाने विगत वर्षोंमें बहुत कुछ किया है, देशके विभिन्न भागोंमें बिखरे जातीय सज्जनों को एक मञ्च पर लानेका प्रयास किया है और अपने दूरदेशस्थ जातीय बन्धुओंसे परिचित कराकर वर्तमानके प्रति सजग किया है। किन्तु एक अन्य दृष्टिमें कुछ खोया भी है, जिसका दोष किसी व्यक्तिविशेषको न देकर हम समय और परिस्थितिको ही देना चाहेंगे। और 'गतं न शोचामि' वाली उक्तिको ध्यानमें रखकर जगदम्बासे प्रार्थना करते हैं कि वह समस्त ब्राह्मण समाजका उत्तरोत्तर विकास करे तथा सभी ब्रह्मवर्चस्से पूर्ण होकर जनकल्याणमें रत हों।

श्री गंगाविशनजी जोशीका अभिनन्दन

गत नवम्बर मासमें राजस्थानके सभी प्रमुख नगरोंमें नगरपालिकाके चुनाव सम्पन्न हुए। प्रमुख व्यापारिक नगर ब्यावरमें नगर-परिषदके पार्षदों और अध्यक्षके चुनावमें भारी संघर्ष एवं प्रतिद्वन्द्विता थी। ब्यावर नगरके सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं जनप्रिय कर्मठ-नेता श्री गंगाविशनजी जोशी अभूतपूर्व भारी बहुमतसे नगर-पार्षद चुने गये और अध्यक्षपदके लिए भी आप ही विजयी हुए। यह जोशीजीकी निष्काम सेवा निष्पक्ष नीति, एवं कर्तव्यनिष्ठाकी विजय है। जोशीजी राजस्थान प्रान्तीय गुर्जरगौड़ सभाके अध्यक्ष हैं, अतः समस्त गुर्जरगौड़ समाज भी आपकी विजयसे गौरवान्वित हुआ है। गत १५ नवम्बरको ब्यावर नगरमें आपका भव्य नागरिक अभिनन्दन हुआ उसमें महासभाके नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री चम्पालालजी चाष्टवे और इन पंक्तियोंका लेखक भी उपस्थित था। हम प्रभुसे प्रार्थना करते हैं कि श्री जोशीजी ब्यावरकी सर्वतोमुखी प्रगतिमें सहायक होकर अन्य नगर पालिकाध्यक्षोंके सम्मुख आदर्श उपस्थित कर सके। — हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सरल ज्योतिष परिचय

ज्योतिष के सम्बन्ध में प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। ज्योतिष सम्बंधी श्रेष्ठ साहित्य का परिचय भी इससे प्राप्त होगा। अनेकों चित्र, मू० डेढ़ रु० 1/50 M.O. भेजकर पुस्तक मंगालें।

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६,

आपका हाथ

—ले० राजेश दीक्षित—

आपके हाथ की रेखाओं में कुदरत ने आपके जीवन भर का हाल भर दिया है। आप हमारी पुस्तक की सहायता से अपने, अपने परिचितों मित्रों व सम्बन्धियों के हाथ देख कर उनकी नौकरी, मुक़दमा, शारीरिक क्लेश, बीमारी, व्यापार, सन्तान, विवाह, विदेश यात्रा, शिक्षा आयु, लाभ-हानि, उन्नति, तबादला, नया मेल मिलाप, गुप्त-धन आदि बातें ठीक ठीक बता सकते हैं। चित्र १२८, पृ० ३२८, सफ़ेद कागज़, क्लाथ बाइन्डिंग, मू० 10/50 (साढ़े दस रु०)

देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६.

आपके जीवन पर रत्नों का प्रभाव

खानों से निकाले हुए रत्न नीलम, हीरे मोती, पुखराज इत्यादि सुन्दर व आकर्षक होने के कारण आपके शरीर की शोभा तो बढ़ाते ही हैं, लेकिन साथ ही साथ इनमें से बृह्माण्ड किरणें (COSMIC RAYS) निकलती हैं जो आपको स्वस्थ और उत्साहित रखती हैं, तथा आपके जीवन को सुखी और सौभाग्यशाली बनाती हैं।

हमारी सचित्र पुस्तक में बताया गया है कि किस दिन अथवा किस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति को कौनसा रत्न धारण करना चाहिये, जिससे वह समृद्धशाली बन सकें तथा मन इच्छित फल प्राप्त कर सकें। मू० 15/रु०

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६



दुनिया में असम्भव कुछ नहीं मनुष्य जो चाहे कर सकता है।

असली प्राचीन हस्तलिखित पुराना



इन्द्रजाल

(मूल लेखक: राम स्नेही)

अगर आज तक आपको असली इन्द्र जाल की किताब नहीं मिली तो आप हमारे यहां से असली और पुराने छापे की किताब मंगावें, जिसमें भैरों, काली, दुर्गा देवी तथा हनुमान, सबके मंत्र क्षण मात्र में ही सिद्धि प्रदान करने वाले दिये गये हैं। इसके अलावा वशीकरण विद्या के तन्त्र मन्त्रों को सिद्ध करना, चाहे जिस स्त्री पुरुष को अपने वशीभूत कर उससे मन चाहा काम लो, और यक्षणी साधन, भूत विद्या इत्यादि बातों का सविस्तार वर्णन है यंत्र, मंत्र, तंत्रों को सिद्ध करने की पूर्ण क्रिया लिखी गई है। सिद्धि कार्य कर्ता पर निर्भर है। Rs. 15





देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6.

फलित ज्योतिष विद्या का अपूर्व ग्रंथ

भृगुसंहिता फलित प्रकाश

ले० राजेश दीक्षित 31/= रु०

इस एक ही पुस्तक की सहायता से संसार के प्रत्येक स्त्रीपुरुष की जन्म कुण्डलियों के फलादेश की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कौनसा ग्रह किस राशि तथा किस भाव में बैठकर क्या फल देता है? किस ग्रह की किस भाव पर कौनसी दृष्टि पड़ती है? दो, तीन चार तथा अधिक ग्रह एक ही भाव पर बैठे हों तो उनका क्या फल होता है? आदि विषयों के अतिरिक्त ग्रहों की महादशा का फलादेश तथा जन्म कुण्डली देखने सम्बन्धी ऐसी अनेक आवश्यक जानकारियां इस पुस्तक में दी गयी हैं जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलतीं। इस पुस्तक की सहायता से मामूली हिन्दी पढ़ा लिखा व्यक्ति भी जन्म कुण्डलियों के फलादेश को जान सकता है तथा ग़लत बनी हुई कुण्डली को ठीक कर सकता है। 1600 से अधिक कुण्डलियों सहित सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक बड़े साइज़ के एक हज़ार से अधिक पृष्ठ,

आपका भविष्य:- क्या आपका भविष्य उज्जवल रहेगा? जीवन में होने वाली विशेष घटनाओं का पहले से ही उपाय करलें। घर में रखने योग्य अमूल्य पुस्तक, मू० 8/25

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

It's love at first sip!



Gold Coin
Real
APPLE JUICE

Made from the finest apples, Gold Coin is a delightful, nutritious drink-to keep you cool and refreshed always. Once tasted always wanted.

MOHUN'S
Ginger Tonic

A wonder beverage that gives you the appetite to eat heartily and aids digestion. A quick and sure remedy for stomach disorders.



Mohan Meakin Breweries Ltd.

ESTD. 1855

Mohan Nagar (Ghaziabad) U.P.

JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N.,4941/57

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा वि कुमार प्रिंटिंग प्रेस सोलन में छपकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि.प्र.) से प्रकाशित